37

किसानों का भगीरथ

युधिष्ठिर दास*

जिन्दगी की पगडंडियों पर चलते-चलते कई लोग थक जाते हैं। उनका चलना धीमा हो सकता है, परन्तु "किसानों का भगीरथ" चौधरी चरण सिंह आखिरी दम तक न थके थे, न उनके कार्यों में कोई रुकावट आयी थी।

मैं उनको भगीरथ इसलिए कहना उचित समझता हूं कि भारत किसानों का देश है। इनकी संख्या सर्वाधिक है। परन्तु सगर वंश की तरह अधिक होने पर भी सुख उनके जीवन में कभी नसीब नहीं हुआ। आज की राजनीति की घुड़दौड़ में कोई उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता। केवल महात्मा गांधी ने सही रूप से महसूस किया था कि किसानों की उन्नति के बिना भारत की प्रगति सम्भव नहीं है। उनकी इस बात को पाथेय बनाकर इसको सही रूप दिया था "भगीरथ चौधरी चरण सिंह" ने। गांधी के इस स्वप्न को साकार करने के लिए उन्होंने अनेक आक्षेप सहे, अनेक आलोचनाओं के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। किसानों के मुख पर हंसी देखने के लिए ही सन् 1952 में जब आप उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री बने, तब उन्होंने जो महत्वपूर्ण कार्य किये, उनमें एक था "जमींदारी उन्मूलन" विधेयक लागू कराना तथा दूसरा-1953 में "चकबन्दी कानून" पारित कराना।

देश में अंग्रेजी शासन के दौरान जो सुविधावादी लोग ऊंचे-ऊंचे पदों पर जमकर बैठ गये थे, उन्होंने आजादी के बाद अपने बुद्धि कौशल से भारत की बागडोर अपने हाथ में ले ली। नतीजा यह हुआ कि आम लोगों को आर्थिक आजादी तो मिली ही नहीं, बल्कि राजनैतिक आजादी भी चन्द सुविधावादियों की मुट्ठी में सिमट कर रह गयी। ग्राम स्वराज का जो स्वप्न बापू ने देखा था, उसको साकार करने का बीड़ा उठाया था चौधरी चरण सिंह ने। उत्तर प्रदेश और देश के किसानों के लिए उन्होंने जो कुछ किया, आने वाली पीढ़ियों में ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल है।

---

* उड़ीसा विधान सभा के अध्यक्ष

देश के दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि महानगरों की चका चौंध देखकर कोई भी विदेशी यह सहज अंदाजा लगा सकता है कि इस देश में गरीबी कहीं नहीं है परन्तु सच्चाई इससे कोसों दूर है। जिन लोगों ने इस वास्तविकता को हृदयंगम करके समानता को प्रमुखता दी, उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम सर्वोपरि है। कैसी विडम्बना है कि जिस देश में गांव के किसान की अपनी झोंपड़ी पर फूस डालने की सामर्थ्य नहीं, उसमें नगरों-महानगरों में पांच सितारा होटलों और बहुमंजिली इमारतों के निर्माण को सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह दिखावा नहीं तो और क्या है?

असलियत में देश की आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा होने के बाद भी असंगठित रहने के कारण किसान-मजदूर समाज में पीड़ित और उपेक्षित हैं। इनके विकास और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए चौधरी चरण सिंह ने संघर्ष की जो मशाल जलाई थी, वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है। आज के समय में भारी उद्योग का विरोध कर कुटीर उद्योगों को प्रमुखता देने की बात करना हास्यास्पद लग सकती है लेकिन भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए यह कितना जरूरी है, इसका गांधी जी को भली-भांति एहसास था। इस विचार को सामने रखकर गांधी जी के अनुगामी चौधरी चरण सिंह जी ने ऐसी अर्थनीति पर बल दिया, जो कुटीर उद्योगों को प्रधानता देती थी। यही वजह रही, जिसके कारण देश के पूंजीपति, निहित स्वार्थ वाले लोग चौधरी साहब के सदैव विरोधी रहे। चौधरी साहब का कहना था कि "मैं भारी उद्योगों का विरोधी नहीं हूं लेकिन यह हमेशा ध्यान में रखने वाली बात है कि भारी उद्योग आदमी को बेकार न बना दें।"

इसमें दो राय नहीं कि किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह का नाम एक सच्चे देशभक्त के नाते देश के आर्थिक आन्दोलन के अग्रदूत के रूप में याद किया जाता रहेगा। देश का किसान-मजदूर उनके महान योगदान के लिए उन्हें कभी नहीं भूलेगा। सच्चाई यह है कि किसानों-मजदूरों के लिए चौधरी साहब का नाम प्रातः स्मरणीय है।

38

हिमालय सा अडिग और गंगा की तरह पवित्र

डा. जे. पी. सिंह*

किसी गैर-पेशेवर लेखक के लिए संस्मरण लिखना एक दुस्साध्य कार्य है। यह कार्य तब और भी कठिन हो उठता है जब ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखना हो, जिनके कदमों में वह परिवार के महज एक सदस्य की तरह अत्यंत विनयशील और श्रद्धापूरित भाव से बैठ चुका हो और कभी यह कल्पना तक न की हो कि ऐसा भी कोई समय आ सकता है, जब वह उन क्षणों की यादों को कागज पर उतार पायेगा। वैसे अगर मान लें कि यह सब उतना मुश्किल नहीं, तब भी चौधरी चरण सिंह के बहुमुखी और विलक्षण व्यक्तित्व से सम्बंधित प्रेरक घटनाएं इतनी हैं कि मन को सहसा घेर लेती हैं। इस सीधे-सादे, ईमानदार, सत्यनिष्ठ, गम्भीर, शालीन और जन-जन के चहेते जनसेवी पुरुष के जीवन का हर एक दिन, उनके व्यक्तित्व की अलग-अलग झलकियां दिखाता था और अपने तमाम समकालीनों से वह ऊंचे नजर आते थे।

वह गंगा की तरह पवित्र, हिमालय की तरह अडिग और चट्टान की तरह मजबूत थे। भारत और भारत के गांवों तथा इस तिमिराच्छन्न भूमि की निर्धन संतानों के प्रति अपनी अटूट निष्ठा से वह कभी विचलित नहीं हुए। अपने परिवार के सदस्यों के लिए वह हमेशा निकटतम होते, उनसे खुलकर बातचीत करते और हमदर्दी दिखाते। उनका हृदय हमेशा प्यार से लबालब रहता, लेकिन ऐसे प्यार के चलते ईमान के डिगने की तो बात दूर, कोई भी अनुचित कदम उठाने को वह तैयार नहीं थे। देशवासियों के पारिवारिक स्तर के एक हिस्से के रूप में ही वह अपने परिवार को देखते और चाहते थे। दिन के चौबीस घंटे वह पूरी गम्भीरता से सोचा करते और उनकी समस्याओं के हल के लिए प्रयासरत रहते। बहुमुखी व्यक्तित्व वाले ऐसे भव्य महापुरुष के बारे में अपनी व्यक्तिगत सीमाओं के प्रति मैं गहरे तौर पर सजग हूं। भारत को उन्होंने पूज्य और पवित्र मां के रूप में समझा, जिसकी खातिर बड़े से बड़ा

---

* जाने माने शल्य चिकित्सक एवं चौ. साहब के दामाद

त्याग भी उनके लिए तुच्छ था। गहरे चिंतन की लम्बी से लम्बी घड़ियां थीं और वही न्यूनतम था, जो वह देख पाते थे।

उनकी पारदर्शी मानसिक दृढ़ता का चित्रण इस घटना द्वारा किया जा सकता है। एक शाम देश के एक समृद्धिशाली परिवार का प्रतिनिधि उनसे मिलने आया और एक ब्रीफ केस वहीं छोड़ गया। पारिवारिक भेंट-मुलाकात और कुछ मेडिकल चेक-अप के लिए और दिनों की तरह उस शाम भी, जब हम लोग वहां आये तो हमारी नजर उस ब्रीफकेस पर पड़ी। हमने तब यह पूछताछ की कि वह ब्रीफकेस किसका था। इसलिए कि चौधरी साहब के सादगीपूर्ण जीवन-स्तर और उस कमरे के वातावरण का वह हिस्सा नहीं लग रहा था। उसे खोलने के लिए उनके सुरक्षा कर्मी (करतार सिंह) को जब बुलाया गया, तब पता चला कि उसमें तो नोटों की गड्डियां भरी थीं। मुलाकातियों के नामों की छानबीन से यह बात सामने आई कि वह ब्रीफकेस अमुक समृद्धिशाली व्यक्ति का था। चौधरी साहब ने बहुत ही शालीनता और संयम के साथ यह निर्देश दिया कि अगली सुबह उक्त सज्जन को बुलाया जाए और उनका ब्रीफकेस उन्हें वापस कर दिया जाए। अगली सुबह चौधरी साहब से मिलकर जब वह सज्जन निकल रहे थे, तब मैं गलियारे में था। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि वह पतझड़ के पत्ते की तरह कांप रहे थे। वह यह आश्वासन चाहते थे कि उस घटना के फलस्वरूप उन पर अनिष्ट की गाज न गिरे। यह आश्वासन उन्हें फौरन मिल गया। उन सज्जन ने बाद में मुझे बताया कि "बड़ी कोठियों" में दाखिल होने का उन्हें विस्तृत अनुभव है, लेकिन यह अनुभव तो बड़ा असामान्य रहा; क्योंकि उन्हें यह समझ कर बुलाया गया था और अपना ब्रीफकेस वापस ले जाने के लिए कहा गया था कि शायद वह भूल से उसे छोड़ गये थे। आमतौर पर जब कभी वह "बड़ी" जगहों पर जाते थे, तो निरपवाद रूप से यह सुनने को मिलता था कि उतने बड़े धनी आदमी के लिए वह रकम बहुत छोटी थी और उससे तीन-चार गुना अधिक रकम की अपेक्षा की जाती थी। प्रसंगवश यह पहला अवसर था। जब हमने 500 रुपये का नोट देखा था। कितने ही वेतनभोगी लोगों ने उस समय तक इतने रुपये के नोट नहीं देखे थे। चौधरी साहब का भोलापन इस मामले में भी विलक्षण था, क्योंकि वह अलग-अलग रकमों के नोटों की प०वान नहीं कर पाये थे।

एक सबसे गम्भीर मगर साथ ही साधारण-सा पाठ मुझे तब मिला था जब चौधरी साहब बीमार थे। उस समय चिकित्सा विशेषज्ञ भीतर से या तो आतंकित थे या असुविधा महसूस कर रहे थे। इसलिए नहीं कि वह गम्भीर रूप से बीमार थे बल्कि इसलिए कि वह एक वी. आई. पी. का इलाज कर रहे थे। एक दिन निरीक्षण का अपना काम जब मैंने पूरा कर लिया, तब चौधरी साहब ने अपनी सीधी-सादी जुबान में मुझसे कहा कि—"तुम लोग जिस तरह साधारण से साधारण रोगियों का निरीक्षण और इलाज बिना भावात्मक लगाव के करते हो, उसी तरह मेरा भी करो।

तभी तुम अपने पेशे और मरीज के साथ न्याय कर सकते हो।" उनकी इस सलाह से हम सभी चिकित्सकों का ध्यान अपने सफल और सही चिकित्सा कर्म के सीधे और संकरे पथ की ओर गया। इसने वी. आई. पी. लोगों के प्रति मेरे नजरिये को वह रूप दिया जिसमें ऊब और असुविधा की जगह सम्मान की भावना निहित थी। एक बार उन्होंने कहा था—"विमान चालक की क्षमता की परख इस बात से होती है कि विमान के संकटग्रस्त होने की स्थिति में वह कैसी प्रतिक्रियाएं दिखाता है।" अपने पेशे के बारे में बहुत ही सरल भाषा में यह सीख मैंने एक ऐसे व्यक्ति से ग्रहण की जिसकी बुद्धिमत्ता हमेशा सरल शब्दों में व्यक्त होती थी।

चौधरी चरण सिंह को अपने जीवनकाल में अच्छे और बुरे दोनों तरह के दिन देखने पड़े थे। उनकी राजनीतिक सफलताओं, पराजयों और सन् 1975 के आपातकालीन दौर के कारावास ने उनसे निपटने की उनकी क्षमता को समझने की अन्तर्दृष्टि हमें प्रदान की। उनके आसपास के और परिवार के लोग जब उनकी राजनीतिक हार या कठिनाइयों के चलते उदासी में डूबे और बुझे-बुझे से रहते, तब जैसे उन्हीं के बीच से अपने चेहरे पर प्रफुल्लता और आत्मविश्वास लिये वह प्रकट होते और नैराश्य का अंधेरा देखते-ही-देखते दूर हो जाता। उनका अदम्य उत्साह, उनका आत्मविश्वास और उनकी आशावादिता ने कठिनाइयों पर विजय पाने में निरपवाद रूप से उनकी मदद की। इस तरह की सभी कठिनाइयों पर वह भारी पड़ते थे। वह एक ऐसे 'सेनाध्यक्ष' थे जिनकी सेना उनके नजरिये और प्रशिक्षण के जरिये उत्साह प्राप्त करती रहती थी। मुजफ्फरनगर के संसदीय चुनाव में उनकी एकमात्र विफलता ने उन्हें और भी अधिक दृढ़ संकल्पी बनाया। सन् 1980 में संसदीय चुनावों के परिणाम उनकी अपेक्षाओं के विरुद्ध गये थे, लेकिन उनके नजदीकी और परिवार के जो लोग बुरे परिणामों के चलते उत्साहहीनता महसूस कर रहे थे, वे चौधरी साहब को देखते या उनसे बातें करते ही प्रसन्न हो उठते थे।

चौधरी चरण सिंह एक स्वाभिमानी देशभक्त थे। वह भारत की पुरातन संस्कृति में आस्था रखने वाले व्यक्ति थे। उनकी वेशभूषा, उनका खान-पान, उनकी भाषा और शिष्टाचार में भी भारतीयता की विशिष्ट छाप रहती थी। उनका विश्वास था कि सदियों पुराने ये मूल्य चिरंतन थे तथा हमारे ऋषियों के हजारों वर्षों के चिंतन पर आधारित थे। भारतीय शिष्टाचार तब तक ठीक से लिपिबद्ध नहीं था और न ही पर्याप्त रूप से प्रचारित था। एक जेलयात्रा के दौरान उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी जो "शिष्टाचार" नाम से प्रकाशित हुई। राजस्थान के एक मित्र डाक्टर ने, जो सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता भी हैं, एक बार चौधरी साहब से मिलने की इच्छा जाहिर की, जिसके लिए उन्होंने तुरन्त स्वीकृति दे दी। जयपुर में वे मिले। समाचार-पत्रों आदि से मेरे मित्र की धारणा बन चुकी थी कि वह कड़वी जुबान बोलने वाले, सख्त, अड़ियल और मामूली वेशभूषा वाले कोई देहाती किस्म के आदमी होंगे। लेकिन बाद

में उन्हीं मित्र ने उनके (चौधरी साहब) गहन चिंतन, भद्रता, मृदुभाषिता और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उनके विशद विश्लेषण की प्रशंसा करते हुए एक कविता लिख डाली। यह ठीक उसके विपरीत था जिसकी उन्होंने अपेक्षा की थी। वह तभी से चौधरी साहब के प्रशसंक और अनुयायी बन गये।

गरीबों के लिए चौधरी साहब की चिंता गहरी और स्थायी थी। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा, चौधरी साहब के सरकारी आवास 12-तुगलक रोड पर, निर्माण कार्य चल रहा था, जिसमें कुछ राजस्थानी मजदूर काम कर रहे थे। उन मजदूरों में कुछ महिलाएं भी थीं, जिनमें से एक महिला अपना बच्चा साथ लेकर आई थी। बच्चा बहुत ही दुर्बल था और किसी बीमारी का शिकार भी था। चौधरी साहब बच्चे के स्वास्थ्य की उपेक्षा देख मर्माहत हुए और उन्होंने इस बाबत पूछताछ की कि मां अपने बच्चे की ठीक से देखभाल क्यों नहीं कर पा रही है। उन्होंने तत्काल बच्चे की दवा और पोषक आहार की व्यवस्था के लिए 500/- रुपये दिये और कहा कि जब तक बच्चा ठीक नहीं हो जाता, तब तक उसकी मां काम पर नहीं आये। भारतीय नारी जाति के प्रति उनकी सम्मान भावना अद्वितीय थी।

झांसी की रानी के प्रति उनकी जो सर्वोच्च सम्मान भावना थी, वह सुविदित थी। उस महान देशभक्त और बहादुर योद्धा की प्रशंसा में वह गीत गुनगुनाने लगते थे। अपने परिवार की महिला सदस्यों पर वह विशेष स्नेह और अनुकम्पा रखते थे। उनकी बेटियां और बहुएं समान रूप से उनकी आंखों की पुतलियां थीं। घोर श्रम और थकान वाले दिनों में भी वह अपनी बीमार बेटी की परिचर्या के लिए शक्ति और समय जुटा ही लेते थे। वह याद रखते थे कि रात में कितनी बार उसे खांसी आई थी, क्योंकि रातभर वह जगते ही रहते थे। उनका विश्वास था कि नारियां अधिक भरोसेमंद होती हैं। उनके सम्मान के प्रति वह बहुत सजग रहते थे। जो स्थान वे परिवार में रखती हैं, उसके अलावा वे राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। उनका मानना था कि वह व्यवसाय जो भी चाहें, कर सकती हैं।

चौधरी साहब को हृदय रोग विशेषज्ञों ने रोज सुबह नियमित रूप से टहलने और टहलते समय एक डाक्टर साथ रखने की सलाह दी थी। चूंकि यह सरकारी जरूरत थी, इसलिए निजी स्टाफ के अधिकारियों ने तय किया कि समय की बचत और बेहतर निगरानी के लिए एक सरकारी वाहन मुझे लाने के लिए लोदी एस्टेट जाया करे, ताकि मैं तीन मूर्ति लॉन में टहलते समय चौधरी साहब के साथ रहूं। एक दिन सुबह उन्होंने मुझे सरकारी कार से उतरते हुए देख लिया। अगली सुबह उनकी निजी कार मुझे लाने के लिए भेजी गयी। क्योंकि उनका विचार था कि वह सरकारी कार का दुरुपयोग था और वह कार्य सरकारी कामकाज का हिस्सा नहीं था। अवश्य ही उनकी समस्या हम समझ गये थे; क्योंकि यह पहला अवसर नहीं था। उनकी इच्छाओं का तो हमेशा सम्मान किया जाता था। हमने उनके दृष्टिकोण को स्वीकार

किया और उसे व्यवहार में लाना जारी रखा। ऐसे मामलों तक मैं उनकी मर्यादा का यह स्तर था।

सभी देवताओं के पैरों में कीचड़ लगी होती है। अक्सर यह देखा गया है कि निकट आने पर व्यक्तियों के कुछ ऐसे पहलुओं का पता चल जाता है, जो अच्छे नहीं होते। फिर भी चौधरी चरण सिंह के मामले में यह उक्ति मुझे मिथ्या लगी। उन्हें जिस तरह चित्रित किया जाता था, वह उससे कहीं महान थे। अत्यंत निकट से भी उनमें शिशु की तरह मुस्कान वाली छवि के दर्शन होते थे—सबको प्यार, सबका ध्यान ! हर कोई समझता था कि चौधरी साहब उसका विशेष ख्याल रखते हैं। ऊपर दिये गये अपने वक्तव्य को मैंने सावधानी से निजी अनुभव की कसौटी पर तौला है और मुझे उम्मीद है कि चौधरी चरण सिंह के महान व्यक्तित्व के भीतर ठीक से झांकने की दृष्टि इससे सुलभ होगी। लेकिन अभिव्यक्ति की पूर्णता सम्भव नहीं है, क्योंकि "अगर सम्पूर्ण सत्य को लिपिबद्ध करने का गम्भीर प्रयास किया गया तो अंग्रेजी भाषा का सहज लचीलापन अवरुद्ध हो जाएगा और कागज और मुद्रण की सीमाएं अनियंत्रित रूप से अस्तव्यस्त हो जायेंगी···" (इयान एर्ड)। मुझमें न तो वैसी क्षमता है और न ही साहस कि इस तरह के प्रयास की धृष्टता करूं। आदमी अपने वास्तविक जीवन में कितना ऊपर उठ सकता है, इसके बारे में पहले जो धारणा थी, उससे भी महान थे चौधरी साहब। निःसंदेह उनकी तुलना भारत के उन महान सपूतों से की जाएगी जिनकी जीवनियों से मैं अपने जीवन के निर्माणकारी दौर से ही गुजरता रहा हूं।

39

असहमत होने पर भी उनकी कदर करते थे

सी. राजेश्वर राव*

चौधरी चरण सिंह आजादी की लड़ाई के प्रमुख सेनानी थे। वह एक महान देशभक्त, राजनीतिज्ञ, चिंतक और विचारक थे। हिन्दुस्तान की एकता और अखंडता को बनाये रखने की बाबत वह हमेशा चिंतित रहते और किसी भी मुद्दे पर बिना किसी लाग-लपेट, हिचकिचाहट के अपनी राय दे देते थे। कोई कितना भी बड़ा आदमी, नेता क्यों न हो, उसके सामने अपनी बात रखने में वह कभी संकोच नहीं करते थे और कोई कितना भी बुरा क्यों न माने, साफ बात कहना उनकी प्रवृत्ति थी। इसकी सबसे बड़ी और अहम् वजह यही रही कि वह एक सच्चे इंसान थे। उनका दिल साफ था और छल-फरेब से उन्हें घृणा थी। साफ बात कहने का उन्हें नुकसान भी हुआ लेकिन इसकी उन्होंने कभी कतई परवाह भी नहीं की।

मुझे याद आता है कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन, उसमें पंडित जी (नेहरू जी) ने सहकारी खेती का एक प्रस्ताव रखा था, लेकिन चौधरी साहब (चरण सिंह जी उस समय कांग्रेस में ही थे) ने निर्भय होकर पंडित जी के सहकारी खेती के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध किया। नतीजा यह कि वह प्रस्ताव पास ही नहीं हो सका। अपने विरोध के पीछे चौधरी चरण सिंह जी ने तर्क भी प्रस्तुत किये, जिन्हें सभी ने सराहा। यहां मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि निर्भयता उनकी विशेषता थी।

मुझे तकरीब पांच-छह साल उन्हें बहुत करीब से देखने का मौका मिला। मुझे एक बार की बात याद आती है। उस समय चौधरी साहब प्राइम मिनिस्टर थे। मैं उनके पास वर्किंग क्लास का सवाल लेकर गया था। वर्कर्स की मांगे भी थीं। मैंने उनसे कहा था कि "चौधरी साहब आप प्राइम मिनिस्टर हैं, आपको यह मांगे मान लेनी चाहिए।" तब चौधरी साहब बोले कि "भई, गांव में खेती पर काम कर रहे उस गरीब मजदूर को, भरपेट रोटी तक नहीं मिलती जबकि उसके मुकाबिले शहर के

---

* दिवंगत महासचिव, भाकपा

मजदूर को तो काफी पैसा मिलता है।" तब मैंने उनसे कहा था कि आपके पूर्ववर्ती नेता मीठी-मीठी बातें करके वायदे करते रहे हैं। लेकिन कोई विश्वास नहीं करेगा कि चौधरी साहब ने मुझसे कहा कि "मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। जो कर सकता हूं, वही मैं कहूंगा। इसके अलावा कुछ नहीं।" यह दृष्टांत उनकी ईमानदारी का सबूत है।

वह किसान परिवार में पैदा हुए थे। इसलिए किसान, उसकी समस्याओं और उसके जीवन में आने वाली परेशानियों को वह बखूबी जानते थे। किसानों की भलाई के लिए उन्होंने जितना कुछ किया, वह एक मिसाल है। उसे भुलाया नहीं जा सकता। हमने भी किसान सभा बनाई। किसानों के लिए संघर्ष किया, जमींदारों-जागीरदारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी लेकिन इसके बावजूद किसानों ने उन्हें ही अपना रहनुमा-मसीहा समझा-माना। चौधरी साहब जब प्राइम मिनिस्टर थे, उस दौरान मैं आन्ध्र प्रदेश गया था, तब वहां के किसानों ने मुझसे कहा था कि "पहली बार एक किसान का बेटा इस मुल्क की गद्दी पर बैठा है यानी प्राइम मिनिस्टर बना है। अब तो हमारी तकदीर ही बदल जायेगी।"

चौधरी साहब को अक्सर लोग कुलक कहते थे। यहां मैं बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जब मैंने भी, किसानों को उनके उत्पाद के सही दाम दिये जाने की मांग उठायी थी, तो मुझे भी कुलक कहा गया था। यह बात जब मैंने चौधरी साहब को बताई तो उन्होंने मुझसे कहा—"आप भी कुलक हो गये। आप तो कम्युनिस्ट लीडर हैं, आपको भी नहीं छोड़ा।"

वह भारी उद्योगों के खिलाफ थे। उनका मानना था कि इसी की वजह से देश में बेकारी, भुखमरी, गरीबी और बेरोजगारी बढ़ी। चौधरी साहब ने एक नहीं कई पुस्तकें लिखीं। इनमें इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया : इट्स काजेज एण्ड क्योर प्रमुख है। इसमें उन्होंने इन समस्याओं के निदान के तरीके भी सुझाये हैं। उस समय हम लोग उनकी बात नहीं मानते थे। लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में बेकारी और गरीबी को दूर करने का एक ही रास्ता है और वह है समाजवाद का। इससे गरीबी भी खत्म हो जायेगी और बेकारी भी। हां, यदि भारी मशीनें नहीं लगानी हैं तो चौधरी चरण सिंह जी का रास्ता ही बेहतर है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि चौधरी साहब ईमानदारी के साथ राजनीति करते थे। वह जो कहते थे, वही करते भी थे। कुछ बातों से हम लोग उनसे असहमत थे लेकिन उनकी ईमानदारी, साफगोई आदि की वजह से हम लोग उनकी बहुत कदर करते थे। हमें उनकी जिंदगी से प्रेरणा लेनी होगी। उन्होंने इस मुल्क के लिए, किसानों के लिए, देश की एकता-अखण्डता के लिए जो कुछ किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता।

40

चौधरी चरण सिंह : एक जन-हित साधक विभूति

डा. रामदास*

चौधरी साहब एक महान समाज सुधारक और राजनेता थे। उनका समूचा राजनैतिक जीवन गरीबों और पिछड़ों के उत्थान के लिए समर्पित रहा। उनकी पूरी कोशिश रही कि समाज के सभी तबकों को बराबरी का दर्जा मिले, चाहे राजनीति में हो अथवा समाज में। गरीबों के प्रति इस अदम्य करुणा ने चौधरी साहब को देशव्यापी स्तर पर फैली अभावग्रस्त जिन्दगी को गहराई से समझने की प्रेरणा दी थी। हालांकि मेरे लिए यह काफी दुष्कर है कि उनके गुणों की महानता का बखान कर सकूं, फिर भी अपनी समूची कोशिश और सीमाओं के भीतर कतिपय उनके उन गुणों को उद्धृत करने की मेरी कोशिश है, जिन्हें मैंने उनके एक लम्बे समय के सानिध्य के दौरान परखा था।

चौधरी साहब एक प्रखर बुद्धि वाले समाज सुधारक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन और सिद्धान्तों में उनकी दृढ़ निष्ठा और विश्वास था और वह पक्के आर्य समाजी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में हमेशा आर्य समाज के अनुरूप आचरण बरता। वह भारत में एक ऐसे समाज की स्थापना चाहते थे जहां कोई जाति न हो। इसीलिए वह एक जाति विहीन समाज के लिए जाति-व्यवस्था के खिलाफ संघर्षरत रहे। स्व. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को लिखे एक पत्र में उन्होंने सुझाव दिया था कि कैसे देश से जातिवादी बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है। इससे साफ जाहिर है कि जाति व्यवस्था के प्रति उनके मन में कैसी भावनाएं थीं और इसकी समाप्ति के लिए वह कितने व्यग्र थे।

चौधरी साहब रूढ़िवादी-ग्रामीण पृष्ठभूमि से आये थे। उनके द्वारा निष्पादित तमाम कार्यों में जमींदारी उन्मूलन सर्वोत्कृष्ठ रूप में आंका जायेगा। स्व. गोविन्द बल्लभ पंत,मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश ने भी चौधरी साहब की प्रखर क्षमताओं पर न सिर्फ

---

* उ॰ प्र॰ और केन्द्र सरकार में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्यरत रहे

विश्वास किया था बल्कि जमींदारी उन्मूलन जैसे जटिल मसले पर उनके द्वारा पूरी दृढ़ता, हौसले और गति के साथ सफलता हासिल करने में भी दिलचस्पी दिखाई थी।

योजना आयोग, भारत सरकार, ने भी पूरी दिलचस्पी के साथ जमींदारी उन्मूलन पर चौधरी साहब द्वारा किये गये समूचे मूल्यांकित कार्यों के आधार पर भारत के विभिन्न राज्यों में जमींदारी उन्मूलन के तमाम पहुलओं को परखने के लिए एक विदेशी विशेषज्ञ डा. लैडजिंस्की की सेवाएं लीं। डा. लैडजिंस्की ने विभिन्न राज्यों के अपने भ्रमण के बाद पाया कि उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन कानून सर्वाधिक अच्छे रूप में लागू हुआ है। यह स्वाभविक ही था कि उत्तर प्रदेश, जो कि चौधरी साहब का अपना प्रदेश था, में जमींदारी उन्मूलन की उपलब्धियों और अनुभवों का कई राज्यों ने लाभ उठाया।

वैसे तो कई लोगों ने यह विश्लेषित करने की कोशिश की है कि चौधरी साहब द्वारा जमींदारी उन्मूलन का दुष्कर कार्य कैसे इतनी समझ-बूझ और प्रभावकारी तरीके से सम्पन्न हो पाया। मुझे इसका एक सबसे बड़ा कारण यह दिखाई देता है कि इतने बड़े और उत्कृष्ट कार्य को फलदायी बनाने में चौधरी साहब की ग्रामीण पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण कारक थी और वे जमींदारी व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं के यथार्थ से पूरी तरह वाकिफ थे। इसलिए उन्होंने राज्य में जमींदारी उन्मूलन जैसे प्रगतिशील कानून तथा इसके प्रयोगों को अमली जामा पहनाने में वेहतर समझदारी दिखाई थी। इससे इस विश्वास की पुष्टि हो जाती है कि भारत के सम्पूर्ण विकास के लिए सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि योजना आयोग, भारत सरकार, में ग्रामोन्मुखी विकास की पक्षधर प्रतिभाओं का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाए। यह विश्वास आज भी प्रासंगिक है।

चौधरी साहब ग्रामीण समस्याओं से बहुत गहरे तक जुड़े थे। उनके द्वारा लिखित विभिन्न पुस्तकों में जमींदारी उन्मूलन, कृषि विकास और आर्थिक विकास के विश्लेषणों से यह साफ जाहिर है कि उन्हें तमाम विषमताओं-समस्याओं के हल के लिए तरीकों की भरपूर समझ थी। अपनी बात को अभिव्यक्त करने का उनका तरीका बेहद खरा था, क्योंकि उन्हें न सिर्फ पूरी तौर पर तथ्यों और आंकड़ों की जानकारी थी बल्कि बात को भी पूरे तार्किक और दिलचस्प ढंग से इस तरह समझा देते थे कि पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ जाती थी। वह सहकारी खेती के बिल्कुल खिलाफ थे, जिसके कारण उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू की नाराजी भी झेलनी पड़ी थी। लेकिन चौधरी साहब अपने निष्कर्ष पर अटल रहे और अन्ततः नेहरू जी को भी इस विषय पर उनके विचारों के निहितार्थ की प्रशंसा करनी पड़ी थी।

दरअसल चौधरी साहब सहकारिता के विस्तार के सबसे बड़े और मुखर प्रवक्ता थे। लेकिन वे मानते थे कि उत्पादन में वृद्धि, बाजार-विपणन और कृषि में प्रयुक्त हो रहे पुराने किस्म के उपकरणों-औजारों को नई तकनीक के जरिये ज्यादा लाभकारी

बनाने हेतु सहकारिता की सेवाएं उपयुक्त हैं न कि सहकारी खेती(को-ऑपरेटिव फार्मिंग) की अवधारणा। क्योंकि ऐसा करने से देश में बड़े पैमाने पर उपद्रव की स्थित उत्पन्न हो जाएगी और कृषि उत्पादन का स्तर भी गिर जायेगा।

मैं लगभग चार दशक तक चौधरी साहब के सम्पर्क में रहा। जहां उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार में विभिन्न मंत्रालयों में मंत्री की हैसियत से कार्यभार ग्रहण किये, वहीं मैं भी इसी राज्य में कृषि,खाद्य, शिक्षा और योजना विभागों में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्यरत रहा। मैं उनकी बौद्धिक प्रखरता और हृदय की विशालता का साक्षी हूं, इसलिए प्रशंसक और कृतज्ञ भी। कृषि और तत्सम्बंधी समस्याओं के समाधान की दिशा में होने वाली विभिन्न राज्य स्तरीय बैठकों और कान्फ्रेंसों के दौरान मुझे कई बार चौधरी साहब के निकट सम्पर्क का सौभाग्य मिला। हालांकि मैंने कभी भी उत्तर प्रदेश में किसी मंत्रालय में उनके अधीन काम नहीं किया लेकिन राज्य सरकार के योजना अनुसंधान एंव कार्मिक संस्थान के (पी. ए. आर. टी.) के निदेशक पद पर कार्यरत होने के नाते बराबर उनके सम्पर्क में आया। वे ग्रामीण उद्योगों, स्वास्थ्य, कृषि, सहकारिता, पंचायत आदि के क्षेत्र में समुचित रूप से तकनीकी उपकरण और प्रशिक्षण देने में विश्वास रखते थे, ताकि विकास की बुनियाद और पुख्ता हो। 1960-64 के दौरान मुझे उन्हें पाइलट विकास प्रोजेक्ट में लखनऊ योजना अनुसंधान एवं कार्मिक संस्थान के तहत सम्पन्न हो रहे कुछ कार्यकलापों को दिखाने का मौका मिला। खासतौर पर इटावा के बीहड़ों में, जहां सुधार कार्यों को प्राथमिकता देने, सहकारी सेवाओं से परिचित कराने और कृषि से सम्बधित शिक्षा को बेहतर ढंग से लागू करने के लिए योजना के अर्न्तगत डिग्री स्तर के दो कालेज खोले गये थे, ताकि युवकों को ग्रामीण स्तर पर रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिले। वे क्षेत्र मे किये जा रहे बेहतरीन कार्यों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने ग्रामीण जनता की एक सभा को सम्बोधित भी किया। जब क्षेत्र प्रमुख द्वारा उनके गले में फूलों का हार डाला जाने लगा तो उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा कि इस हार का असली हकदार मैं नहीं, डा. रामदास हैं, जिनके प्रयास और प्रतिभा से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्यों का बेहतरीन निष्पादन हुआ है। व्यक्तिगत तौर पर मैं उनके सर्वेक्षण से कुछ-कुछ संशकित था, क्योंकि मैं उनके विश्लेषणात्मक कार्यों की क्षमता से वाकिफ था और उनके द्वारा ऐसी टिप्पणी लगभग दुर्लभ होती थी।

1979 के दौरान चौधरी साहब ने मुझे "किसान ट्रस्ट" के मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के बावत पूछा तो अनिच्छा के बावजूद मैंने इस पद को ग्रहण करना मंजूर कर लिया। उनकी प्रबल इच्छा थी कि ट्रस्ट की ओर से हिन्दी में एक साप्ताहिक पत्र शुरू हो। उन्होंने मुझे ट्रस्ट की सारी जिम्मेदारियां सौंप दीं और इस बात के लिए भी राजी कर लिया कि मैं केवल अपनी सम्पूर्ण क्षमता के अनुरूप ही कार्य करूं।

मैनेजिंग ट्रस्टी का कार्यभार सम्भालना अपने आप में काफी चुनौतीपूर्ण कार्य था। संस्थान में रहते हुए मुझे न सिर्फ व्यापक अनुभव हासिल हुए थे, वरन चौधरी साहब का सानिध्य और मार्ग-दर्शन भी मिला था, जो मेरे लिए बहुत ही उपयोगी था और जिससे मुझे बाद में पुस्तक लेखन कार्य को जारी रखने में बहुत मदद मिली। बाद में अपनी अस्वस्थता के चलते मैंने चौधरी साहब से विनम्र आग्रह किया कि मुझे इस दायित्व से मुक्त कर दिया जाये। कुछ दिनों बाद चौधरी साहब ने मेरे विनम्र निवेदन को स्वीकार कर लिया।

चौधरी साहब वस्तुतः जन-जन के हितैषी और हित साधक थे।

41

संघर्ष ही उनकी जीवन-शक्ति था

डा. नत्थन सिंह*

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह एक कुशल राजनीतिक नेता की अपेक्षा अधिक अच्छे प्रशासक, लोकहित के साथ प्रतिबद्ध विचारक और श्रेष्ठ इंसान थे। वह यावज्जीवन भारत की राजनीति के अंग रहे, पर राजनीति उन पर हावी कभी नहीं हुई। जब कभी ऐसा अवसर आया कि उनको अपने पद की रक्षा के लिए, राजनीतिक अवसरवादिता की आवश्यकता है, तब वह राजनीतिक मूल्यहीनता अंगीकार करने की अपेक्षा अपने पदों को ही तिलांजलि देते रहे। यह इसलिए सम्भव हो सका था कि वह मूलतः किसान थे। उनकी आवश्यकताएं अल्प थीं, कठिन परिश्रम, कष्ट-सहिष्णुता और स्पष्टवादिता के वह अभ्यस्त थे। बंगला, वैभव, मोटर, फार्म हाउस और करोड़ों के बैंक बैलेंस की उनको चाह नहीं थी, यदि होती, तो वह मुख्यमंत्रियों तथा प्रधानमंत्रियों की हां में हां मिलाते रहते, उनकी नीतियों का विरोध नहीं करते।

यथार्थ में, कांग्रेस के प्रति उनका मोह-भंग बहुत प्रारम्भ में ही हो गया था। एक दिन बातचीत के दौरान उन्होंने मुझे बताया था, "मैं जब उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाकों में बड़ी सख्ती के साथ जमींदारी उन्मूलन कानून को लागू करा रहा था, तो कितने ही कांग्रेसी नेता मेरे खिलाफ हो गये थे। उनके क्रोध से पंतजी मेरी रक्षा करते रहे थे, किन्तु मैंने उसी सख्ती के साथ, जब पर्वतीय क्षेत्रों पर उनको लागू करवाया तो पंतजी स्वयं नाराज हो गये।" मोह-भंग की प्रक्रिया का आरम्भ यहीं से होता है। इसके विकास का बिन्दु, कांग्रेस-अधिवेशन में, नेहरू जी के सहकारी खेती के प्रस्ताव का विरोध करने में निहित है और चरम सीमा उत्तर प्रदेश में मंत्रिमंडल गठन की प्रक्रिया और उसमें कांग्रेस हाई कमान की अविश्वसनीय भूमिका में केन्द्रित है।

---

* शिक्षाविद्, आलोचक एवं साहित्यकार

इस बिन्दु पर पहुंच कर उनको विश्वास हो गया था कि कांग्रेस से किसानों, गरीबों, देहात के पिछड़े लोगों, शहर के भूखे-नंगे और बेकारों का कोई हित नहीं हो सकता। शासन में भ्रष्टाचार के फैलाव, युवकों में बढ़ती अनुशासनहीनता और नेताओं में विकसित अवसरवादिता पर उनकी आत्मा बड़ी दुखी होती थी। एक बार उन्होंने मुझसे प्रश्न किया—"बताओ ! किसानों की बात करने वाला कोई अन्य आज की राजनीति में तुम्हारी दृष्टि में है ?" मैं निरुत्तर हो गया था।

इस देश का, पिछले सैंतालीस वर्षों का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि यहां के राजनीतिक नेताओं ने, अपनी लोकप्रियता तथा राजनीतिक सत्ता को कायम रखने के लिए बड़े आकर्षक नारे लगाये हैं—"लोकतंत्र की स्थापना", "धर्मनिरपेक्ष राज्य-शासन की कल्पना", "गरीबी हटाओ का नारा", "समता तथा एकता का आदर्श", "जवाहर रोजगार योजना" आदि इसी प्रकार के नारे हैं। इन नारों से देश में न तो सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हुई, न धर्मनिरपेक्ष समाज को अस्तित्व में लाया जा सका, न गरीबी हटी और न जवाहर रोजगार योजना से देश के लाखों बेरोजगारों को जीविका के साधन मिले। इसके विपरीत लोकतंत्र का नारा देने वाले लोगों ने अपने दलों की आन्तरिक लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपने ही पैरों तले कुचला। मंत्री तथा मुख्यमंत्री योग्यता, अनुभव और लोक-सापेक्ष-मूल्यों के साथ प्रतिबद्धता के आधार पर नियुक्त न होकर नेता के प्रति भक्ति के आधार पर बनाये जाने लगे। फलतः देश का हित, देश के करोड़ों भूखे तथा नंगों का हित न होकर, हित होने लगा नेताओं का। यह लोकतंत्र की हत्या थी।

धर्मनिरपेक्षता का ढोल पीटने वाले नेताओं ने अपने वोट-बैंक की स्थापना के लिए, एक को प्रश्रय देना आरम्भ कर दिया और दूसरे की उपेक्षा। इसी तरह जातिवाद को कोसने वाले नेताओं ने विशेषतः कांग्रेस के कर्णधारों ने जिस क्षेत्र में जिस जाति का बहुमत अथवा वर्चस्व देखा, वहां से उसी जाति के व्यक्ति को निर्वाचन में अपना प्रत्याशी बनाना आरम्भ कर दिया, प्रशासनिक तथा विदेश सेवाओं में अपनी जाति के लोग बिठाये जाने लगे। चौधरी साहब को लगा कि यह तो लोकतंत्र की हत्या है। अपने पत्रों द्वारा चौधरी साहब ने इसका विरोध किया (देखिए "जातिवादी कौन : एक विश्लेषण" पुस्तक)। उनकी ईमानदारी और स्वच्छ छवि का दूसरा प्रमाण है, जनता शासन के दौरान उनके साथ मोरारजी देसाई के बीच हुए सवाल-जवाब (तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित)।

जनता सरकार की किसान विरोधी तथा ग्रामीण क्षेत्र की उपेक्षा परक नीति के फलस्वरूप उनको, विवशतावश उसका विरोध करना पड़ा। यदि वह ऐसा न करते तो यह अपने मूलभूत सिद्धान्तों के विपरीत जाना होता।

सन् 1945 के आस-पास चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस की बैठक में एक प्रस्ताव इस आशय का रखा था कि किसानों की सन्तानों को सरकारी नौकरियों में

पचास फीसदी आरक्षण दिया जाए। उनके इस प्रस्ताव का विरोध हुआ। मैं जिस समय उनके अंग्रेजी में लिखे प्रस्ताव विषयक लेख का हिन्दी अनुवाद करके उनको दिखा रहा था, उस समय उन्होंने मुझे बताया था कि इस प्रस्ताव का विरोध प्रदेश के एक बड़े समाजवादी नेता ने भी किया था और एक कांग्रेस-सदस्य ने तो यहां तक कहा था कि "किसानों के बेटे जब सरकारी पदों पर बैठ जायेंगे तो हल कौन चलाएगा।" उस समय चौधरी साहब के चेहरे पर देखने से मुझे लगा कि इन तथाकथित समाजवादियों तथा कांग्रेसियों ने अपने ऐसे कथन तथा कर्मों के द्वारा ही, उनको मोहभंग की स्थिति तक पहुंचाया था। देहात की उपेक्षा के प्रति वह अत्यन्त क्षुब्ध और व्यथित थे।

यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि चौधरी साहब जब किसान शब्द का प्रयोग करते थे तब उसका अर्थ केवल हलवाहा नहीं होता था। उनकी किसान की परिभाषा में खेती करने वाला तथा खेती से सम्बंधित धन्धों में लगने वाला प्रत्येक व्यक्ति शामिल था।

चौधरी साहब न केवल निष्ठावान तथा देशभक्ति के साथ प्रतिबद्ध राजनीतिक नेता ही थे वरन् एक कुशल प्रशासक भी थे। जो व्यक्ति अपने विचारों तथा कार्यों में ईमानदार नहीं होता, रिश्वतखोरी-जिसको आज सुविधा शुल्क का नाम दे दिया गया है—से अलग नहीं रहता, वह कुशल प्रशासक नहीं हो सकता। उनकी प्रशासकीय क्षमता के मूल में ये गुण पर्याप्त मात्रा में थे। बड़ौत के स्व. लाला श्रीराम खत्री ने जो चौधरी साहब के बहुत समीप थे, मुझे बताया था कि एक निलम्बित इंजीनियर अपना निलम्बन निरस्त कराने के उद्देश्य से लालाजी को चौधरी साहब से सिफारिश कराने ले गया। चौधरी साहब ने उसकी फाइल देखी और पूरी फाइल देखने के बाद, माथे पर हाथ रखकर बैठ गये और थोड़ी देर बाद लाला जी से बोले, "इस फाइल में से बदबू आती है।" लालाजी इसी उत्तर की अपेक्षा करते थे। चौधरी साहब के हटते ही उसी इंजीनियर की पदोन्नति हो गई।

स्वच्छ प्रशासन और समाज-सापेक्ष राजनीति पर चर्चा के सन्दर्भ में उन्होंने मुझे बताया कि एक उद्योगपति उनसे कोई लाइसेंस लेने के सिलसिले में मिला। लाइसेंस देने पर कमीशन की रकम, सवा छह प्रतिशत से कई करोड़ बैठती थी। चौधरी साहब ने उसको लाइसेंस नहीं दिया।

चौधरी साहब जब उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने कालिजों तथा विश्वविद्यालयों की अनिवार्य छात्र यूनियनों को ऐच्छिक बना दिया था और उसके विरोध में कहीं कोई आन्दोलन नहीं हुआ। आपने उत्तर प्रदेश के आन्दोलनकारी पटवारियों के त्याग-पत्र स्वीकार कर लिये थे और पूरे प्रदेश ने राहत की सांस ली थी। उनमें नीति-निर्धारण और उसको मूर्त रूप देने का पर्याप्त नैतिक साहस था।

एत्मादपुर आगरा के एक रेस्तरां में दो व्यक्ति प्रदेश में व्याप्त अनुशासनहीनता

पर चर्चा कर रहे थे। एक ने प्रश्न किया, इसका हल क्या हो सकता है ? दूसरे का उत्तर था—"चौधरी चरण सिंह।" मैं और मेरा साथी उनकी बात सुनकर मुग्ध हो गये। यथार्थ में, अनुशासन और व्यवस्था का नाम था चौधरी चरण सिंह।

गांधीवाद में चौधरी साहब का अगाध विश्वास था। एक बार मैंने उनसे कहा था—"चौधरी साहब गांधीवाद आपकी कमजोरी है और आर्य समाज आपकी ताकत।" यह सुनकर विरोध और जिज्ञासा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, "आप समझते हैं कि गांधी जी का नाम लिये बिना, आप भारतीय राजनीति में सन्दर्भहीन हो जायेंगे। यह आपको किसान तथा मजदूरों को एक मंच पर लाकर आन्दोलनमुखी नहीं बनाने देता। और जब तक ये दोनों शक्तियां एक होकर अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर लेतीं, अपनी सरकारें नहीं बना लेतीं, तब तक देश में सच्चे लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती। गांधीवाद आपको ऐसा करने से रोकता है। आपकी ताकत है आर्यसमाज, इसने आपको देशभक्त बनाया है, ईमानदारी दी है और कथन तथा कर्म की एकता प्रदान की है।" यह सुनकर उनकी आंखों में चमक आ गई। मैंने आगे कहा—"चौधरी साहब यदि आपने अपनी ऐतिहासिक किसान रैली में किसान और मजदूरों की एकता का नारा लगा दिया होता, तो आप भारत के लेनिन हो जाते। उनके शब्द थे—"अरे ! लेनिन तो महान व्यक्ति थे।" मैंने कहा—"वह महान हुए, अपने देश की जनता को समृद्धि और स्वाधीनता दिलाकर और अपने चरित्र की महानता दिखा कर। चारित्रिक बल आप में भी है, पर आपका गांधीवाद आपके मार्ग में आड़े आ जाता है।" वह सुनते रहे। मैंने कहा—"आप कुटीर उद्योगों तथा लघु उद्योगों के विकास द्वारा भारत की काया पलटने की योजना लेकर आये थे। आप चाहते थे कि जो वस्तु लघु उद्योगों में बने कानून द्वारा उसका निर्माण बड़े उद्योगों में बन्द कर देना चाहिए। आपकी इस योजना को क्या तथाकथित गांधीवादियों ने ही पलीता नहीं लगाया था ?" वह बोले—"तुम ठीक कहते हो, गांधी जी की कृपा से राजनीतिक सत्ता छीनने वालों ने ही गांधी जी को मारा है।"

यथार्थ में चौधरी साहब बहुत सहज और प्रतिबद्ध इंसान थे। राजनीति उनके लिए न तो एक व्यसन था और न अभिप्रेत, वह था अभिप्रेत तक पहुंचने का एक साधन। कुछ लोग, जब राजनीति को साध्य मान लेते है, तब राष्ट्र तथा समाज का हित उनके लिए गौण हो जाता है। चौधरी साहब के लिए वह केवल साधन था। अपने साध्य तक पहुंचने के लिए वह न तो चाणक्य का अनुकरण करना चाहते थे, न पाश्चात्य दार्शनिक मैकियावली का। चाणक्य के लिए सफलता काम्य थी, साधन की पवित्रता नहीं। मैकियावली के अनुसार अपने वायदे से फिरने के लिए एक राजनीतिक को कोई न कोई बहाना मिल जाता है। चौधरी साहब का सिद्धान्त न तो रंगीन बहाना तलाश करना था और न सफलता के लिए चाणक्य के सिद्धान्त को अपनाना। यदि ऐसा होता तो वह एक लम्बे समय तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

रह सकते थे और प्रधानमंत्री भी।

वह मूल्यों के साथ प्रतिबद्ध इंसान थे। मैंने, उनको तीन बार दीक्षान्त भाषण देते सुना था। एक बार मेरठ कालिज मेरठ में और दो बार जनता वैदिक कालिज बड़ौत में। दीक्षान्त भाषणों में एक शब्द भी राजनीति के विषय में नहीं बोलते थे। सारा व्याख्यान शिक्षा तथा संस्कृति से सम्बंधित होता था। सम्भवतः सन् 1974 के दीक्षान्त समारोह में लगभग दस हजार किसान भाषण सुन रहे थे, वह एक शब्द भी शिक्षा के अतिरिक्त नहीं बोले। किसान निराश हुए और छात्र तथा अध्यापक गर्वित। मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति ने मुझसे कहा था, "मूल्यों के साथ प्रतिबद्ध ऐसा राजनीतिज्ञ मैंने दूसरा नहीं देखा, जिसने इतने अधिक श्रोताओं का लाभ भी अपने राजनीतिक हितों के लिए नहीं उठाया। निश्चित है कि यदि दूसरा व्यक्ति होता तो शिक्षा पर कम, अपनी राजनीतिक उपलब्धियों पर अधिक बोलता। अवसर से अनावश्यक, अमर्यादित और अनैतिक लाभ उठाना उनके जीवन-मूल्यों के विपरीत था।

अपने सबसे बड़े दामाद प्रो. गुरुदत सोलंकी, सदस्य, विधान परिषद, उ. प्र. के स्वर्गवास के बाद उनके बच्चे लखनऊ में रहना चाहते थे। कई लोगों ने श्रीमती सोलंकी को विधान परिषद के लिए नामांकित करने का अनुरोध उनसे किया था। उनमें एक मैं भी था। मेरा तर्क था कि विधान परिषद की सदस्या बनने के बाद उनको वही मकान मिल सकता है, जिसमें आजकल रह रही हैं। उनका उत्तर था—"वे लोग इस घर में आकर क्यों नहीं रहते, इतनी बड़ी कोठी है और रहने वाले केवल हम दो हैं।" और वह टस से मस नहीं हुए।

व्यक्ति पर जब राजनीति हावी हो जाती है, तब वह एकांगी, आत्मनिष्ठ, आत्मकेन्द्रित, मित्रों तथा सम्बंधियों से अलगावित, शंकित और अन्तर्मुखी हो जाता है। हर समय उसको अपनी तथा अपनी कुर्सी की रक्षा की चिन्ता रहती है। चौधरी साहब इसके अपवाद थे। वह जब गृहमंत्री थे, बुलन्दशहर के एक पुराने साथी उनसे मिलने आये। आपने उनसे कुशल-क्षेम पूछी। वह बोले—"चौधरी साहब ! सब ठीक है, थोड़ी-सी रही है वह भी कट जायेगी।" चौधरी साहब बोले—"निराशा को सवार मत होने दो। मुझे देखो तुम से तो उम्र में बड़ा हूं। संघर्षों में जीवन की शक्ति पाता हूं।" यह था चौधरी साहब का दर्शन और व्यक्तित्व।

42

सर्वहारा के प्रति प्रतिबद्ध थे चौधरी चरण सिंह

परिमल दास*

हमारे देश में किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी प्रशंसा की बाढ़ उमड़ पड़ती दीखती है। वे लोग भी तारीफ करते नहीं थकते, जिन्होंने उसके जीवनकाल में उसकी निंदा के सिवा और कुछ भी नहीं किया हो। यह परंपरा एक तरफ जहां मनुष्य को उसकी बैरी भावनाओं से मुक्त कराती है, वहीं दूसरी तरफ प्रशंसाओं को महज औपचारिकता बना देती है। कभी-कभी यह प्रशंसा झूठी भी लगने लगती है। लोग शिष्टाचार निभाते हैं, मूल्यांकन नहीं करते। मन में कहीं खोट रह जाती है, जिसे वे छिपाना चाहते हैं। मुखौटा ओढ़े ढोंगीपन के प्रदर्शन की होड़ लग जाती है। कभी राजनीतिक बाध्यताएं न चाहते हुए भी कुछ काम करने को मजबूर कर दिया करती हैं। पर कुल मिलाकर सार्वजनिक जीवन का खोखलापन और भी उजागर हो जाता है, दुख की बात यह है कि हम इस खोखलेपन और ढोंगी जीवन को पसंद करने लग गये है।

चौधरी चरण सिंह हाल के इतिहास में गैर-द्विजों में से पहले व्यक्ति थे (आंबेडकर के अतिरिक्त), जिन्होंने सत्ता पर सवर्णों के एकाधिकार को चुनौती देने की प्रक्रिया की शुरूआत की थी। इस काम में अपनी वजहों से या संगठन की कमजोरी के कारण, पूरी सफलता न भी मिली हो, फिर भी वे एक ताकतवर खतरे के रूप में दीखने लगे थे। लोहिया ने जिसकी नींव डाली थी, चरण सिंह ने उस पर इमारत के निर्माण का काम शुरू कर दिया था, इसलिए सवर्ण इनकी तस्वीर को साफ करके उनके व्यक्तित्व को अक्षत नहीं रहने दे सकते थे।

चौधरी साहब को उनके जीवनकाल में कई गलत प्रचारों का शिकार बनाया गया। कुछ तो इनमें ऐसे थे, जिन्हें जानबूझ कर फैलाया गया। जो सबसे अधिक प्रचारित हुआ, वह यह था कि चरण सिंह धनी किसान यानी 'कुलक' के प्रतिनिधि

---

* जनेवि में 'इण्टरनेशनल स्टडीज' में प्रोफेसर

थे। कुछ वामपंथी प्रचारकों ने इसे विश्वसनीयता प्रदान करने का प्रयास किया। इसलिए उन्हें चौधरी चरण सिंह के शब्दों में ही जवाब देना उचित होगा। चौधरी साहब अपनी किताब 'इंडियाज इकोनॉमिक पॉलिसी : दि गांधीयन ब्लू प्रिंट' में लिखते हैं, 'भूमि की संपत्ति पर प्रति वयस्क व्यक्ति (जिसमें पत्नी और बच्चे शामिल हैं) हदबंदी की सीमा 27.5 एकड़ से अधिक न हो और अतिरिक्त जमीन भूमिहीनों के बीच, या ऐसे किसान, जिसके पास ढाई एकड़ से कम जमीन हो, बांट दी जाये।'

जहां सिंचाई की व्यवस्था उपलब्ध है, वहां उनके अनुसार प्रति व्यक्ति अधिक से अधिक और कम से कम की सीमा क्रमशः 12.5 एकड़ और 2.5 एकड़ रखी जानी चाहिए। भारत के समाजवादी आंदोलन में जहां सिंचाई की व्यवस्था उपलब्ध न रही हो, हदबंदी की सीमा 30 एकड़ तक बतायी जा चुकी है। ऐसी सूरत में जमीन के प्रश्न को लेकर चौधरी साहब को 'कुलक' करार देना मिथ्या दोषारोपण के सिवा और कुछ भी नहीं है।

देश में पिछड़ों की राजनीति गांव और गरीबी की राजनीति के अलावा और कुछ नहीं बन सकती। राष्ट्रीय स्तर पर बहुसंख्यक के वर्चस्व की स्थापना ग्रामीण अर्थव्यवस्था या कृषि प्रधान आर्थिक नीति से जुड़ी है, कम से कम शुरू के चरणों में। ऊंची जात, ऊंचे वर्ग और अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों के लिए गांधी 'दकियानूसी और पुरातनपंथी' थे, लोहिया 'सिरफिरे' और चौधरी चरण सिंह 'कुलक' या जाट नेता। चौधरी साहब की भूमिका को समझने के लिए इस संदर्भ और परिप्रेक्ष्य को कतई नहीं भूलना चाहिए। कई दफा उनकी चाल या दांव गलत भले ही रहे हों, पर रणकौशल कभी गलत नहीं रहा। भारत के सर्वहारा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कभी भी कमजोर नहीं हुई।

भारत के गरीब और गरीबी के बारे में उनकी जानकारी मात्र किताबी नहीं थी। उन्होंने गरीबी को न सिर्फ देखा, जिया भी था। गरीबों के प्रति उनकी हमदर्दी सिर्फ भावनात्मक उद्‌गार या वोट की राजनीति का कला प्रदर्शन नहीं था। वे गरीबी को अन्यायी व्यवस्था की उपज मानकर उसके निराकरण के प्रयत्नों में जुटे हुए थे। उनका सादगी का जीवन उनके जीवन दर्शन और आर्थिक चिंतन का ही नतीजा था। कथनी और करनी के बीच फासला कम से कम रखने में वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। उनके समाज दर्शन का आधार जाति प्रथा की समाप्ति था। इसे खत्म करने की दिशा में लोहिया ने जहां 'विशेष अवसर' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, वहां चौधरी चरण सिंह ने 'अंतरजातीय विवाह' को सरकारी अफसरों के लिए अनिवार्य करार करने का सुझाव 1954 में पंडित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष रखा था।

चौधरी चरण सिंह द्वारा उठाये गये कई मुद्दों में 'गांव बनाम शहर' के विकास का मुद्दा बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह मुद्दा जहां एक तरफ उनके समाज दर्शन से जुड़ा हुआ है, वहीं यह पिछले 47 सालों की गलत अर्थनीतियों के नतीजों से देश

को बचाने के लिए अत्यावश्यक भी है। देश की अखंडता देश के सभी हिस्सों के समान रूप से विकास पर टिकी हुई है। अगर शहर द्वारा गांव का शोषण जारी रहा, तो न सिर्फ आर्थिक विकास ठप्प हो जायेगा, बल्कि साथ-ही-साथ नये सामाजिक और राजनीतिक तनाव पैदा होंगे, जिन्हें संभाल पाना असंभव हो जायेगा।

आधुनिकता के नाम पर अनावश्यक, पर नये-नये मशीनी औजार देश में लाकर देश की अर्थव्यवस्था को नव उपनिवेशवाद के शिकंजों में फांसा जा रहा है। इसके भयानक परिणाम दीखने लग गये हैं। गांधी-लोहिया-चौधरी चरणसिंह द्वारा दिये गये वैचारिक विकल्प को क्रियान्वित कर ही देश को इस अनिवार्य संकट से बचाया जा सकता है।

43

अल्पसंख्यकों के सच्चे हमदर्द

रशीद मसूद*

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अन्तर्गत नूरपुर गांव के एक साधारण किसान के परिवार में जन्मे चौधरी चरण सिंह देश के एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने सदैव परिणाम की परवाह किये बिना निःसंकोच और निडर रहकर अपनी बात कही। मेरे विचार से वह स्वार्थ से परे रह कर उस बात को कहते थे जिसे उन्होंने ठीक समझा। कुछ लोग तो चौधरी साहब को बहुत अच्छा मानते थे और कुछ उन्हें बहुत बुरा। जो उन्हें अच्छा मानते थे, वे उनके अनुयायी ही हों, ऐसी बात भी नहीं। लेखक ,शिक्षक बुद्धिजीवी, अर्थशास्त्री भी उनके अनुयायी हैं, उनके राजनैतिक विरोधी तथा कांग्रेस के लोग भी हैं। चौधरी साहब को बुरा मानने वालों में व उनके विरोधियों में एक तो वे हैं जिनका उनसे कभी स्वार्थ सिद्ध न हुआ, दूसरे वे हैं जो भ्रष्टाचार और अन्य धांधलियों में संलिप्त पाये गये, जिन्हें उनसे कभी संरक्षण न मिला।

चौधरी साहब के राजनैतिक चिंतन में महात्मा गांधी के आदर्शों की प्रतिच्छाया स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। चौधरी साहब ने अपने जीवन में, महात्मा गांधी में जो नैतिकता थी, उसको उतारने का काम किया। उसी नैतिकता के फलस्वरूप ही चौधरी साहब में "गांधी-विचार" के दर्शन होते थे।

चौधरी चरण सिंह के गांव और खेत-खलिहान से जुड़े होने की वजह ही थी कि उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त सामंतवाद को समाप्त करने का विचार किया। जमींदारी उन्मूलन में उनके इन्हीं विचारों की झलक मिलती थी, जिसे आजादी के बाद सफलता मिल सकी।

हमारे देश में वर्ग विशेष द्वारा सुनियोजित षडयंत्र के तहत ऐसी व्यवस्था कायम रखने का प्रयास किया गया, जिसमें उत्पादन से जुड़े बहुसंख्यकों को अलग-थलग रखा गया था। उन्हें शेष समाज, यानी उच्च समाज के कार्यों में दखलंदाजी देने का

---

* सांसद एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

कोई हक नहीं था। चौधरी चरण सिंह ने उस व्यवस्था को, जिसके तहत आर्थिक सामाजिक स्तर से पिछड़े, गरीबों, मजदूरों और किसानों को उपेक्षित रखा गया था, तोड़ने और इन वर्गों के लोगों को संगठित करने का काम किया, ताकि उनका सामाजिक और आर्थिक विकास हो सके तथा वे देश की राजनैतिक व्यवस्था में हिस्सेदारी निभा सकें। असलियत में उनका राजनैतिक चिंतन देश के करोड़ों-करोड़ उपेक्षितों के उत्थान का चिंतन है।

विडम्बना यह है कि उसी वर्ग विशेष द्वारा चौधरी साहब के बारे में उन्हीं लोगों के विरोधी होने का प्रचार किया जाता रहा, जिनके लिए वह जीवन भर लड़ते रहे। अक्सर उन पर आरोप लगाये जाते रहे हैं कि "वह हरिजन-विरोधी थे, मुसलमानों के दुश्मन थे, शहरों और बड़ी-बड़ी मशीनों के खिलाफ थे" लेकिन इन आरोपों में सच्चाई कहां है?

चौधरी साहब पर लगाये गए आरोप सरासर गलत हैं। असलियत यह है कि उन्होंने हरिजनों-मुस्लिमों को कभी पीछे नहीं रखा। उत्तर प्रदेश में एक हरिजन को गृहमंत्री बनाया, उत्तर प्रदेश व बिहार विधान सभा में हरिजन को उपाध्यक्ष बनाया। जहां तक मुसलमानों का सवाल है, केन्द्र में उन्होंने अपनी सरकार में तीन कैबिनेट स्तर के मंत्री मुसलमान बनाये, जो अपने आप में एक रिकार्ड है और उत्तर प्रदेश कैबिनेट में मुसलमान मंत्रियों की संख्या चार थी। 1980 के लोकसभा चुनावों में मुसलमान लोकसभा सदस्य सबसे ज्यादा लोकदल से ही चुनकर आये। इसकी कोई दूसरी मिसाल भारत के संसदीय इतिहास में नहीं मिलेगी।

अपने मुख्यमंत्रित्व काल में चौधरी साहब ने उर्दू बहुभाषी इलाकों के लिए उर्दू भाषा में सरकारी गजट छपवाए जाने की शुरूआत की। उन्होंने 1979 में पहली बार आदेश पारित किया कि पी.ए.सी. में मुसलमानों की भर्ती की जाए ताकि उनका भी प्रतिनिधित्व पी.ए.सी. में हो सके। चौधरी साहब के कहने से ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास ने 1979 में आठवीं कक्षा तक उर्दू शिक्षा लागू करने के आदेश दिए लेकिन सन् 1980 में इंका सरकार ने आते ही इस आदेश को रद्द कर दिया था।

चौधरी साहब न तो शहरों के खिलाफ थे और न बड़ी मशीनों के। उनका मानना था कि जब तक गांव खुशहाल नहीं होगा-देश खुशहाल नहीं होगा। गांव के विकास को उन्होंने देश के विकास की दिशा में सर्वोपरि माना था। बड़ी मशीनों के संदर्भ में उनका कहना था कि 'जो वस्तु हाथ से बन सकती है, उसे बड़ी मशीनों से न बनाया जाए।' यदि इसी बात से उन पर, बड़ी मशीनों के विरोधी होने का आरोप लगाया जाये तो यह कहां तक न्याय संगत है?

चौधरी साहब नारों की राजनीति में विश्वास नहीं करते थे। वह काम में विश्वास करने वाले आदमी थे। चौधरी चरण सिंह ने सदैव इस बात पर जोर दिया कि जहां

तक संभव हो सके, जीवन सादगी से व्यतीत करना चाहिए। भ्रष्टाचार के वे कट्टर विरोधी रहे। उन्हें मौका नहीं मिला और मिला भी तो वह अल्पावधि के लिए, अन्यथा भ्रष्टाचार जैसी बीमारी का इस देश से अन्त हो जाता।

चौधरी साहब की ईमानदारी किसी भी शंका से परे थी। उनका निजी जीवन निष्कलंक तथा एक खुली किताब है।

चौधरी साहब शुरू से ही किसान की बहबूदी के हिमायती रहे। वह किसान की समस्याओं को बखूबी जानते थे। उनका स्पष्ट अभिमत था कि देश के विकास की रीढ़ किसान है। नागपुर में सम्पन्न कांग्रेस महाधिवेशन में तत्कालीन प्रधानमंत्री और देश के एकछत्र नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू के सहकारी कृषि सम्बन्धी प्रस्ताव का चौधरी साहब द्वारा जर्बदस्त विरोध करने की यही वजह रही। इस संदर्भ में उनकी धारणा थी कि सहकारिता के माध्यम से संस्थाओं को प्रभुत्व देकर व्यक्ति के अभिक्रम और स्वातंत्र्य को कमजोर बनाने का काम किया जायेगा। जब उन्होंने यह समझ लिया कि गांव और किसान की तरक्की की बाबत काम करने का कांग्रेस सरकार का सोच ही नहीं है तो उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और तब से आखिरी सांस तक वह किसानों, मजदूरों, गरीबों के लिए लगातार लड़ाई लड़ते रहे। यही सब कारण उन्हें "किसानों के रहनुमा" के दर्जे में लाकर खड़ा कर देते हैं।

चौधरी साहब स्पष्टवादी थे। उन्होंने साम्प्रदायिकता के सवाल पर, देश की एकता और अखंडता के मुद्दे पर, दंगों के सवाल पर, हिन्दू-सिख-मुस्लिम किसी पर भी होने वाले जुल्म के सवाल पर अपनी बात साफ कही। सन् 1980 में जब सम्भल और मुरादाबाद के दंगे हुए, तो चौधरी साहब ने दंगे के दूसरे दिन ही 14 अगस्त, 80 को बागपत की सभा में इसका जोरदार विरोध किया। साम्प्रदायिक विद्वेष के तहत पंजाब में हिन्दुओं, पंजाब के बाहर मुसलमानों, दिल्ली में सिखों पर जो जुल्म ढाये गए, चौधरी साहब ने उनका खुला विरोध किया।

चौधरी चरण सिंह की गांधीवादी अर्थनीति वास्तव में देश के दस्तकारों के महत्व को बढ़ाने, उनको उचित मजदूरी दिलाने, खेत-खलिहान से जुड़े लोगों के विकास और छोटे उद्योगों को बढ़ाने की नीति है इन सारी बातों को लोगों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हम सब की है। असलियत तो यह है कि जब तक इन सवालों को जनता के सामने रखने का काम नहीं किया जायेगा, जिसमें हम आज तक पिछड़े रहे हैं, तब तक एक वर्ग विशेष द्वारा जो वास्तव में इन तबकों की बहबूदी नहीं चाहता, चौधरी साहब के बारे में हरिजन, मुस्लिम और शहर विरोधी होने का दुष्प्रचार किया जाता रहेगा।

44

सामाजिक परिवर्तन के प्रवर्तक

राम विलास पासवान*

चौधरी चरण सिंह जी देश की राजनीति के ऐसे महापुरुष थे, जिनकी छत्रछाया में रह कर हम लोगों को सामाजिक-आर्थिक क्रांति के लिए संघर्ष करने और राजनीति करने का मौका मिला। दरअसल चौधरी साहब का विश्लेषण करना कोई आसान काम नहीं है। सच तो यह है कि चौधरी साहब के बारे में जो बातें कही जाती थीं, यानी उनके विरोध में जिस तरह का कुप्रचार किया जाता था और जब कोई व्यक्ति उनके समीप आकर उनके व्यवहार,उनका रहन-सहन, क्रिया-कलाप, सादगी देखता था, तो वह सहज ही विश्वास ही नहीं कर पाता था कि यह वही व्यक्ति है, जिसके बारे में इतने सुनिश्चित तरीके से कुप्रचार किया गया है। वह पाता था कि उन बातों का चौधरी साहब के जीवन से कोई सामंजस्य ही नहीं था।

डा. राम मनोहर लोहिया ने समाजवादी आन्दोलनों में "संसोपा ने बांधी गांठ, पिछड़ा पावे सौ में साठ" का नारा दिया था। लेकिन सही मायने में देखा जाय तो यदि उस नारे को जमीन पर उतारने का किसी ने काम किया तो उस व्यक्ति का नाम था-चौधरी चरण सिंह। मैं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट भाईयों की तो नहीं जानता कि वह स्वयं को पिछड़ा मानते हैं या नहीं, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि लोहिया के बाद समूचे उत्तर भारत के पिछड़े लोगों ने अपने-अपने नेताओं का साथ छोड़ दिया और जिस व्यक्ति के साथ और जिसे अपना नेता माना, उस व्यक्ति का नाम चौधरी चरण सिंह ही था। इसका जीता-जागता सबूत यह है कि उस समय के लोकदल के, जिसका नेतृत्व चौधरी साहब करते थे, लोकसभा में 42 सदस्य चुनकर आये थे, उनमें 9हरिजन थे,11अल्पसंख्यक समुदाय के(मुस्लिम) थे और शेष पिछड़ी जातियों के तथा किसान तबके से थे। मेरा यह स्पष्ट मानना है कि वे तबके, जिनका समाज में कोई स्थान नहीं था, जिनकी आवाज नहीं थी, राजनीति में हिस्सेदारी न

---

* सांसद एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

के बराबर थी, उन तबकों के लोगों को चौधरी साहब ने समाज में जगह दिलाई। उन्हें जुबान दी और देश की राजनीति में हिस्सेदारी का अहसास दिला कर उन्हें एम.एल.ए.,एम.पी. बनाया। मैं समझता हूं कि देश के जो महान समाजवादी चिंतक भी रहे हैं, उनके आदर्शों को भी यदि किसी ने कर्म में उतारने का काम किया था, तो देश के उस महान सपूत का नाम ही आता है- चौधरी चरण सिंह।

चौधरी साहब कहते थे कि "जो जमीन को जोते-बोये, वह जमीन का मालिक होय।" इसको उन्होंने करके भी दिखा दिया। उत्तर प्रदेश में अपने राजस्व मंत्री काल में किये गये महत्वपूर्ण काम "भूमि सुधार" के तहत उन्होंने जमीन को जोतने वाले खेतिहर किसान को उसका मालिक बना दिया। यहां यह जान लेना जरूरी है कि भूमि सुधार कानून तो अन्य प्रदेशों में भी बने, लेकिन उसका सही मायने में यदि कहीं क्रियान्वयन हुआ, तो वह प्रदेश है उत्तर प्रदेश और यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काम करने का श्रेय चौधरी साहब को ही है।

चौधरी साहब शुरू से ही दिल से जात-पात के घोर विरोधी थे। वह चाहते थे कि देश से जातिवाद का कोढ़ खत्म हो। वह मानते थे कि यह जातिवाद का रोग ही है, जिसने भेदभाव और छुआछूत को बढ़ाने का काम किया है। मुझे याद आता है कि 1980 से 1984 के बीच जब हम,चाहे वह अल्पसंख्यक का सवाल हो, हरिजन का हो, पिछड़ों का हो, आदिवासी-गिरिजनों का सवाल हो, मंडल कमीशन का सवाल हो या किसान का मामला हो, इसके अलावा अन्य जन-समस्याओं के लिए लोकसभा को झकझोरने का काम करते थे, तब हमें उस समय गर्व होता था जब बाद में चौधरी साहब हम लोगों की पीठ थपथपाते थे। उनके मन में गरीबों के प्रति कितना दर्द था, इस सन्दर्भ में एक बात मैं बताना चाहता हूं- एक बार "स्टेट्समैन" अखबार में एक गरीब बच्चे का अधनंगा फोटो छपा। उसे देखकर वह रोने लगे और काफी देर तक रोते रहे। उन्होंने बाद में कहा कि "इस मुल्क के गरीब की यह हालत है। एक पत्थर तोड़ने वाली औरत के बच्चे के पास तन ढकने तक को कपड़े नहीं हैं और वह नंगे बदन रहने पर मजबूर है।" उन्होंने उस समय अपनी पार्टी लोकदल के महासचिव को बुलाकर कहा था कि—"इसी फोटो की फोटोस्टेट कापी करवा कर मुल्क के हर गांव-गांव में पहुंचाओ, ताकि गांव देहात में रहने वालों को यह महसूस हो सके कि आजादी के इतने साल के बाद भी इस मुल्क में गरीब किस हालत में जीने को मजबूर है। यह असली हिन्दुस्तान है।" सच तो यह है कि उनके मन में देश के सदियों से दबे-थके, गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोगों के लिए दर्द था और वह हर पल इनकी बहबूदी के लिए सोचते रहते थे।

45

उनके सपनों से जुड़ा भावी जय-पराजय का सवाल

शरद यादव*

इस देश में गरीब आदमी की लड़ाई लड़ने वाले जो महान योद्धा हुए हैं, उन इने-गिने लोगों में महात्मा गांधी के बाद यदि किसी ने हिन्दुस्तान के गरीबों-किसानों-गांववालों और सदियों से शोषित-पीड़ित लोगों के हकों के लिए दिल्ली के सिंहासन तक दस्तक देने और उनकी कराह के खिलाफ आवाज बुलंद करने का काम किया है, उस व्यक्ति का नाम था चौधरी चरण सिंह। ऐसे महापुरूष के साये में रह कर, प्यार में, दुलार में और गुस्से में हमने बरसों गुजारे हैं और उनके बताए रास्ते पर चलकर ही हम जैसे लोग विधान सभा और लोक सभा तक पहुंचने में कामयाब हो सके हैं।

हिन्दुस्तान के गरीब, मेहनतकश पसीना बहाने वाले इंसान की सदियों से जो समस्याएं रही हैं, उन समस्याओं के निदान के लिए संघर्ष करते-करते, उनकी समृद्धि के सपने संजोये दुनिया से विदा होने वाले कुछ गिने-चुने लोगों में चौधरी चरण ऐसे नेता थे, जिनका रोम-रोम गरीबों-मजदूरों और किसानों के लिए समर्पित था।स्वतंत्र भारत में बार-बार यह दोहराया गया कि भारत गांवों का देश है पर वास्तव में यह केवल खोखला नारा बनकर रह गया। ग्रामीण विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया और बड़े-बड़े उद्योग स्थापित कर, रातों-रात देश को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करने का प्रयास किया गया। इन दिवा-स्वप्नों का नतीजा यह हुआ कि देश की अधिकांश सम्पदा शहरी क्षेत्रों में सिमटने लगी। कारण आजादी के बाद देश की सत्ता पंडित नेहरू और उनके ऐसे समर्थकों के हाथों में पहुंच गई, जिन्होंने महात्मा गांधी और उनके आदर्शों को, उनकी नीतियों और कार्यक्रमों को कब्र में गाड़ने का काम किया। वे किसानों, ग्रामीणों और उनकी समस्याओं से पूरी तरह अपरिचित थे। यही वजह रही कि उन्होंने देश के विकास के लिए जो योजनाएं बनायीं, वे विदेशी परिस्थितियों के

---

* सांसद, नेता, जद संसदीय दल एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

लिए उपयुक्त थीं, भारतीय परिस्थितियों के लिए नहीं। इस देश को गुलाम बनाये रखने, राष्ट्रीय एकता व अखंडता को खतरा व देश के टूटने का प्रमुख कारण यही है। सच तो यह है कि चौधरी चरण सिंह गांधी के बाद एकमात्र ऐसे राजनेता रहे जिन्होंने इस मुल्क के गांवों की बैचेनी को सबसे ज्यादा बेहतर तौर पर समझा। यही वजह रही कि भारत की 80 प्रतिशत गूंगी जनता की बैचेनी को बुलंद आवाज दे सके।

चौधरी चरण सिंह पहले नेता थे, जिन्होंने गांव, किसान, मजदूर तथा दस्तकार के विकास के साथ-साथ देश के विकास के लिए ठोस कार्यक्रम तैयार किए। उन्होंने सैकड़ों सालों से सोई गांव की आत्मा को जगाने का काम किया। इसके लिए उन्होंने किसानों, मजदूरों तथा अपने परम्परागत पेशों की वजह से सैकड़ों सालों से अछूत मानी जाने वाली जातियों में सामाजिक-राजनैतिक चेतना जागृत की। देश की 80 फीसदी उस जनता, जो सदियों से खेत से, खलिहान से, मिट्टी से, गिट्टी से, खुरपी से, चमड़े से, ताने और बाने से या ऐसे ही अन्य धंधों से जुड़ी थी, उसे उन्हीं सीमाओं में बांध कर सामाजिक विकास की प्रक्रिया से अलग रखा गया था, को चौधरी साहब ने पहली बार अपनी पार्टी से जोड़ा तथा राष्ट्र-निर्माण के कार्य में बराबरी का हिस्सा दिया।

यह एक अजीब बात है कि आधुनिक कारखानों, मिलों, यातायात के साधनों तथा दफ्तरों में काम करने वालों को संगठित कर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने वालों को तो प्रगतिवादी नेता माना जाता है किन्तु सदियों से दलित एवं शोषित दस्तकारों एवं किसानों को संगठित करने वाले चौधरी चरण सिंह को जातिवादी का खिताब दिया जाता है।

इस तथ्य की जान-बूझ कर उपेक्षा कर दी जाती है कि जातियों की संरचना पेशों के आधार पर हुई है। सदियों से दस्तकार तथा किसान अपने पैतृक धंधों में लगे रहे और राष्ट्रीय उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाते रहे, इसके बावजूद सवर्ण समाज ने उन्हें अस्पृश्य माना।

आज सम्पूर्ण भारत के किसानों तथा दस्तकारों में राजनैतिक जीवन के प्रति जागरूकता पैदा हो गयी है। वे अपने राजनैतिक तथा सामाजिक अधिकार पाने के लिए बेचैन हैं। चौधरी चरण सिंह के अनुयायियों-समर्थकों ने इसी बेचैनी को बरकरार रखने, दिन-ब-दिन इस बेचैनी को बढ़ाने की कोशिशें कीं। उनका पहला लक्ष्य था किसानों तथा उनके आसपास के लोगों को एक मंच पर लाना। किसानों तथा उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर दिन रात काम करने वाले दस्तकारों को राजनैतिक रूप से जागृत कर, एक मंच पर लाने का अर्थ होगा, देश के 10 प्रतिशत लोगों द्वारा किये जा रहे शोषण के मूल पर चोट करना।

आज देश में-समाज में अन्तर्विरोध दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। जाति,धर्म,भाषा

का जुनून देशवासियों के सिर चढ़कर बोल रहा है। देश विपरीत दिशाओं में जा रहा है।

देश की सारी समस्याओं का हल चौधरी साहब की गांधीवादी अर्थनीति में निहित है। चौधरी चरण सिंह की लड़ाई महात्मा गांधी के आदर्शों की पुनर्स्थापना करने तथा देश के किसानों, मजदूरों, दस्तकारों, समाज के दबे-थके लोगों को समाज तथा देश की राजनीति में बराबरी का हिस्सा दिलवाने की लड़ाई थी।

आज चौधरी साहब हमारे बीच नहीं हैं। ऐसी स्थिति में हम सभी लोगों की जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है। हमें उनके बताये रास्ते पर चल कर देश के सामने मौजूद उन सारी समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। परीक्षा की घड़ी में हम कहां तक सफल होते हैं, यह भविष्य निर्धारित करेगा। विचारों का इतिहास काफी लम्बा है। सोच लगातार पराजित होता आया है। चौधरी चरण सिंह के सपनों को यदि ठोस शक्ल देनी है तो फिर इतिहास की परम्परागत पराजयों को याद करके नई पराजय न हो, इसका सदैव ध्यान रखना होगा।

46

सामाजिक क्रांति के जनक

अजय सिंह*

राजनीतिक जीवन की शुरूआत से जीवन के अंतिम सोपान तक जिस व्यक्ति ने इस देश के दलितों और पिछड़ों के दर्द को जिया और उनके लिए संघर्ष किया, भारतीय राजनीति के उस श्लाका पुरूष का नाम था- चौधरी चरण सिंह। 23 दिसम्बर 1902 को मेरठ कमिश्नरी की हापुड़ तहसील में, बाबूगढ़ छावनी के निकट, नूरपुर गांव में चौधरी चरण सिंह का जन्म हुआ था। गांव के परिवेश में पलते-बढ़ते हुए उन्होंने किसानों की समस्याओं और ग्राम्य जीवन की दुरूहताओं को बहुत करीब से देखा था, और देखा था उस शोषण को जिसके चलते देश का अन्नदाता खुद भूखा-नंगा रहने को विवश था। इन्हीं हालात ने उनके मन में एक संकल्प-बीज को रोपा, यह संकल्प था समाज के सबसे पिछड़े और दलित जन के अधिकारों की बहाली के लिए संघर्ष करने का। जीवन-पर्यन्त वह इसी लक्ष्य को समर्पित रहे।

चौधरी साहब से मेरा पारिवारिक सम्पर्क था। 1948 में जिस समय मेरे पिता, कैप्टन भगवान सिंह बुलन्दशहर जिले में जिलाधीश थे, चौधरी साहब उत्तर प्रदेश शासन में पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी थे। जब भी चौधरी साहब बुलन्दशहर आते, हमारा आतिथ्य अवश्य स्वीकार करते। चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन के जरिए, जिसे कियाविन्त करने पर पिताजी का और चौधरी साहब का पूर्णरूपेण मतैक्य था, जो क्रांतिकारी कार्य किया तथा इसका प्रदेश के पिछड़ों और भूमिहीनों के जीवन पर जो प्रभाव पड़ा था, उसके विषय में मुझे पिताजी से काफी कुछ सुनने और समझने को मिला।

जहां तक व्यक्तिगत सम्पर्क का सवाल है, तो यह अवसर मुझे 1977 में मिला। मैं विदेशों में पढ़ाई पूरी कर वापस लौटा था और 'इंडिया टुडे' पत्रिका में पत्रकार के तौर पर अपने कैरियर की शुरूआत की थी। चौधरी साहब उन दिनों जनता शासन

---

* पत्रकार तथा भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

में गृहमंत्री थे। मैं 'इण्डिया टुडे' की ओर से उन्हें इन्टरव्यू करने गया था। चौधरी साहब के बारे में जिस अनुशासन और सादगी की बात मैं सुनता आया था, उनसे मिलकर मुझे वैसी ही अनुभूति हुई। कभी-कभी वह पत्रिका की 'लाइन' से भले नाराज हो जाते थे किन्तु व्यक्तिगत तौर पर मेरे प्रति उनका स्नेह सदैव बढ़ता ही रहा।

जिस समय चौधरी साहब भारत सरकार में गृहमंत्री एवं प्रधानमंत्री थे, उन्होंने मुझे अपने साथ काम करने को बुलाया किन्तु मैंने उस समय विनम्रता-पूर्वक अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी, क्योंकि वे उस समय सत्ता में थे और उनके साथ काम करने वालों की कोई कमी नहीं थी। 1980 में, जब विधानसभा चुनाव हो रहे थे तथा चौधरी साहब की पार्टी सत्ता से बाहर आ चुकी थी, उन्होंने मुझे फिर बुलाया और अपने साथ जुड़ जाने को कहा। इस बार मैं ना न कर सका और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ग्रुप की डिप्टी एडीटरी छोड़कर उनके सम्पर्क में आ गया। तब से अन्तिम समय तक उनका सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ। इस दौरान चौधरी साहब ने मुझे जितना स्नेह दिया, उतना ही विश्वास भी।

1980 से 85 तक ऐसे बहुत से अवसर आये, जब मुझे वस्तुस्थिति के प्रति उनके नजरिए को, अवसर विशेष पर उनकी निर्णय लेने की क्षमता और दिशा दृष्टि को, बहुत करीब से समझने का मौका मिला। उस अनुभव के आधार पर यों तो चौधरी साहब के व्यक्तित्व और कृतित्व पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं किन्तु चौधरी साहब के साथ बीते वर्षों के दौरान, अपने अनुभवों के आधार पर, यहां मैं उन दो बातों का उल्लेख करूंगा, जो उन्हें अन्य भारतीय राजनेताओं से अलग करती हैं।

पहली बात तो यह है कि भारतीय राजनीति में हम बड़े-बड़े नेताओं के जैसे-जैसे करीब पहुंचते जाते हैं, वैसे-वैसे उनका कद छोटा पाते हैं किन्तु चौधरी साहब के साथ इसका उल्टा था। उनको जितना करीब से कोई देखता, उनकी सरलता, सादगी, अनुशासन, विनम्रता तथा ईमानदारी के नये-नये पृष्ठ उसके सामने खुलते जाते और इस तरह से उनका कद करीब आने पर और ऊंचा नजर आता था।

दूसरी बात-चौधरी साहब के सहयोगी के रूप में काम करते हुए मुझे बहुत से राजनेताओं के सम्पर्क में आने का तथा उन्हें करीब से बरतने का मौका मिला। मैंने चौधरी चरण सिंह के अलावा- श्री मधु लिमये को छोड़कर-सामान्यतः अन्य राजनेताओं की गहन अध्ययन में अभिरूचि नहीं पाई। चौधरी साहब के अंदर पढ़ने की एक भूख थी, जो जितनी मिटती थी, उतनी ही बढ़ती थी। यद्यपि निहित स्वार्थी तत्व उनकी छवि बिगाड़ने के प्रयास में लगे ही रहते थे किन्तु चौधरी साहब इस तरह की ओछी आलोचनाओं से अप्रभावित रहते थे।

चौधरी साहब जब किसी बात को सिद्धांत-रूप में अपना लेते थे, तो उसका पहले गहन अध्ययन और मनन करते थे। उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि

सुधार विधेयक उनके गहन चिंतन और अध्यवसाय का परिणाम था और यही कारण था कि उक्त विधेयक विधान सभा में मूलरूप से पारित हो सका तथा उसकी एक भी धारा को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकी।

चौधरी साहब की यह विशेषता थी कि वह अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों को उनके विभागों से सम्बन्धित विषयों पर लम्बे-लम्बे नोट्स भेजा करते थे। गहन चिंतन पर आधारित ये नोट्स बेहद महत्वपूर्ण होते थे तथा नीति निदेशक सिद्धान्तों के रूप में इन पर अमल किया जा सकता था।

पश्चिमी जीवन शैली की भौंडी नकल करने तथा अंग्रेजी की अधकचरी जानकारी से स्वयं को महिमामंडित समझने वाले, ऐसे लोगों के लिए जो चौधरी चरण सिंह को गांव-गंवई का प्रतीक मानते रहे हैं, यहां एक बात का उल्लेख करना गैर-मुनासिब न होगा। चौधरी साहब का जितना अच्छा अधिकार हिन्दी भाषा पर था, वैसा ही अंग्रेजी भाषा पर भी था।

'लैण्ड रिफार्म्स इन यू.पी. एण्ड दि कुलक्स' जैसी अकादमिक पुस्तक तथा 'इकोनामिक नाइटमेअर ऑफ इण्डियाः इट्स कॉजेज एण्ड क्योर' जैसी विशद् पुस्तक, जिसमें उनके आर्थिक दर्शन का निचोड़ है, भी चौधरी साहब नेअंग्रेजी में लिखी थीं। इस सबके बावजूद चौधरी साहब की हिन्दी के प्रति अनन्य निष्ठा थी तथा सार्वजनिक मंचों से वे कहा करते थे कि राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम, भाषा के स्तर पर, हिन्दी ही कर सकती है।

अध्ययन और लेखन से चौधरी साहब जीवन के अंतिम सोपान तक जुड़े रहे। जीवन के अंतिम दिनों में ही उन्होंने 'लैण्ड रिफॉर्म्स इन यू. पी. एण्ड दि कुलक्स' पुस्तक लिखी, जिसमें उत्तर प्रदेश के भूमि सुधारों तथा जमींदारी उन्मूलन का विशद विवेचन किया है। 1985 में अस्वस्थ होने से पूर्व वे ' जनता पार्टी कैसे बनी और किन विसंगतियों के चलते टूटी' इस विषय पर एक पुस्तक लिख रहे थे, साथ ही आरक्षण पर भी एक पुस्तक लिख रहे थे।

चौधरी साहब अस्वस्थ होने से पूर्व अपनी फाइलों को भी पुर्नव्यवस्थित कर रहे थे। इन सब कार्यों में, मैं उनकी सहायता कर रहा था। इस कार्य के परिणामस्वरूप कोई नई कृति हमारे सामने आती किन्तु दुर्भाग्य से उनकी अस्वस्थता और अन्ततः अवसान के कारण इस महत्वपूर्ण कृति से हम वंचित रह गये।

यों तो चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश में सत्ता में रहते हुए गरीबों और पिछड़ों के लिए बहुत कुछ किया। किन्तु इस दिशा में उनका जो अप्रतिम योगदान था- वह था इस वर्ग में राजनीतिक चेतना जागृत करना। उन्होंने समाज के दबे-थके वर्गों के मन में, सत्ता में भागीदारी की भावना पैदा की। यह चौधरी साहब ही थे जिन्होंने उत्तर प्रदेश में अपने मुख्यमंत्रित्व काल में पिछड़े वर्ग के चार लोगों को कैबिनेट स्तर का मंत्री बनाया था।

आज देश में कोई भी राजनीतिक दल किसानों और पिछड़ों की अनदेखी नहीं कर सकता। इन हालात को पैदा करने तथा सत्ता के समीकरण में इन वर्गों को एक महत्वपूर्ण कारक की हैसियत प्रदान करने में चौधरी साहब की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

आज चौधरी चरण सिंह हम लोगों के बीच नहीं हैं किन्तु उन्होंने कर्म और चिंतन के स्तर पर जिस सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया, उस चिंतन को, उन विचारों को, इस देश के दलितों-पिछड़ों और किसानों-मजदूरों तक पहुंचाना हमारा अभीष्ट है।

47

एक दृष्टि संपन्न जननेता

उदयन शर्मा*

चौधरी चरण सिंह का लंबा राजनीतिक जीवन अनेक सफलताओं और भोलेपन में किये गये गलत फैसलों का भी लंबा सिलसिला है। लेकिन चौधरी चरण सिंह एक राजनीतिज्ञ, एक पार्टी के अध्यक्ष, एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री का नाम ही नहीं था, चरण सिंह एक विचार धारा का नाम भी था। चौधरी चरण सिंह का मतलब शहर में देहात का खामोश नहीं, आत्मविश्वास से सराबोर कदम था। चौधरी चरण सिंह का मतलब राजनीतिक सत्ता में पिछड़ों और गरीबों की भागीदारी था। चौधरी चरण सिंह का मतलब दिल्ली की चकाचौंधी और बदबूदार भ्रष्ट सत्ता-राजनीति में ग्रामीण सुलभता, सहजता और गलतियों का प्रवेश था। चौधरी चरण सिंह एक अर्थशास्त्री का नाम था, जो भारत की समस्याओं को भारतीय परिवेश में देसी तरीकों से सुलझाना चाहता था। चौधरी चरण सिंह उस ठेठ देहाती राजनीतिज्ञ का नाम था, जिसकी राजनीति में कोई दुराव, कोई कपट नहीं था, बल्कि उसे जो अच्छा लगा, उसे ताल ठोंक कर अच्छा कहा और जो बुरा लगा, उसे खुल्लम-खुल्ला कोसा।

आजादी के बाद इस देश में हर वर्ग की लॉबी थी, हर क्षेत्र की अपनी ताकत थी, पर किसान, जो आजाद भारत की असली ताकत थे, उनकी कोई आवाज नहीं थी, उनकी कोई लॉबी नहीं थी। छठे दशक के घटनाक्रमों ने ही किसानों की आवाज को एकजुट करने की नींव डाली थी। उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक नाम काफी तेजी से सक्रिय था, जो न तो वामपंथियों की तरह लफ्फाजी में यकीन रखता था और न ही दक्षिणपंथियों की तरह शहर के बड़े व्यापारियों का हितपोषक था। यह व्यक्ति राज्य में जमींदारी उन्मूलन के लिए शिद्दत से काम कर रहा था। सिर्फ काम ही नहीं कर रहा था, वरन् निहित स्वार्थों से टक्कर भी ले रहा था। यह नाम था— चौधरी चरण सिंह, जो कभी पंडित गोविंद बल्लभ पंत से, तो कभी डॉक्टर संपूर्णानंद

* सुपरिचित पत्रकार

से लड़ते रहते थे, भूमि सुधारों के तहत, पर उस किसान को जमीन का मालिक बनाने के लिए जो भूमि पर हल चला रहा था। लेकिन यह लड़ाई चौधरी साहब के लिए नयी नहीं थी। एक गरीब किसान के घर में जन्मे चौधरी चरण सिंह की जीवन यात्रा काफी गरीबी में शुरू हुई थी। फिर भी नूरपुर में जन्मा किसान का यह बेटा जब आगरा से अपने गांव वापस आया, तब उसके घर पर नामपट्ट लगा, जिस पर लिखा था—चरण सिंह, एम. ए., एल. एल. बी.।

वकील चौधरी चरण सिंह कांग्रेसी बन चुके थे और स्वतंत्र भारत में वे किसानों के सबसे बड़े प्रवक्ता थे। उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन के दौरान चौधरी साहब को सबसे ज्यादा परेशानी अपनी यह मांग स्वीकृत कराने में हुई कि अतिरिक्त भूमि का आवंटन बिना किसी भुगतान के हो। हरिजनों के उत्थान पर कोई भाषण दिये बिना, राज्य में हरिजनों के लिए यह सबसे बड़ा काम था। गांधी-नेहरू युग के बाद चौधरी चरण सिंह एकमात्र नेता थे, जिन्होंने अपनी अलग विचार धारा का विकास किया और उसका प्रचार पूरी शिद्दत से किया। चौधरी साहब जैसा किसान नेता भारत में अब कभी नहीं होगा। आज एक नेता ऐसा नहीं है, जो किसानों की सभा में घंटों बोलता रहे, उनको आंकड़े सुनाता-समझाता रहे और श्रोता सिर्फ भाषण को सुने ही नहीं, वरन् उसकी बातों को रट कर अपने-अपने मुहल्लों में तर्क के रूप में पेश करते फिरें। यह सिर्फ चौधरी साहब का चमत्कार था। अपने श्रोताओं और अपने समर्थकों पर ऐसा कब्जा बिरलों का होता है। चौधरी साहब ने अपने राजनीतिक जीवन में कितनी भी गलतियां की हों, कितनी ही असफलताओं को झेला हो, पर उन्होंने अपने आधार पर अपने लोगों से न तो कभी नाता तोड़ा, न ही कभी दूरी बढ़ायी। प्रेस और अभिजात्य वर्ग कुछ भी कहता रहा हो, पर वे अपने आधार से हर कीमत पर जुड़े रहे और उन्हीं की बात कहते रहे। अन्यथा यह हिम्मत किस राजनेता में होती है कि वह बंबई और कलकत्ता की आमसभाओं में भी किसानों की बात कहे, कृषि के विकास के पक्ष में और बड़े उद्योगों के खिलाफ तर्क जुटाये। इसीलिए किसान चौधरी साहब को प्यार करते थे और किसानों की आवाज उठाने के लिए, जिन्हें वे चुनौती देते थे, वे उनसे नफरत करते थे। इस बूढ़े व्यक्ति का यह भी चमत्कार ही था कि आप कहीं भी हों, उनकी पार्टी के साथ या उसके खिलाफ, पर आपका चौधरी साहब से रिश्ता सीधा होता था और वह भी सिर्फ दो तरह का—या तो आप उनसे नफरत कर सकते थे, या असीम प्यार। बदले में आपको भी या तो बेहद गुस्सा मिलता था, या अगाध स्नेह—निश्छल, कांच की तरह पारदर्शी और ठेठ देहाती बुजुर्गों सरीखा।

चौधरी चरण सिंह सत्ता के बाहर से (और सत्ता के अंदर रह कर भी) राजनीतिक-तंत्र को बदलने की कोशिश कर रहे थे। चौधरी साहब की राजनीति में

यही खसूसियत थी कि उनका लक्ष्य कभी नहीं गड़बड़ाया, चाहे उसे प्राप्त करने के रास्ते पर विवाद क्यों न रहा हो। बुद्धिजीवी—खासकर शहरी अभिजात्य-ड्राइंगरूमों में बैठकर कह सकते हैं कि चौधरी चरण सिंह छठे-सातवें दशक में हर राज्य में पैदा हुए किसान नेतृत्व का ही अंग थे। इसी रौ में ये विद्वान लोग चौधरी साहब को बीजू पटनायक, चिमनभाई पटेल, देवराज अर्स, यशवंतराव चव्हाण की पांत में बैठा देते हैं। यह गलत भी है और चौधरी साहब के साथ अन्याय भी। यह सच हो सकता है कि ये सभी छठे दशक की कृषि-प्रगति और सातवें दशक की कृषि-क्रांति की देन रहे हों, लेकिन इनमें से किसी ने किसान राजनीति के लिए राजनीति नहीं की और न ही किसानों और गांवों के लिए अपनी राजनीति दांव पर लगायी। इसीलिए ये किसी-न-किसी बड़े केन्द्रीय नेता के सूबेदार तो रहे, पर स्वयं आजाद रूप से नेता नहीं बन सके और इन सभी नामों को चौधरी साहब का नेतृत्व स्वीकार करना पड़ा, चाहे बीजू पटनायक हों, चिमनभाई पटेल हों, यशवंत राव चव्हाण हों, देवराज अर्स हों या बिहार के महामाया बाबू हों। देवराज अर्स तो अपने अंतिम दिनों में लोक दल में अपनी पार्टी के विलय का फैसला ले चुके थे लेकिन उनकी असमय मृत्यु के कारण यह संभव न हो सका और बाद में आंध्रप्रदेश में चौधरी साहब के दर्जनों साथी—अर्स की मृत्यु के बाद—एन. टी. आर. के साथ चले गये, अन्यथा इतनी उम्र में भी चौधरी साहब दक्षिण भारत में घुसपैठ कर जाते। एन. टी. रामाराव इसी कारण से 1983-84 में सबसे ज्यादा आदर चौधरी चरण सिंह का करते थे और गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों में वे अकेले थे, जो चौधरी साहब के दाह-संस्कार में मौजूद थे।

यह भी सच है कि चौधरी साहब से कांग्रेसियों ने नहीं, बल्कि विरोधी दलों ने भी नफरत की थी, क्योंकि हमारा विरोध पक्ष आचार्य नरेंद्र देव-लोहिया-चरण सिंह को छोड़कर अभिजात्य के ही कब्जे में रहा है। चौधरी साहब इतने सालों तक विरोधी दलों की राजनीति में जमे रहे, तो अपने दम पर, अपने वोटरों की ताकत पर। अन्यथा चौधरी साहब के बारे में जितनी घृणित और अशोभनीय बातें भारतीय जनता पार्टी (पहले जनसंघ), संगठन कांग्रेस, जनता पार्टी के एक धड़े और खुद उनकी पार्टी के नेताओं ने कही हैं और कहते रहे हैं, वैसी बातें कांग्रेस ने राजनीतिक विरोध होने पर भी कभी नहीं कहीं। पर पटनायक, चिमनभाई, चव्हाण आदि की तरह ये भी मौका पड़ने पर मजबूरी में चौधरी साहब का नेतृत्व स्वीकारते रहे। अन्यथा ये लोग, अगर बस चलता, तो चौधरी साहब को राजनीति से निष्कासित करने की इच्छा रखते थे। लेकिन वे मजबूर थे। चौधरी साहब की ताकत का सबूत 1971, 1974, 1977, 1980, 1984 और 1985 में उनकी पार्टियों को मिले वोट हैं।

यह संभव कैसे हुआ कि उपर्युक्त नेताओं और पार्टियों से चौधरी साहब ऊपर उठ गये ? इस देश की राजनीति में कुछ बातें सबसे पहले चौधरी चरण सिंह ने कहीं और अपने पक्ष में तर्क देते समय गांधी के सोच और तर्कों को गवाही के रूप में

पेश किया। कृषि और किसान के बढ़ते प्रभाव के समय हर राज्य में इस वर्ग से नेता आये, पर चौधरी चरण सिंह, चौधरी चरण सिंह इसलिए थे, क्योंकि गांव और किसान की बात करने वाले सबसे पहले चौधरी चरण सिंह ही थे। जब वे किसान की बात करते थे, तो हर जाति का किसान उसमें शामिल रहता था और जब वे गांव की बात करते थे, तो वे कुटीर उद्योगों, हाथ से धंधा करने वाले कारीगरों और कलाकारों की बात करके एक गंभीर आर्थिक नीति पेश करते थे।

जुबान से चौधरी साहब हमेशा कड़े रहे और किसी भी बात की 100 बार तहकीकात करना उनकी आदत में शुमार था, लेकिन वे किसी भी कीमत पर अपने आधार की बात, अपने समर्थकों की बात नहीं भूलते थे। क्या इस देश में अंग्रेजी प्रेस को यह पहचान हुई कि 31 मई को चौधरी साहब के शव के पास शामली के महेन्द्र सिंह टिकैत फूट-फूट कर क्यों रो रहे थे ? सत्यपाल मलिक घंटों चौधरी साहब के शव के पास खड़े होकर क्यों रोते रहे ? इसलिए कि ये लोग आज जो कुछ भी हैं, चौधरी साहब के कारण हैं, और वे चाहे किसी भी पार्टी में रहें, चौधरी साहब को नहीं भूल सकते हैं। चौधरी साहब से पहले गांव और हस्तशिल्पियों की बात आजाद भारत में किसने की थी ? अगर हम ध्यान से देखें तो पाते हैं कि चौधरी साहब के किसान से डर कर, उनके गांव से आतंकित होकर ही सभी अन्य पार्टियों ने किसान-किसान कहना शुरू किया था। उनके बोलने के बाद ही सभी ने कारीगरों-हस्तशिल्पियों की बातें अपने चुनावी घोषणापत्रों में डाली थीं। उनकी आवाज गांवों की, पिछड़ों की आवाज बन चुकी थी। लेकिन यह भी सच है कि चौधरी साहब का पचास फीसदी वोटर इतना गरीब था कि वह उनकी सभाओं में आ सकता था, किसान घाट पर आकर उनके लिए रो सकता था, लेकिन बेचारा वोट नहीं डाल पाता था—गरीबी, शोषण और आंतक के कारण। अन्यथा चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश पर 1974 में ही कब्जा कर लिया होता।

जो वर्ग चौधरी साहब के नेतृत्व में खड़ा हो चुका था, उसका एक उदाहरण काफी है। 1980 के लोकसभा चुनाव के दौरान हेमवतीनंदन बहुगुणा कांग्रेस (इ) के सेक्रेटरी जनरल थे और पार्टी का नेतृत्व संजय गांधी के हाथों में था। चुनावों के बाद बहुगुणा जी ने मुझे बताया, "चौधरी चरण सिंह ने जीना हराम कर दिया था। हम ही जानते हैं कि हम कैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में जीते हैं। भैया यादवों का छह साल का लड़का भी हमारी पार्टी की जीप देखकर खड़ा हो जाता था और चौधरी चरण सिंह की आलोचना तो दूर, उनका नाम आते ही ईंटों से जीप गांव से बाहर कर देता था। "यह ताकत थी चौधरी साहब की 1969 से 1987 तक। यह ताकत चौधरी साहब ने अर्जित की थी 1959 में नेहरू को चुनौती देकर—आर्थिक नीतियों पर। मजेदार बात यह थी कि अपनी निजी बातचीत में वे नेहरू को अपना नेता मानते थे और कहते थे, "जवाहरलाल जी अपने अंतिम दिनों में प्लानिंग में हुई

गलती समझ गये थे, पर उसे सुधारने के लिए वे जीवित नहीं रहे।"

इन्हीं चौधरी चरण सिंह का एक महत्वपूर्ण योगदान युवा पीढ़ी को यह है कि उन्होंने एक पूरी युवा पीढ़ी राजनीति को दी। जब भी वे किसी युवा को चुनते थे, तो उसे किसी पद पर आसीन कर देते थे। हिंदी राज्यों में आज जितने प्रभावशाली राजनेता हैं, उनमें से अधिकांश कभी-न-कभी या तो चौधरी साहब के नेतृत्व में काम कर चुके हैं या फिर भूतपूर्व केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ब्रह्मदत्त या उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह की तरह वे शुद्ध चौधरी साहब के राजनीतिक उत्पाद हैं।

लेकिन मेरी दृष्टि में चौधरी चरण सिंह का सबसे बड़ा योगदान गांव, किसान या ग्रामीण कारीगरों से जुड़ी अर्थनीति या किताबें ही नहीं, बल्कि आज के परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश में उनका सबसे बड़ा योगदान हिंदू और मुसलमान सांप्रदायिकताओं को कमजोर करना था। जब तक चौधरी साहब सक्रिय रहे, उन्होंने संघियों को बकरी बना कर रखा। चौधरी साहब की जुबान कड़वी थी और अपने मुसलमान साथियों से वे काफी कड़ी बातें कहते थे, पर आचरण में वे एक महान धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व थे। इसी कारण उत्तर प्रदेश के गरीब मुसलमानों का बहुमत चौधरी साहब को वोट देता था और इसी कारण गाजियाबाद से फैजाबाद तक का मुसलमान बड़ी तादाद में चौधरी साहब का समर्थक था। चौधरी साहब के आर्थिक दर्शन में मुख्य जोर कारीगरों पर था, जिनका 90 फीसदी उत्तर प्रदेश और बिहार का मुसलमान है। यह चौधरी साहब का ही रुतबा था कि सांप्रदायिक दंगे कभी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश नहीं कर सके थे, क्योंकि 1967 से चौधरी साहब ने संघियों को गांवों से दौड़ा लिया था। उनके राजनीतिक अभ्युदय से सबसे ज्यादा नुकसान संघियों का हुआ था और राजनीतिक दृष्टि से उनकी मृत्यु से भारतीय जनता पार्टी ने राहत की सांस ली है। हरियाणा में भाजपा-देवीलाल गठबंधन भाजपा ने इसी दृष्टि से किया। भाजपा के मामले में चौधरी साहब ने 1983 में गलती की थी, इसे वे बाद में स्वीकारते थे।

चौधरी साहब का एक गुण यह था कि वे गलती करने पर मान लेते थे कि गलती हो गयी। इसका कारण यह था कि उनसे कोई भी कार्यकर्ता बहस कर सकता था। यह एक अजीब गुण था। वे अपनी पार्टी के नेताओं से न बहस करते थे, न उनको ज्यादा महत्व देते थे, पर उनकी पार्टी के युवा कार्यकर्ता उनसे जब चाहें तब, कितनी भी देर बराबरी से बहस कर सकते थे। इसी तरह की एक बहस का नतीजा था—एन. डी. ए. का दफनाया जाना। वे 1977 की अपनी एक राजनीतिक गलती के लिए स्वयं को जीवन भर खुद ही कोसते रहे। 1977 के चुनाव हो चुके थे। जनता पार्टी ने भारतीय लोकदल के चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ा था। जीत के बाद सांसदों का बहुमत बाबू जगजीवन राम को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में था। ऐसे में गांधी शांति प्रतिष्ठान में सेठ रामनाथ गोयनका की देखरेख में एक राजनीतिक षडयंत्र रचा

गया। इसमें बीजू पटनायक और राजनारायण (दोनों तब चौधरी साहब की पार्टी में थे) भी शामिल थे। राजनारायण को भेज कर अस्पताल में पड़े चौधरी साहब से चिट्ठी लिखवायी गयी कि चौधरी साहब का समर्थन मोरारजी देसाई को है। इस तरह एक एहसानफरामोश व्यक्ति इस देश का प्रधानमंत्री बन गया, जिसने पहले जे. पी. को और बाद में चौधरी साहब को सदा हेय दृष्टि से देखा। बाद में चौधरी साहब जीवन भर अपने इस निर्णय पर पश्चाताप करते रहे।

प्रेस से चौधरी चरण सिंह के रिश्ते हमेशा खराब रहे। प्रेस से उनको हमेशा शिकायत रही कि वह उनका उल्लेख जाट नेता की तरह करता रहा, एक किसान नेता के रूप में नहीं। यह बात सच भी थी, भारतीय प्रेस का एक बड़ा वर्ग उनको हमेशा पश्चिमी उत्तर प्रदेश का नेता मानता रहा। उनकी मृत्यु के बाद भी अज्ञानी पत्रकार उन्हें हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का नेता मानते रहे। ये लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार को भूल गये, जहां किसानों और पिछड़ों ने चौधरी साहब को जो प्यार और समर्थन दिया, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। उन्हें मीडिया से दूसरी शिकायत यह थी कि वह उनकी खबरें सिर्फ उतनी ही छापता है, जितनी उनके राजनीतिक झगड़ों से संबंधित होती हैं, लेकिन यह नहीं छापता कि उन्होंने नीतिगत वक्तव्य क्या दिया है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि भारतीय प्रेस 1969 से 1985 तक हर छह महीने के बाद चौधरी चरण सिंह की राजनीतिक मृत्यु की घोषणा करता रहा, कभी मोरारजी से मतभेद होने पर, तो कभी देवीलाल से मतभेद होने पर, तो कभी उपचुनाव हारने पर। लेकिन हर बार चौधरी साहब के राजनीतिक भविष्य के बारे में अधिकांश प्रेस गलत साबित होता रहा। प्रेस से चौधरी साहब के मनमुटाव का संभवतः एक कारण यह भी था कि चौधरी जी अपने गांव वालों को जितना समझदार और राष्ट्रभक्त मानते थे, आभिजात्य वर्ग को उतना ही अज्ञानी और गैर-जिम्मेदार मानते थे। आभिजात्य से उन्हें दिल से घृणा थी। देश का कोई भी पूंजीपति उनका दोस्त नहीं था। मेरठ के पृथ्वीनाथ सेठ एक जमाने में उनके घनिष्ठ मित्र थे, लेकिन बी. के. डी. बनने के बाद नीतियों को लेकर चौधरी जी का उनसे झगड़ा हो गया। भारतीय राजनीति में विरोधी दलों की सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि उनका नेतृत्व गरीब, भूमिहीन किसान, खेत-मजदूर और हरिजन की बात तो करता है, पर मन से स्वयं आभिजात्य वर्ग में प्रवेश पाने का इच्छुक रहता है। चौधरी साहब की ऐसी कोई तमन्ना नहीं थी। इसके विपरीत वे इस वर्ग के चरित्र से नफरत करते थे। चौधरी साहब का घरेलू रहन-सहन और व्यक्तिगत खर्च जितना साधारण और कम था, उसकी कल्पना किसी भी भारतीय राजनीतिज्ञ को देखकर नहीं की जा सकती। चौधरी साहब अपनी पत्नी गायत्री देवी जी के साथ जिस सादगी से रहते थे, वह आज के युग में एक विधायक के लिए भी अकल्पनीय है। जमीन पर बैठ कर वही एक सब्जी-रोटी

का खाना। न अपना घर, न कोई बैंक बैलेंस, न कोई संपत्ति।

भारतीय राजनीति में बिरले ही ऐसे नेता हैं, जो बड़े स्तर पर राजनीति में रह कर भी किसी उद्योगपति से चंदा न लें। चौधरी साहब व उनकी पत्नी दोनों हमेशा ही आर्थिक दृष्टि से एकदम विपन्न रहे। सैकड़ों धनपशुओं ने बूढ़े आदमी के चक्कर लगाये और चले गये, पर इनमें से कोई भी चौधरी साहब को भ्रष्ट नहीं कर सका। करोड़पति बाप के घर पैदा होकर शोषण और लूट की कमाई से मजे में जीवन निर्वाह करके कोई भी सेठ या राजनेता ईमानदारी की हुंकारें भर सकता है, लेकिन एक गरीब किसान के, खपरैल के घर में पैदा हुआ व्यक्ति अंत तक ईमानदार बना रहे, असली तपस्या वही है। चौधरी चरण सिंह इस तपस्या में खरे साबित हुए थे। शायद इसीलिए अक्सर बिहार की गरीबी की बात करते समय, बिहार के पिछड़ों-हरिजनों की बात करते समय चौधरी साहब को मैंने रोते देखा था। चौधरी साहब की सबसे बड़ी शक्ति यह थी कि उनके व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन में अंतर नहीं था।

चौधरी चरण सिंह विरोधी दल के नेता थे। लेकिन उन्होंने विरोध को कभी भी राष्ट्रहित से ऊपर नहीं माना। वे राष्ट्रीय आंदोलन की उपज थे, इसीलिए वे घनघोर राष्ट्रभक्त थे। इंदिरा गांधी से वे आर्थिक नीतियों के कारण और उत्तर प्रदेश-हरियाणा के कुछ नेताओं के कारण बेहद नाराज रहते थे, पर 1984 में ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद उन्होंने खुल कर इस कार्रवाई का समर्थन किया था, जबकि प्रकाश सिंह बादल से उनकी गहरी छनती थी। किंतु नवंबर में जब सिख विरोधी दंगे हुए, तो चौधरी चरण सिंह विरोधी नेताओं में सबसे पहले थे, जिन्होंने दंगों के खिलाफ सिखों के समर्थन में बयान दिया और खुद सड़क पर आये।

भारतीय राजनीति में चौधरी साहब मनमर्जी के बादशाह थे। जिसको चाहा अपनी पार्टी में रखा, जिसको चाहा निकाला। चाहे देवीलाल हों या कर्पूरी ठाकुर या बुद्धप्रिय मौर्य, इन लोगों ने चौधरी साहब को कभी पसंद नहीं किया, ये सभी मजबूरी में चौधरी चरण सिंह के साथ रहे। इस मजबूरी का कारण था। ये लोग बार-बार चौधरी जी को छोड़ कर भागते रहे और मजबूरी में वापस आते रहे। चौधरी साहब को लोग अक्सर सत्तापरस्त कहते हैं, पर प्रश्न यह है कि राजनीति में सत्ता के लिए कौन नहीं है ? चौधरी साहब की हैसियत विरोधी दलों में सबसे ऊंची थी, इसलिए सबको तकलीफ थी। लेकिन चौधरी साहब के कांग्रेस विरोध में एक फर्क था। चौधरी साहब का विरोध 'नेगेटिव' नहीं 'पॉजिटिव' था। उन्होंने कांग्रेस के खिलाफ एक वैकल्पिक आर्थिक कार्यक्रम दिया और इसी वैकल्पिक नीति को आधार बना कर अपनी धरती से जुड़े रहे। कार्यक्रम का जवाब कार्यक्रम से देने के कारण ही हरियाणा से उड़ीसा तक के सभी सूबेदार चौधरी साहब की छाया में इकट्ठा होते रहे।

चौधरी साहब अपनी समस्त सफलताओं-असफलताओं के बावजूद भारतीय

राजनीति को एक स्पष्ट धारा प्रदान कर गये हैं। वे इसीलिए याद नहीं किये जायेंगे, क्योंकि वे उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार या राजस्थान में अपने बूते पर विधायक चुनवा सकते थे, या वे केंद्र सरकार के गृहमंत्री या फिर प्रधानमंत्री रहे थे। उनको इसलिए याद किया जायेगा कि एक गरीब किसान के बेटे ने उस वर्ग को आवाज दी, जो शोषित था, जिसकी कोई लॉबी नहीं थी। चौधरी साहब के कारण ही हर पार्टी में आज किसानों की, पिछड़ों की, कारीगरों की और गांव वालों की आवाज है। चौधरी साहब के कारण ही आज शामली में महेंद्रसिंह टिकैत पैदा हो सकते हैं। चौधरी साहब को किसानों-गांव वालों के ऐसे नेता के रूप में याद किया जायेगा, जिसने इनको आवाज और नयी दिशा दी, जिम्मेदारी और अक्खड़पन के साथ।

48

एक विरोधी की नजर में चौधरी चरण सिंह

प्रताप कुमार टण्डन*

कम्युनिस्ट पार्टी के किसान मोर्चे पर काम करने वाले एक कार्यकर्ता के नाते मैं चौधरी चरण सिंह के विचारों का शुरू से कट्टर विरोधी रहा हूं। किन्तु फिर भी जब-जब कभी भी मेरी मुलाकात चौधरी साहब से हुई, मैंने विचारों की तीखी नोक-झोंक के बाद यह पाया कि वे न सिर्फ अपने विचारों के प्रति दृढ़ थे बल्कि विरोधी विचारों का सम्मान करना जानते थे तथा अपने विचारों पर उतना ही दृढ़ रहने वाले साधारण से साधारण ईमानदार कार्यकर्त्ता को अपना स्नेह भी प्रदान करते थे। 1953 से लेकर 1978 तक अनेक बार चौधरी साहब से मेरी भेंट हुई और कुछ ऐसे अवसरों का जिक्र करके मैं चौधरी साहब के व्यक्तित्व के इस पहलू का उल्लेख करना चाहूंगा।

देश के प्रथम आम चुनावों के बाद पार्टी ने मुझे पूर्वी जिलों से हटाकर (जहां से मैंने अपना किसान कार्य आरम्भ किया था) राज्य केन्द्र लखनऊ में, दमन के एक दौर के बाद उत्तर प्रदेश किसान सभा के राज्य केन्द्र को पुनर्गठित करने की जिम्मदारी सौंपी। उस समय उत्तर प्रदेश जमींदारी उन्मूलन तथा भूमि सुधार अधिनियम, इलाहाबाद हाई कोर्ट द्वारा लम्बे अरसे के बाद, वैध घोषित होने के बाद कानून का रूप धारण कर रहा था तथा उस पर राजनैतिक क्षेत्रों में काफी गरमागरम बहस चल रही थी। सभी जानते हैं कि 1945 में बनी जमींदारी विनाश समिति की रिपोर्ट तथा इस रिपोर्ट के आधार पर इस अधिनियम को तैयार करने में सबसे प्रमुख योगदान चौधरी साहब का ही था।

चौधरी साहब जोतों की हदबन्दी के सिद्धान्त रूप से विरूद्ध थे। उनका कहना था कि ढाई तीन एकड़ से कम की और लगभग 15 एकड़ से अधिक की जोतें अलाभप्रद होती हैं। इसलिये उनकी राय में भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े बांटना भूमि जैसे दुर्लभ संसाधन को बरबाद करना है। क्योंकि यह छोटी जोत वाले खेती में पर्याप्त

* संयुक्त सचिव, अखिल भारतीय किसान सभा

पूंजी लगाकर उसका सर्वाधिक लाभप्रद उपयोग नहीं कर पायेंगे। उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री के रूप में उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी, "उत्तर प्रदेश में कृषि क्रान्ति"। इस पुस्तक में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि यदि उनका बस चले तो इन छोटी जोत वालों में भूमि वितरित करने के बजाय, उनके पास की भूमि लेकर उन्हें दूसरे घरेलू छोटे उद्योगों में लगाया जाय (जैसे मोमबत्ती, कागज, दियासलाई आदि) और इनमें बड़े व्यवसायियों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। उन्होंने इस पुस्तक में यह भी कहा है कि ऐसा वे राजनैतिक कारणों से नहीं कर पा रहे हैं। 15 एकड़ से बड़ी जोतों के बारे में उनके विचार यह थे कि उन्हें खरीद कर या किसी और तरीके से और अधिक भूमि हासिल करके अपनी जोत का आकार बढ़ाने से रोक दिया जाये—उत्तराधिकार के फलस्वरूप यह जोतें अपने आप कई व्यक्तियों में बंटते-बंटते छोटी हो जायेंगी।

हम जोतों की हदबंदी के द्वारा भूमि जैसे खेती के प्रमुख संसाधन के अधिक न्यायपूर्ण वितरण के सदा प्रबल पक्षधर रहे हैं। हम अब भी समझते हैं कि कांग्रेसी सरकारों ने जान बूझकर हदबन्दी कानूनों में ऐसे चोर दरवाजे छोड़ रखे हैं, जिससे इन कानूनों को अमल में प्रभावहीन बना दिया गया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान "जोतने वालों को जमीन दो" के नारे ने ग्रामीण गरीबों को कांग्रेस का वोट बैंक बना दिया था। पर इन कानूनों के अमल ने उनकी आशाओं को चकनाचूर कर दिया है जिसके कारण वे आज जातिवादी संगठनों की ओर खिंच रहे हैं। दूसरी तरफ ग्रामीण जीवन पर हावी भूस्वामी ही न सिर्फ प्रत्येक कल्याणकारी कानून और कार्यक्रम को लागू करने के मार्ग में बाधक बन गए हैं, बल्कि प्रत्येक रूढ़िवादी विचार और सम्प्रदायवादी राजनीति के स्तम्भ बन गए हैं, भूमि सुधारों के प्रति इस खिलवाड़ के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी पनप रही है तथा जिन क्षेत्रों में सामन्ती तत्व अधिक प्रभावशाली हैं (जैसे बिहार) वहां कृषि अर्थतंत्र अत्याधिक पिछड़ा हुआ है। इसलिये हम कृषि के विकास, गरीबी उन्मूलन तथा प्रगतिशील लोकतांत्रिक विचारों के आधार पर समाज के पुर्नगठन के लिये भूमि सुधारों को एक अनिवार्य शर्त मानते हैं। इस प्रश्न को लेकर लखनऊ के समाचार पत्र नेशनल हेराल्ड में मैंने चौधरी साहब के विचारों के विरोध में सम्पादक के नाम पत्र लिखा। मुझे यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि इस विषय पर अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों ने पत्र लिखे जैसे डा. अटल और लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के रीडर स्व. डा. वीर बहादुर सिंह। स्वयं चौधरी साहब ने मेरे जैसे साधारण कार्यकर्त्ता के तर्कों के अत्यन्त शालीन भाषा और तर्कसंगत रूप में उत्तर दिये जिसके लिए मैंने अपने अन्तिम पत्र में उनके प्रति सम्मान और आभार प्रगट किया।

इसके बाद किसान सभा के अनेक प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य होने के नाते चौधरी साहब से अनेक बार साक्षात्कार करने का अवसर मिला। पहली ही मुलाकात

में उन्होंने पूछा—आप लोगों में पी. के टण्डन कौन है ? मैंने खड़े होकर उनका अभिवादन किया तो वे बोले, "तुम तो शहर के रहने वाले हो, खेती से तुम्हारा कोई मतलब नहीं, तो तुम कैसे किसान नेता बन गए ?" मैंने कहा कि "चौधरी साहब किसान तो मैं नहीं हूं किन्तु यदि मेरा जैसा पढ़ा लिखा नवयुवक किसान जनता की सेवा में अपना जीवन निछावर करना चाहे तो आप जैसे महान किसान नेता को तो खुश ही होना चाहिये।" वे हंसे और बोले—"यदि ऐसा कर सको तो बहुत अच्छी बात है।" मैंने यह कहकर बातचीत समाप्त की—"चौधरी साहब आप का आर्शीवाद चाहिये" और उन्होंने हाथ उठाकर कहा जरूर मिलेगा।

कम्युनिस्ट पार्टी के विभाजन के बाद मैं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी में गया। 1969-70 के दौर की बात है। उस समय में बंगलादेश का युद्ध चल रहा था। भारत-चीन सम्बन्ध अत्यन्त कटु थे और बंगाल की खाड़ी में सातवें अमेरिकी बेड़े के आने से एक चिन्ताजनक स्थिति पैदा हो गयी थी। उस समय यह उचित समझा गया कि लखनऊ में एक सर्वदलीय सभा करके बंगलादेश के युद्ध के सम्बन्ध में भारत सरकार की नीति के प्रति प्रदेश की समस्त जनता का पूर्ण समर्थन व्यक्त किया जाय। श्री चन्द्र भानु गुप्त की अध्यक्षता में हुई इस सभा में चौधरी साहब और श्री राजनारायण मौजूद थे और अपनी पार्टी का मैं प्रतिनिधित्व कर रहा था। यहां यह बता देना अप्रसांगिक न होगा कि राजनारायण और मैं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के समकालीन छात्र थे।

मीटिंग शुरू होते ही श्री गुप्त बोल उठे—"उत्तर से चीन और दक्षिण से अमेरिका हमें दबोच लेगा और इस युद्ध में हम हार जायेंगे।" राजनारायण जी ने तुरन्त एक प्रस्ताव पेश किया कि अर्न्तराष्ट्रीय रंगमंच पर हमारी यह शोचनीय दशा नेहरू की गलत नीतियों का परिणाम है जिसके अर्न्तगत हमने तिब्बत चीन के सुपुर्द कर दिया। मैं उपस्थिति पुस्तिका पर हस्ताक्षर करने जा रहा था, इस प्रस्ताव के आते ही मैंने हाथ रोक दिया। मैं ऐसी सभा में भाग लेने को तैयार नहीं था जिसमें राजनारायण जी का उपर्युक्त प्रस्ताव बहस का मुख्य मुद्दा हो। चौधरी साहब ने यह देख लिया और वे भांप गए कि मैंने हस्ताक्षर पुस्तिका बिना हस्ताक्षर किये क्यों उनकी तरफ बढ़ा दी। वे बोले—"गुप्ता तुम राजनीति नहीं समझ रहे हो। न चीन हमला करेगा और न सातवां बेड़ा—वह तो एक राजनैतिक चाल है।" फिर राजनारायण जी से बोले—"वापस लो अपना प्रस्ताव, हम लोग नेहरू की अर्न्तराष्ट्रीय नीति पर विचार करने यहां नहीं बैठे हैं।" फिर अचानक मेरी ओर घूमकर बोले—"टण्डन, तुम चुप क्यों हो—क्या मैं ठीक कह रहा हूं।"

मैंने कहा कि "जब आप मेरी बात कह रहे हैं तो मुझे बोलने की क्या जरूरत है। राजनारायण को मैं जानता हूं वे हमेशा उलटी-पलटी बात कहने के आदी हो गये हैं।" राजनारायण उठ कर मेरे पास आए और बोले "भाई टण्डन, अगर तुम्हें एतराज

है तो मैं अपना प्रस्ताव वापस लेता हूं।" चौधरी चरण सिंह जी के हस्तक्षेप से सभा सफल हुई और सर्वसम्मत प्रस्ताव पास हो सका।

यहां मैं यह कहना उचित समझूंगा कि चौधरी चरण सिंह देश के उन इने गिने शीर्षस्थ नेताओं में से थे जिन्होंने पश्चिम बंगाल में 1971 के चुनावों के बाद मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के सबसे बड़ी पार्टी के रूप में चुन कर आने के बाद, उसे सरकार बनाकर विधान सभा में अपना बहुमत सिद्ध करने का मौका न देने और पुनः चुनाव कराने की घोषणा की निंदा की थी। बाद में हुए चुनावों में की गई धांधलीबाजी और सिद्धार्थ शंकर राय की सरकार द्वारा मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के विरूद्ध जारी किये गए अर्द्ध-फासिस्टी दमन के विरोध में आवाज उठाने वालों में वे एक थे।

श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा 25 जून 1975 को आपात स्थिति लागू किये जाने के सम्बन्ध में किये गये प्रसारण को सुनकर मुझे पार्टी का यह आदेश प्राप्त हुआ कि मैं कुछ अन्य नेताओं के साथ भूमिगत होकर कार्य करूं। यह स्थिति 1977 में चुनावों की घोषणा के बाद समाप्त हुई और मुझे यह आदेश प्राप्त हुआ कि मैं श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा और बाद में जेल से छूट कर आने पर चौधरी चरण सिंह से भेंट करूं। मैं उत्तर प्रदेश की पार्टी में इन दोनों नेताओं के सबसे नजदीक समझे जाने वाले व्यक्तियों में से था।

चौधरी साहब जेल से छूटकर आचार्य कृपलानी की अध्यक्षता में हुए एक सम्मेलन में उपस्थित थे जिसने आपात स्थिति समाप्त करने की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया, जिसे "आम सहमति" कहा गया था। मुझे यह आदेश दिया गया था कि मैं इस आम सहमति की एक प्रतिलिपि चौधरी साहब से लेकर उसका हिन्दी अनुवाद करूं और उसको छपवाकर वितरित करने की व्यवस्था करूं।

मैं चौधरी साहब के निवास स्थान पर "जनमोर्चा" के तत्कालीन संपादक श्री हरगोविन्द के साथ गया और जैसे ही मैंने लोकतंत्र पुर्नस्थापित करने की बात कही, चौधरी साहब बोल उठे—"तुम लोग कब से लोकतंत्र के समर्थक हो गए ? तुम्हारा बस चले तो मेरी गर्दन काट लो।" मैंने कहा—"चौधरी साहब गर्दन कटने का डर तो आपके बजाय हम लोगों को होना चाहिये क्योंकि हम इस समय इंदिरा गांधी को हटाकर आपको देश का प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं। और यदि हमें गर्दन कटने का डर नहीं है तो आपको किस बात का डर है ?" इस नोकझोंक के बाद बड़े कायदे से बातचीत हुई। वर्तमान राजनैतिक स्थिति की चर्चा करते हुए चौधरी साहब ने कहा—"इन्दिरा गांधी तो झूठ मुजस्सिम है। मगर मैं क्या करूं, मेरे साथ भी कुछ ऐसे लोग हैं जिनके कौल फैल का कोई एतबार नहीं। (उन्होंने कुछ नाम लिये जिनका इस समय जिक्र करना उचित नहीं होगा) अगर तुम्हारे जैसे दो तीन भी कार्यकर्ता मिल जायें तो कुछ काम आगे बढ़े।" मैंने फिर चुटकी लेते हुए कहा कि "चौधरी साहब क्या बात है कि आपके पास केवल ऐसे ही लोग आते हैं जिनके कौल फैल

का एतबार आपको नहीं और मेरे जैसे लोग कम्युनिस्ट पार्टी ही में जाना पसन्द करते हैं। इस बात पर आपने कभी सोचा ?"

चौधरी साहब हंसे और बोले भई अब बात खत्म करो, फिर मिलेंगे। हम लोग उठे और मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ तब कि जब चौधरी साहब हमें नंगे पांव चलकर सड़क तक पहुंचाने आए।

चौधरी साहब जनता पार्टी की तरफ से पूरे उत्तर भारत के लिये 1977 के चुनाव में उम्मीदवारों का चयन करने के लिये सर्वाधिकार प्राप्त नेता बनाए गए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के उत्तर प्रदेश के मंत्री स्व. शंकर दयाल तिवारी के साथ मैं उनके बंगले पर पार्टी की ओर से यह कहने के लिए भेजा गया कि हमारी पार्टी के लिये कम से कम एक-दो सीटें छोड़ दें। हमने पांच सीटों के नाम पेश किये और केवल एक सीट पर सन्तोष करने का संकेत दिया।

चौधरी साहब टिकटार्थियों की भीड़ से घिरे अपने बंगले के लॉन में बैठे थे। हम लोगों को देखते ही बोले—"जरा देर लॉन के एक कोने में बैठ जाओ, देखते हो कैसे लोगों से मेरा पाला पड़ा है। थोड़ी देर में इनसे छुट्टी लेकर तुमसे बात करूंगा।" उनका नौकर तीन कुर्सियां डाल कर चला गया।

थोड़ी देर में चौधरी साहब आये। मैंने देखा उनकी कुर्सी छांव में है और जाड़े के दिन थे। मैं उनकी कुर्सी को हटाकर धूप की ओर ले जाने लगा। वे हंसते हुए बोले—"कुर्सी तो खिसका लोगे। मगर राजनीति में जरा भी नहीं खिसकते हो। तुमने अपनी पार्टी के दो एम. एल. ए. के वोट खराब किये और हमारे विधान परिषद के उम्मीदवार को नहीं दिये।" मैंने कहा—"चौधरी साहब आप अपने विचारों की दृढ़ता के लिये मशहूर हैं और मैं तो उसी का अनुकरण कर रहा हूं। कहीं आप कुछ ढीले तो नहीं पड़ गए हैं ?"

इसके बाद बातचीत शुरू हुई। चौधरी साहब केवल इसके लिए तैयार थे कि हमारे एक साथी को अपने चुनाव चिन्ह पर लड़ने का टिकट दे दें। मगर हमारे लिये अपनी पार्टी के चुनाव चिन्ह पर लड़ने के लिये एक भी सीट छोड़ने को तैयार नहीं हुए। बातचीत विफल रहने पर मैंने कहा—"हम पांच गांव मांग रहे थे, आप एक भी देने को तैयार नहीं हैं। अब केवल यही होगा कि धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में आपसे हम युद्ध करें। दोबारा मैं बात करने नहीं आऊंगा।"

चौधरी साहब ने मुस्कराते हुए मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा—"ऐसा मत कहो। हम फिर मिलेंगे। तुम जब चाहो मिलने आ सकते हो। वक्त फिर मिलाएगा। परिस्थितियां फिर मिलाएंगी।"

यह शब्द आज भी मेरे कान में गूंज रहे हैं क्योंकि आज फिर वैसा ही वक्त आ गया है।

और उदाहरण देना—और घटनाओं का जिक्र करना अब मैं जरूरी नहीं समझता।

चौधरी चरण सिंह किसान समस्याओं के विशेषज्ञ थे और उन्होंने अपने देश के ही नहीं, अनेक देशों के कृषि विकास का गहन अध्ययन किया था। विचारों की दृष्टि से दो विपरीत छोर पर खड़े होने के बावजूद उनके साथ वाद-विवाद में मुझे सदा आनन्द आता था क्योंकि मुझे बहुत सी नई बातें मालूम हो जाती थीं। मैं चौधरी साहब के बारे में केवल इतना ही और कहना उचित समझता हूं कि वे उस समय भी जब मैं उनके तर्कों का डटकर विरोध करता था, बुरा नहीं मानते थे और अक्सर कहते थे "मैं, तुमने जो कहा है, उस पर फिर से सोचूंगा।"

चौधरी साहब मेरे जैसे साधारण कार्यकर्ता के साथ समानता का व्यवहार करते थे, छेड़ कर बातचीत करते थे और मुझसे कहते थे तुम और अध्ययन करो, गांव जाकर देखो—यह उनकी महानता थी जिसके प्रति मैं आज भी नतमस्तक हूं। यही उनके प्रति मेरी श्रद्धांजलि है।

49

उनका सपना था गांव, कृषि और किसान की बहबूदी

राम कृष्ण हेगड़े*

गांधी जी के बाद देश में यदि कोई नेता हुआ, जिसने गांव, देहात में रहने-बसने वाले लोगों, गरीबों, किसानों, मेहनतकशों के हितों की आवाज उठाई, उनके लिए संघर्ष किया, उस व्यक्ति का नाम था चौधरी चरण सिंह। मेरा उनसे परिचय तो वैसे कई सालों से था, लेकिन 1977 में जनता पार्टी की जब सरकार बनी, तब मेरा उनसे परिचय प्रगाढ़ता में तब्दील हो गया। मैं जनता पार्टी व जनता संसदीय दल दोनों का जनरल सेक्रेटरी था। इस नाते उस दौरान मुझे चौधरी साहब से मिलने और विचार-विमर्श करने का कई बार मौका मिला और तभी उनके जीवन के अनछुऐ पहलुओं के बारे में मुझे जानकारी मिली।

चौधरी साहब बहुत ईमानदार, सिद्धांतवादी और सादगी पसंद इंसान थे। उनका नेतृत्व कितना कुशल और प्रभावी था, जिसका वर्णन करना मेरे जैसे व्यक्ति के बस के बाहर की बात है। फिर भी मैं एक दृष्टांत देना आवश्यक समझता हूं। एक बार बहैसियत जनता पार्टी के जनरल सेक्रेटरी मुझे मिजोरम व नागालैण्ड जाने का मौका मिला। मैंने वहां जाकर जांच की और आने के बाद प्रधानमंत्री व गृहमंत्री को अपनी रिपोर्ट दे दी। वैसे सरकारी स्तर पर भी जांच की गयी थी। रिपोर्ट देने के दो-तीन दिन बाद ही यकायक मुझे चौधरी साहब का फोन आया कि वह मुझसे बात करना चाहते है। मैं आफिस में बैठा संगठन सम्बंधी फाइलों को देख रहा था। मैंने उनसे कहा कि आप जब भी बतायें, मैं आ जाऊंगा लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि नहीं, मैं आपके पास वहीं आ रहा हूं। वह जनता पार्टी के कार्यालय में आये और अपने साथ वह फाइल भी लाये। उन्होंने आते ही मुझसे कहा कि इस रिपोर्ट में सच्चाई है। इतना सादा व्यक्तित्व मैंने आज तक नहीं देखा जो केवल मेरी सच्चाई को ही बताने पार्टी कार्यालय आये।

---

* भूतपूर्व योजना आयोग के उपाध्यक्ष एवं भूतपूर्व मुख्यमंत्री, कर्नाटक

दूसरी घटना मुझे याद आती है। एक दिन उन्होंने मुझे सुबह 5 बजे के करीब बुलाया। मैं गया। मैंने देखा कि लॉन में दो-चारपाई बिछी थीं। रात में वह चारपाई पर सोये थे। ऐसा लगता था। वह चबूतरे पर बैठे थे। उन्होंने मुझे चाय पिलवायी। मैंने पूछा कि चौधरी साहब यह कौन-सी चाय है। तब उन्होंने कहा कि पीकर देखो, यह उससे अच्छी चाय है जो आप पीते हो। वह चाय सेहत खराब करती है लेकिन यह चाय नहीं। बातचीत में जब उन्हें यह बात मालूम पड़ी कि मैं भी किसान का बेटा हूं तो वह बहुत खुश हुए और तब से वह मुझे बेहद प्रेम करने लगे थे।

चौधरी साहब का सपना था गांव, किसान खुशहाल हों। वह चाहते थे कि बजट का 40 फीसदी हिस्सा गांव-कृषि-किसान के विकास में खर्च हो। उनका मानना था कि देश की खुशहाली का रास्ता गांवों और खेतों से होकर गुजरता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वह जीवन भर गांव, किसान की बहबूदी के लिए प्रयत्नशील रहे और जनता सरकार में उन्होंने गांव-किसान की बहबूदी के लिए भरसक प्रयास भी किये। इसमें दो राय नहीं कि यदि उन्हें समय मिलता तो ग्रामीण भारत के विकास का नक्शा ही कुछ और होता और देश का नक्शा ही बदल गया होता। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि कर्नाटक सरकार ने चौधरी साहब के सपनों को साकार करने का काम किया है और आज कर्नाटक का किसान खुशहाल है और राज्य का हर गांव-किसान मूलभूत आवश्यक सुविधाओं से लाभन्वित हो रहा है। यदि आज चौधरी साहब होते तो अपने सपने को साकार होते देख उन्हें कितनी प्रसन्नता होती। हम चाहते हैं कि चौधरी साहब के अधूरे कार्यों को पूरा करें और उनके सपनों का भारत बनाने के कार्य को अपना अभीष्ट मानें।

50

रहमदिल इंसान थे वह

करतार सिंह*

दिसम्बर 1960 में माननीय चौधरी साहब उत्तर प्रदेश सरकार में गृहमंत्री थे। तब उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस अधीक्षक (सुरक्षा), लखनऊ की तरफ से माननीय गृहमंत्री जी के यहां पोस्टिंग के लिए एक बन्द लिफाफा इंसपेक्टर श्री गिरेन्द्र सिंह परमार व तत्कालीन हैड कांस्टेबल करतार सिंह (मुझको) को दिया था और साथ ही उनके समक्ष पेश होने को कहा गया था।

शाम के समय उपरोक्त यानी हम दोनों वह लिफाफा लेकर 3 लाप्लास, हजरतगंज के पीछे (लखनऊ), जहां माननीय चौधरी साहब प्राइवेट कोठी में रहते थे, पर पहुंचे। वहां पर माननीय चौधरी साहब के दामाद श्री एस. पी. सिंह जी से मुलाकात हुई। उस समय वे औरंगाबाद महाराष्ट्र में एस. पी. थे। उनसे फोर्स के नाते प्रार्थना की कि हमको चौधरी साहब से मिलाने की कृपा करें।

शाम का समय था, गांव के लोगों से चौधरी साहब मिल रहे थे और भी कुछ नेता लोग बैठे थे। श्री एस. पी. सिंह ने उन तमाम लोगों के सामने चौधरी साहब को लिफाफा दिया और कहा, "पिता जी, ये आपकी सुरक्षा में आये हैं।" माननीय चौधरी साहब ने हम दोनों से बातचीत की और कहा कि "भाई, हमारे यहां किसान और गरीब आदमी आते हैं, इन्हीं की सेवा करनी है।" हमने कहा—"हुजूर का जो हुक्म।" इसके बाद माननीय चौधरी साहब ने लिफाफा हमको देकर कहा कि "आप लोग हमारे आफिस में पी. ए. साहब को यह लिफाफा दे दें और उन्हें बतला दें कि हमारी चौधरी साहब से मुलाकात हो गयी है।" हमने वह लिफाफा पी. एस. श्री दीनदयाल साहब को दे दिया और बताया कि हमारी माननीय गृहमंत्री जी से मुलाकात हो गई है।

दूसरे दिन प्रातः नियमानुसार 3-लाप्लास पर मेरी ड्यूटी थी। वहां पर काफी

---

* चौधरी चरण सिंह जी के अंगरक्षक

तादाद में गांव के किसान चौधरी साहब से मिल रहे थे। लगभग दस बजे जब चौधरी साहब विधान सभा जाने के लिए तैयार हुए, तो उनकी गाड़ी के चारों तरफ किसान खड़े हो गये और अपनी बातें बताने लगे। चौधरी साहब ने कहा कि "भाई, वापिस आकर फिर सुनेंगे। 10 बजे मीटिंग है, देर हो रही है।" चौधरी साहब गाड़ी में बैठे और मैं ड्राइवर के साथ आगे की सीट पर बैठा। भीड़ काफी थी, मैंने कार का अपना दरवाजा बंद किया तो एक गांव के किसान की उंगली गाड़ी के दरवाजे में आ गयी। वह चिल्लाने लगा। मैंने तुरन्त ही दरवाजा खोला। उसकी उंगली दरवाजे में पिस गयी थी, बस कटने से बच गयी। माननीय चौधरी साहब ने कहा कि "क्या ज्यादा चोट लगी है ?" किसान ने कहा—"चौधरी साहब बच गयी।" गाड़ी विधान सभा के लिए चल दी। उस समय मुझे पसीना आने लगा और मन में सोचा कि अब नौकरी गयी। थोड़ी दूर जाकर माननीय चौधरी साहब ने मुझसे कहा—"लड़के, हमारे यहां बिना पढ़े गांव के लोग, किसान, अधिकतर गरीब ही आते हैं, तो देख-भाल कर गाड़ी का दरवाजा बंद किया करो। आइन्दा ऐसी गलती नहीं होनी चाहिए।" तब कहीं मेरी जान में जान आई। क्योंकि चौधरी साहब बहुत सख्त माने जाते थे।

अक्टूबर 1979 का महीना था। उस समय चौधरी साहब देश के प्रधानमंत्री थे और नई दिल्ली में तुगलक रोड स्थित 12 नम्बर की कोठी में रहते थे। एक दिन सुबह 9-10 बजे के आस-पास एक लम्बे-तगड़े बुजुर्ग कोठी पर चौधरी साहब से मिलने के लिए आये। उन दिनों सुरक्षा वाले चौधरी साहब से मिलने वालों को कोठी के सामने लॉन में बिठा देते थे और चौधरी साहब उन सबको सम्बोधित करते थे। लेकिन वह लम्बे-तगड़े बुजुर्ग सुरक्षा बलों से कह-सुनकर कोठी में अन्दर आ गये। मैं ड्यूटी पर था। मैंने बाबा से पूछा कि "आप कहां से आये हैं और किस काम से ? इस पर उन्होंने कहा कि "मैं सिकन्दराबाद और भटौना (बुलन्दशहर) के पास के एक गांव का रहने वाला हूं। जाखरिया मेरा नाम है।" इस पर मैंने कहा कि "ताऊ जी, आज चौधरी साहब जरूरी काम में लगे हैं, मिलने के लिए मना कर दिया है। इस पर ताऊ जाखरिया ने कहा कि "तू इतना चौधरी को बता दे कि ताऊ जाखरिया सिर्फ तुझे देखने आये हैं।" इस पर मुझे ताऊ की बात सुनकर रहा नहीं गया और उन्हीं के शब्दों को चौधरी साहब से मैंने कह दिया। इस पर चौधरी साहब झुंझलाये और कहा कि "मैं आज किसी से नहीं मिलूंगा।" मैंने सकुचाते हुए ताऊ जाखरिया से कहा कि उन्होंने मना कर दिया है, लेकिन आप बैठें। इस पर ताऊ ने कहा कि मुझे कोई काम नहीं है, मैं तो इसे देखने चला आया हूं। अच्छा तो अब मैं जगवीर को देखने अस्पताल में जाता हूं। सुना है कि वह बीमार है। (श्री जगवीर सिंह, रक्षा राज्यमंत्री थे, और भटौना, बुलन्दशहर के ही रहने वाले थे) इतना कहकर ताऊ ने अपनी लाठी उठाई और चल दिये।

थोड़ी देर के बाद जब चौधरी साहब आफिस चलने को तैयार हुए तब उन्होंने

घंटी बजाई। मैं उनके पास अन्दर गया, तब चौधरी साहब ने ताऊ जाखरिया को याद किया। इस पर मैंने बताया कि वह तो गुस्से में चले गये हैं। इतना सुनते ही चौधरी साहब ने तुरन्त कहा कि "उन्हें देखो, मेरी गाड़ी ले जाओ और उन्हें लेकर आओ।" मैंने तुरन्त चौधरी साहब की गाड़ी ली और डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल की तरफ चल दिया। क्योंकि ताऊ जी कह रहे थे कि मैं जगवीर को देखने अस्पताल जा रहा हूं। मैंने नार्थ व साउथ ब्लॉक के बीच में चढ़ाई पर ताऊ जाखरिया को देखा, जो पैदल जा रहे थे। मैंने गाड़ी रोकी, ताऊ को गाड़ी में बिठाया और कहा कि चौधरी साहब आपको याद कर रहे हैं। इस पर ताऊ जी चुप हो गये और मैं उनको लेकर कोठी पर आ पहुंचा। चौधरी साहब कौली भरकर ताऊ जाखरिया से मिले और 4-6 मिनट उनसे बातें की, फिर अपने साथ गाड़ी में साउथ ब्लॉक (प्रधानमंत्री कार्यालय) तक बिठाकर लाये। चौधरी साहब ने मुझसे गाड़ी से उतरकर कहा कि "चौधरी साहब (जाखरिया ताऊ) को डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल पहुंचा दो।" मैं ताऊ को अपने साथ डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले गया और श्री जगवीर सिंह जी के कमरे में पहुंचा दिया। वापस आकर मैंने चौधरी साहब को जब रिपोर्ट दी, तब वह बड़े खुश हुए। ऐसे थे चौधरी साहब जो ताजिन्दगी भुलाये नहीं जा सकेंगे और उनके साथ बिताये क्षण ही मेरे जैसे व्यक्ति के लिए अमूल्य धरोहर हैं।

51

वह माननीय से आगे मननीय भी थे

जैनेन्द्र कुमार*

चौधरी चरण सिंह जी से मेरा सीधा परिचय नहीं है। इसलिए उनके विषय में व्यक्तिगत तो कुछ लिख नहीं सकता किंतु मैं अपने लिए उन्हें माननीय से आगे मननीय भी मानता हूं। माननीय के साथ जब मैं मननीय कहता हूं तो, इसलिए, जब उनमें अपना विचार रखने और कहने का साहस है, तब उस विचार में कितनी दृढ़ता है कि जो जिद ही नहीं हो सकती, वह विचार सुचिन्तित है और अपने नीचे पक्की बुनियाद रखता है।

राजनीति और राजनेता अधिकांश समय को देखकर अपना अभिप्राय बनाते हैं, यानी समयानुकूलता उन्हें अपने लिए आवश्यक होती है। अवसर को जो नहीं पहचानता, वह राजनीति में ऊंचाई पर कैसे पहुंच सकेगा ? चौधरी चरण सिंह जी भी उस विषय में कम दूरदर्शी हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकेगा, लेकिन अपनी बात पर दृढ़ रहते हुए तत्काल के लिए अप्रिय बने रहने और उस अप्रियता को सह जाने की क्षमता उनमें है। यह सृजनशील राजनेता का लक्षण कहा जा सकता है। पश्चिम में जिसे विकास मिला, उस अंक वैज्ञानिक अर्थशास्त्री से चौधरी साहब आतंकित नहीं हैं, न वहां की वैभवशाली सभ्यता से विशेष प्रभावित हैं। आज के राजनीतिक क्षेत्र में बहुत कम लोग होंगे, जो उस छाया से मुक्त हों। वे उस चिन्तनधारा के सहारे ऊपर अधर में उठ जाते हैं और अपनी धरती से टूट जाते हैं।

चौधरी साहब की यह विशेषता कही जायेगी कि पद पर वे कितने भी ऊंचे पहुंचे हों, धरती से नाता नहीं टूटा और नकली शहरियत उन पर नहीं छा सकी है। किन्हीं बौद्धिक बारीकियों में उलझ-बहक कर जीवन की मोटी बातों पर से उनका ध्यान हट नहीं गया है और उस प्रकार के आदर्शवाद की भटकन से वह बचे रह गये हैं। जवाहर लाल जी अपने समय में एक अच्छे नेता थे। उनके काल में और

---

* दिवंगत साहित्यिक विभूति

उनके बाद लोग गांधी-नेहरू की दृष्टियों में समानता और समन्वय ही देखते आये। स्वयं गांधी जी के लिए अन्त तक यह सम्भव नहीं हो सका था, यहां तक कि नेहरू जी ने जब भारत का राज्य संभाला, तब गांधी आशीर्वाद तक देने के लिए आस-पास कहीं न थे। नेहरू गणित के सीधे तर्क से अपने निष्कर्ष तक पहुंच जाते थे। पर मनुष्य तो गणित का त्रिभुज है नहीं, सीधी त्रैराशिक उस पर चल नहीं पाती। उन्होंने माना कि यंत्र से मनुष्य की उत्पादन शक्ति बढ़ती है, इसलिए मशीनी उत्पादन पर राष्ट्रनीति का बल होना चाहिए। मशीन बनाने के लिए बड़ी मशीन चाहिए तो बड़े उद्योगों को पहले जमाओ।

इस तरह एक प्रकार का भीमाकारवाद देश में चल निकला, किन्तु यंत्र जब मनुष्य की शक्ति को बढ़ाने के लिए होता है, तब यंत्रवाद इस मनुष्य की शक्ति को खा भी सकता है। देश में चलने वाले भीमोद्योगों को लाने-बिठाने के मोह का परिणाम मानव-क्षमता के ह्रास में फलित होगा और हो रहा है, यह नेहरू के जीवनकाल में ही यदि किसी राजनीतिक नेता ने पहचाना तो श्री चरण सिंह ने। उन्होंने खुलकर चेतावनी दी और उसका विरोध किया।

भारत देश जनाकीर्ण देश है। पहली मांग है कि उस तमाम आबादी की शक्ति का उपयोग हो। वह कुंठित होकर खट्टी न बने और प्रकार-प्रकार के संघर्षों और समस्याओं को जन्म न दे, प्रत्युत वह बनाने-रुक जाने में न केवल शिक्षण को बल्कि तमाम समाज-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था को इस दिशा में मोड़ना होगा। उद्योग कृषि पर हावी होने दिये जायेंगे, तो परिणाम होगा कि बेहाली और भुखमरी बढ़ेगी और साथ ही साथ बाजार तरह-तरह के सामानों से पट जाएगा। जिन्दगी एक तरफ से बेहाल होती जायेगी और दूसरी तरफ आलीशान फाइव स्टार होटल खड़े होंगे। इस दिशा में भारत का भविष्य नहीं है। उस तरफ देश को बढ़ाए लिये जाने का आशय उसे एक नई गुलामी में डाल देना होगा।

अगर गांधी के नेतृत्व में भारत को दासता से मुक्ति मिल पाई है, तो वह मुक्ति सार्थक तभी होगी, जब भारत अपनी आत्मा और प्रतिभा के अनुकूल अपना विकास करेगा और पाश्चात्य सभ्यता के समक्ष एक दूसरी कल्पना और रचना का नमूना प्रस्तुत कर सकेगा। स्पष्ट है कि पश्चिम के पास धन अधिक है, यंत्र अधिक हैं, माल-टाल अधिक है, किन्तु धन की अधिकता उधर है, तो जन की अधिकता इधर पूर्व में है। अगर पूर्व, जन में से ही धन का उत्पादन नहीं कर सकता है, वरन् धन का आयात पश्चिमोत्तर देशों से करने को विवश है, तो जन, धन के नीचे और अधीन ही बना रह जायेगा। यह प्रकृति के विरुद्ध बात होगी।

चौधरी साहब ने यह पहचाना और देश की अर्थनीति के लिए निर्देशक सिद्धांत घोषित किया। उन्होंने कहा कि देश की आवश्यकता की चीजें लघु और कुटीर उद्योगों से पैदा की जायें और बड़ी मशीनों से पैदा हुआ माल सिर्फ निर्यात के लिए हो।

कृषि को प्रधानता मिले और यंत्रोद्योग उस पर भारी न हो। मैं मानता हूं कि भारतीय जनतंत्र के लिए यही दृष्टि उपयोगी और सार्थक हो सकती है। विकसित माने जाने वाले देशों की समृद्धि उनके आयात पर निर्भर है। अगर वहां के माल के लिए मंडी बने देश स्वावलम्बी बन जाते हैं, तो सम्पन्न देशों की समृद्धि और सम्पन्नता एकदम ढह जाती है। दूसरे शब्दों में वह सम्पन्नता अन्याय, अविकसित और विकासशील देशों की विपन्नता पर ठहरी हुई है।

असल में, वह अर्थनीति और अर्थदृष्टि ही गहरी और बुनियादी नहीं है, जो मानव के शोषण के आधार पर समृद्ध बन जाने की कल्पना करती है। उत्पादन और वितरण की प्रक्रिया में भी मानवीय नैतिक विचार का दखल आगे-पीछे दाखिल हुए बिना नहीं रहेगा। गांधी जी का इन्हीं नैतिक मूल्यों पर आग्रह था, तथा अर्थनीति और व्यापार-व्यवसाय में उन मूल्यों को घटित और फलित करने के सम्बंध में कहा जा सकता है कि चौधरी साहब अधिक सावधान और तत्पर हैं।

मैंने उन्हें देर से देखा है, मुझे प्रतीत हुआ है कि देहाती रहते-दीखने में उन्हें तनिक भी उद्यम नहीं करना पड़ता। अनेक नेताओं को सादा दीखने में सचेष्टता की आवश्यकता होती है। सादगी चरण सिंह जी की प्रकृति में ही सिक्त है। सादगी के साथ चौधरी साहब के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी ही अतर्क्य गरिमा होनी चाहिए। सरलता और यह अनुलंघनीय गरिमा का एक व्यक्तित्व में समावेश कैसे हो जाता है, यह मुझ जैसे कथा लेखक के लिए किंचित विस्मय और रहस्य का विषय है। इसलिए मैं, जबकि राजनीतिक सफलता के लिए उन्हें माननीय मान सकता हूं, तब व्यक्तित्व की जटिलता और गहनता के लिए उन्हें लेखक के नाते मननीय मानने को अपने को विवश पाता हूं।

52

जातिवाद के प्रबल विरोधी

रघु ठाकुर*

मेरा परिचय चौधरी चरण सिंह जी से ऐसे समय हुआ, जब उनका राजनैतिक जीवन चरम पर था तथा आयु का अंतिम चरण था। वैसे मेरी राजनैतिक धारा चौधरी साहब से भिन्न थी। मैं विद्यार्थी जीवन से ही समाजवादी नेताओं से पूर्णतः प्रभावित था।

जहां समाजवादियों का जीवन 1960 के बाद जेल भरने तथा संघर्ष करने का रहा है तथा हम सभी साथी इन कठिनाइयों की घड़ी से तप कर बाहर आये, वहीं चौधरी साहब का राजनैतिक जीवन भी गांधी जी, सरदार पटेल आदि के प्रभाव में रहा, परन्तु धाराएं अलग-अलग थीं।

चौधरी साहब पहली बार 1977 में सांसद बने तथा देश के दूसरे ऐसे गृहमंत्री बने, जिनका सीधा सम्बन्ध प्रथम गृह तथा उप-प्रधानमंत्री सरदार पटेल की तरह खेतों से था। देश की सर्वोच्च कुर्सियों में से एक कुर्सी पर बैठने के बाद भी चौधरी साहब ने हमेशा किसानों की ओर विशेष ध्यान दिया। चौधरी साहब की किसानों की परिभाषा थी कि—खेती से जो कोई सम्बंधित है, वह किसान है, भले ही वह बढ़ई, लुहार, तेली, मजदूर हो।

चौधरी साहब का प्रमुख वाक्य था कि देश की खुशहाली, खेतों की हरियाली, किसान मजदूरों के रहने के ढंग तथा गांव की गलियों से जांची जाती है। भारतवर्ष के बारे में चौधरी चरण सिंह गांधीवादी विचारों को आगे रख कर प्रगति का रास्ता दिखाना चाहते थे और कुटीर उद्योग धंधों तथा खेती पर आधारित उद्योगों को विशेष अवसर दिलाना चाहते थे। इस पर उन्होंने पुस्तकें भी लिखीं।

आज की राजनीति को देखकर लगता है कि हमारे बुजुर्ग बहुत महान तथा राष्ट्रवादी थे। चौधरी साहब द्वारा उत्तर प्रदेश में खेती की जमीन की हदबन्दी निश्चित करने को भुलाया नहीं जा सकता। भूमिहीनों को जोत का हक देना भी चौधरी साहब

* राष्ट्रीय महासचिव, समाजवादी पार्टी

द्वारा उठाया गया उल्लेखनीय कदम रहा।

चौधरी चरण सिंह जाति को विकास और सामाजिक समानता के लिये बाधक मानते थे। वे जाति मिटाना चाहते थे। उन्होंने कांग्रेस में रहते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू को सुझाव दिया था कि शासकीय नौकरियों में अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। पं. नेहरू ने इसे स्वीकार नहीं किया, अन्यथा आज देश के हालात कुछ और ही होते। चौधरी साहब ने समाज के पिछड़े वर्गों को आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। डा. राममनोहर लोहिया के बाद अगर किसी राजनेता ने पिछड़ों को राजनैतिक अधिकार देने का प्रयास किया, तो वह चौधरी चरण सिंह जी ही थे। जो लोग आज चौधरी साहब पर जातिवादी होने का आरोप लगाते हैं, उन्होंने या तो उन्हें समझा नहीं या फिर वे जान-बूझ कर ऐसा आरोप लगाते हैं। चौधरी साहब ने अपनी मर्जी से अपनी बेटियों की अन्तर्जातीय शादी की और जातिवाद को मिटाने के लिये अपने कर्म से उदाहरण प्रस्तुत किया।

चौधरी साहब परिवर्तन के लिये सत्ता को अपरिहार्य मानते थे। चौधरी साहब चाहते थे कि गांव के लोग-किसान सत्ता पर काबिज हों ताकि सत्ता किसानों एवं गरीबों के हाथ आ सके। इसीलिये चौधरी साहब ने भारतीय क्रांति दल तथा बाद में अन्य राजनैतिक दलों के माध्यम से राजनीति में किसानों की भागीदारी को बढ़ाया।

मैंने चौधरी साहब को नजदीक से देखा था। चौधरी साहब अनेक बार गरीब व्यक्ति को देखकर या गरीब की चर्चा करते-करते इतने भाव विह्वल हो जाते थे कि रोने लगते थे। जिस गरीबी में चौधरी साहब पैदा हुए थे और जो किसान का दर्द उनके बचपन का संगी था, उसे उन्होंने सारा जीवन अपने दिल में संजोकर के रखा और इसीलिये गरीबों के उत्थान के रास्ते से चौधरी साहब कभी भी विचलित नहीं हुए। चौधरी साहब जैसे विशाल हृदय वाले लोग आज के युग में विरले ही होते हैं।

53

जमींदारी उन्मूलन के जनक

ठाकुर अम्बिका प्रसाद सिंह उर्फ 'अम्बिका दादा'*

चौधरी चरण सिंह जैसा सादा, चरित्रवान, ईमानदार, निश्छल आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। वह जो कहते हैं, वही करते भी हैं। यानी उनकी कथनी-करनी में कोई अन्तर नहीं है। इस संदर्भ में भले ही उन्हें लोग जिद्दी कहें और कहते भी हैं, लेकिन अपनी बात पर आखिर तक अडिग रहने की सामर्थ्य ही उनकी विशेषता है।

चौधरी साहब ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का जोरदार ढंग से विरोध किया। उनका मानना है कि जब तक इन कुरीतियों का खात्मा नहीं हो जाता, देश की तरक्की संभव नहीं। यही वजह रही कि वह समाज में जात-पांत के भेद को मिटाने, दहेज-प्रथा समाप्त करने, भोग-विलास व नशीली वस्तुओं के इस्तेमाल को खत्म करने और अर्न्तजातीय विवाह करने पर सदैव बल देते रहे। उनके विरोधियों द्वारा समय-समय पर लगाया जाने वाला यह आरोप कि वह जातिवादी हैं, नितांत भ्रामक व झूठा है। जबकि असलियत यह है कि वह जाति-व्यवस्था की सदैव खिलाफत करते रहे। उनका मानना है कि जातीयता देश और समाज का दुश्मन है।

जाति-व्यवस्था तोड़ने की दिशा में अर्न्तजातीय विवाह पर बल देते हुए चौधरी साहब ने कहा था कि "सरकारी नौकरी उन्हीं लोगों को दी जाय जो अर्न्तजातीय विवाह करें। यदि यह नियम बना दिया जाये तो मैं राजनीति से सन्यास ले लूंगा।" यह उनकी महानता का द्योतक है।

वर्तमान में राजनैतिक जीवन में चरित्र और निष्ठा की कमी आयी है। सत्ता प्राप्त करने की खातिर नेताओं ने वह राजनैतिक ढांचा ही खत्म कर दिया जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में विकसित किया गया था।

---

* वयोवृद्ध समाजवादी नेता

राजनैतिक भृष्टाचार के वह सदैव विरोधी रहे। उन्होंने चुनावों में कभी भी पूंजीपतियों या उद्योगपतियों से पैसा नहीं लिया। इस सन्दर्भ में चौधरी साहब का कहना है कि जो भी नेता चुनावों में बड़े-बड़े पूंजीपतियों और व्यापारियों से धन लेगा, वह व्यापारी द्वारा काला बाजारी करने पर, उसकी रक्षा भी करेगा। जब भ्रष्ट राजनैतिक नेता, भ्रष्ट व्यापारी और भ्रष्ट उद्योगपति के बीच सम्बन्ध कायम हो जायेगा, उस हालत में भ्रष्टाचार बढ़ता ही जायेगा, कम होने की कल्पना ही व्यर्थ है। भ्रष्टाचार के खात्मे की दिशा में उन्होंने जो कदम उठाये, वह उनके कुशल प्रशासक होने का ज्वलंत प्रमाण हैं।

चौधरी साहब ने कहा कि भ्रष्टाचार के खात्मे की दिशा में सबसे पहले उन भ्रष्ट मंत्रियों, राजनेताओं और अधिकारियों को सजा दी जानी चाहिए और यही नहीं व्यापारिक क्षेत्र में भी उन व्यापारियों को कड़ी सजा दी जाये, जो बड़ी-बड़ी रिश्वतें देते हैं। उनका बार-बार यह कहना है कि आखिर चरित्र में कमी क्यों आयी ? लोगों को स्वार्थ की शिक्षा मिलती कहां से है ? पता नहीं लोग कैसे हैं, जो भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर भी शर्मिन्दा क्यों नहीं होते ?

जमींदारी उन्मूलन की दिशा में जो काम चौधरी साहब ने किया है; देश का किसान इसके लिये सदैव उनका ऋणी रहेगा। इसी का परिणाम है कि लाखों भूमिहीनों, जिनके पुरखे और वह जिन जमीनों को जोतते चले आ रहे थे, उसके मालिक बने। इसी कानून के परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश के बलिया जिलान्तर्गत सिकन्दरपुर गांव के किसानों की ज़मीन जो बंधक थी, मुक्त हो सकी और वह अपनी जमीनों के मालिक बन सके। यह इस बात का जीता जागता प्रमाण है।

चौधरी चरण सिंह सदैव पददलितों में आत्म सम्मान जगाने, उनको समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए लड़ते रहे, ताकि वह राष्ट्र की भावी व्यवस्था में अपने सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकारों को सुरक्षित बना सकें। उनका मानना है कि सामाजिक समानता, तथाकथित उच्च वर्गों से कोई भीख मांगना थोड़े ही है। देश के नागरिक होने के नाते उनका यह अधिकार है।

उनके मन में इन वर्गों के लोगों के लिए कितनी वेदना है, यह इसी बात से जाहिर होती है कि वह इनके उत्पीड़न तथा शोषण को देख या सुनकर द्रवित हो उठते हैं। यह सच है कि देश में पिछड़ों का कोई भी नेता नहीं था, उस कमी को चौधरी साहब ने पूरा ही नहीं किया बल्कि उनके उत्थान की दिशा में व 1948 के बाद देश के पिछड़ों की लड़ाई को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहने का काम भी किया है।

मेरी स्पष्ट मान्यता है कि वर्ग संघर्ष के बिना देश और समाज परिवर्तन की आशा व्यर्थ है। सन् 1981 में एक समारोह के दौरान पटना में तथा बाद में नई

दिल्ली स्थित उनके निवास पर खेत-मजदूरों के सवाल पर हुई लम्बी चर्चा के दौरान आखिर में चौधरी साहब की भी यह राय बनी कि समाज परिवर्तन का एक मात्र विकल्प वर्ग-संघर्ष ही है। यह तभी संभव है जबकि चौधरी साहब की नीतियों का व्यापक प्रचार व प्रसार हो। तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे और देश में एक नये समाज का निर्माण कर सकेंगे। यही मेरी कामना है।

54

वह वतन के वास्ते जिए

रमेश वर्मा*

चलते-चलते पग थके, नगर रहा नौ कोस,
बीचहि में डेरा दियौ, कहौ कौन को दोष ?

भारत राष्ट्र को नई शक्ति देने की तमन्ना लिये हुए चौधरी चरण सिंह दिवंगत हो गये। रण क्षेत्र में धराशायी होकर भीष्म-पितामह की तरह उन्होंने एक लम्बे अर्से तक बाण शैय्या पर उत्तरायण नक्षत्र के उदय का इंतजार किया। महाभारत चलता रहा और शांत भी दिखता रहा। प्राणत्याग भी चौधरी साहब की इच्छा पर निर्भर हो गया। कल शाम को ही चर्चा थी—क्या चौधरी साहब हरियाणा के चुनाव परिणामों को देख सकेंगे ? रात को स्वप्न दर्शन भी ऐसा ही हुआ, सिंधन में धनुष बाण धारण किये हुए अर्जुन का विमान आकाश में उड़ता जा रहा है और कृष्ण भगवान उंगुलियों का संकेत देते हुए उपदेश दे रहे हैं—"हतोवा प्राप्यस्य स्वर्गम्, जित्वा वा भोक्षे महीम् !" "न मरने का गम है 'मार', न जीने की खुशी है।" कर्मक्षेत्र ही युद्ध क्षेत्र और धर्म क्षेत्र है।

चौधरी चरण सिंह वतन के वास्ते जिये और वतन की बेदी पर ही कुर्बान हो गये। एक साधारण किसान के घर में जन्म लेकर वह अपनी प्रतिभा और परिश्रम से आगे बढ़े। देश के उज्जवल सितारों में वह प्रकाशमान होकर चमके। सबसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान हुए।

पर उनके जीवन का मुख्य ध्येय किसान और देश की गरीब जनता के कल्याण के लिये संघर्ष करना ही रहा। किसान जनता का उन्हें असीम प्यार मिला। जहां तक इस देश की किसान जनता का संबंध है, जो देश का मेरुदण्ड है, उसने ही चौधरी चरण सिंह जैसा एक मसीहा पैदा किया है। इस देश की जनता किसान जनता है। किसान की बहबूदी पर ही देश का कल्याण निर्भर है, जिसके अन्तर्गत जनता के

---

* दिवंगत पत्रकार एवं स्तम्भकार

सभी वर्ग आते हैं–बुद्धिजीवी वर्ग से लेकर, शासक वर्ग और प्रशासनिक वर्ग, श्रमजीवी वर्ग, व्यवसायी समाज और औद्योगीकरण के सभी अंग–यदि किसान की हालत सुधरी तो देश की सारी जनता का उत्थान और अभ्युदय होगा–यह चौधरी साहब की नीति रही, जिस पर उनकी राजनीति का चक्र घूमता रहा।

एकै साधै सब साधै, सब साधै सब जाय।

चौधरी साहब का यह बीज मंत्र था

महात्मा गांधी के इस विचार के चौधरी चरण सिंह मूर्तिवान रूप थे कि इस देश की शासन व्यवस्था किसान पुत्र के हाथ में होनी चाहिये, जिसके लिये बुद्धिजीवी वर्ग एक सहायक रूप में होगा। अर्थात् देश की शासन व्यवस्था में श्रम और बौद्धिक बल दोनों का ही महत्व है। श्रम शक्ति ही बौद्धिक बल को जन्म देती है, बौद्धिक बल को पुष्ट करती है। चौधरी चरण सिंह जन्म से, स्वभाव से, विचार से आद्योपांत किसान पुत्र थे, धरती के लाल। बुद्धिजीवियों की खचित मुक्तमाला में वह एक मणिधारी की चमक थे। भारत की अर्थव्यवस्था पर उनका लिखा हुआ ग्रन्थ "देश की अर्थव्यवस्था का भयावह रूप" कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी अधिक महाग्रन्थ है, जो देश के अर्थशास्त्रियों के लिये तो पथ प्रदर्शक है ही, देश की अर्थव्यवस्था को कैसा रूप दिया जाना चाहिये, इसका मार्गदर्शक भी है। चौधरी चरण सिंह के अर्थविन्यास को लोग इसी तरह समझेंगे और हृदयंगम करेंगे जैसे कि महाभारत पढ़ा जाता है।

हमारे देश की राजनैतिक व्यवस्था पर ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था और बौद्धिक शक्ति पर जवाहर लाल नेहरू छाये रहे लेकिन यह चौधरी चरण सिंह का ही साहस और वैचारिक धरातल था कि उन्होंने धारा के विपरीत जवाहर लाल नेहरू की गलतियों को उजागर किया। सहकारी खेती का प्रयोग देश में असफल हो गया तथा उसकी जगह एक मध्यवर्ती सामन्ती वर्ग के स्वार्थ प्रबल हो गये। जहां तक सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का संबंध है तो देश में बैंकों का केंद्रीकरण और पूंजीवाद की राजनैतिक दुर्दशा बढ़ी है। जवाहर लाल नेहरू का समाजवाद, पूंजीपतियों की तिजोरियों में, बैंकों में और देश के आयात-निर्यात भंडारों में कैद हो गया, जो देश की अर्थव्यवस्था का 'भयावह' रूप है जिसकी चिंता आज देशभर में व्याप्त है।

उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन और भूमि व्यवस्था अधिनियम के निर्माण में चौधरी चरण सिंह की मुख्य भूमिका रही, जो देश में नयी भूमि व्यवस्था के लिए एक आदर्श बन गया। उत्तर प्रदेश की भूमि व्यवस्था में जैसा सुधार हुआ, दूसरे राज्यों में उसका अनुकरण करते हुए भी सफलता प्राप्त नहीं हुई है और जमींदारी प्रथा का उन्मूलन होकर भी अभी तक सामंती व्यवस्था चल रही है। यह दुर्भाग्य की बात है कि चौधरी चरण सिंह पर दो प्रकार के कटु प्रहार होते रहे। (1) चौधरी चरण सिंह खुशहाल किसानों के समर्थक हैं। (2) चौधरी साहब ने जातिवाद को बढ़ावा दिया

है। देश के पूंजीपति वर्ग का यह प्रचार रहा जिससे देश का बुद्धिजीवी वर्ग भी प्रभावित हो गया। अतः चौधरी चरण सिंह को देश की जनता ने तो समझा लेकिन राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा के कारण देश का निहित स्वार्थी वर्ग उनका विरोधी रहा और बुद्धिजीवी वर्ग ने उनको भली प्रकार नहीं समझा। चौधरी चरण सिंह की भूमि व्यवस्था में सबसे निम्न श्रेणी के किसान और श्रमजीवी वर्ग के हित सुरक्षित रखे गये हैं, जबकि खेतों की भूमि की उच्च सीमा निर्धारित कर सामंती वर्ग के स्वार्थों को परकैच कर दिया है। इसी प्रकार जिसे जातिवाद कहा गया है उसकी परिभाषा वर्गवाद है। चौधरी चरण सिंह श्रमजीवी वर्ग के प्रतिनिधि थे और उनके हित के लिए संघर्ष करते रहे। शासन व्यवस्था में सादगी और स्वच्छता लाने के प्रश्न पर उन्होंने अपने शासकीय पद से कई बार इस्तीफा दिया। उनके कांग्रेस छोड़ने और नई पार्टी बनाने का उद्देश्य भी अपने सिद्धांतों को सत्ता के लाभ में प्रमुख स्थान देना था। महात्मा गांधी ने भी कांग्रेस को छोड़ दिया था, यह उनकी आत्मा की आवाज थी। चौधरी चरण सिंह ने सत्ता के लोभ को संवरण किया और अपने विचार, सिद्धांत और नीति पर अडिग रहे। उनका एक प्रहार सत्ता पर एक वंश के राज्य शासन पर अक्षुण्ण अधिकारों के विरोध में रहा। यह गलत है कि इस संबंध में चौधरी चरण सिंह के हृदय में व्यक्ति विशेष के संबंध में कोई द्वेष भाव था। वे लोकतंत्र में व्यक्ति विशेष और तानाशाही प्रवृत्ति के सख्त विरोधी थे।

चौधरी चरण सिंह अपनी एक अलग हस्ती थे। निकट भविष्य में क्या इसकी पूर्ति हो सकेगी ? यह प्रश्न भविष्य के गर्भ में है ?

55

जीवन दर्शन की सहज कविता

सुरेन्द्र तिवारी*

राजनेताओं में वे लोग गिने-चुने हैं, जो व्यक्ति, अपनी पार्टी और अपने लोगों के हितचिंतन से ऊपर उठ कर अपने प्रदेश और इस विशाल देश की समस्याओं से जूझना अपना धर्म समझते हैं। चौधरी चरण सिंह को मैंने सत्ता में देखा है। जब वे उत्तर प्रदेश के मंत्री और मुख्यमंत्री थे और सत्ता से अलग भी, जब वे किसी भी पद पर नहीं रहे, दोनों ही स्थितियों में समान रूप से जनसाधारण और मुख्य रूप से देहात से जुड़ी जनता के लिए अनवरत कुछ-न-कुछ करते रहना उनका सबसे पहला कर्त्तव्य रहा। मंत्रिपद पर रहने या सत्ता से बाहर होने पर चौधरी साहब के व्यवहार या उनके सोचने के तरीकों में कभी अन्तर नहीं पड़ा। बड़े-से-बड़ा अफसर, उद्योगपति या छोटे-से-छोटा किसान उनसे समान रूप से मिल सकता था।

पहले वे एक तिरछी निगाह से आगंतुक को देखते थे और यह जान लेते थे कि यह व्यक्ति जायज काम के लिये आया है या किसी बेजा काम को उनके प्रभाव से करवाना चाहता है। यदि काम जायज है तो चौधरी साहब से बड़ा हिमायती मिलना मुश्किल था और यदि काम दूसरी तरह का है, तो ज्यादा देर तक उनके बंगले में ठहरे रहना भी कठिन होता था। खरा व्यवहार और खरी बात उनके चरित्र का अंग बन चुके थे। चरित्र की इस विशेषता से उन्हें व्यक्तिगत हानि भले ही हुई हो, पर उनके पास गांव-गिरांव से आने वाली अपार दुखिया जनता के बीच वे निःसन्देह 'हीरो' थे। लोग अक्सर यह कहते सुने जाते कि दुःखी हो तो चौधरी साहब के पास चले जाओ।

कांग्रेस का जमाना था। सहकारिता आंदोलन जोर पकड़ रहा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू सहकारिता आंदोलन के जनक थे और नागपुर कांग्रेस में इस प्रश्न पर बड़ी जोरदार बहस छिड़ी हुई थी। सभी वक्ता सहकारिता आंदोलन के पक्ष में जोरदार

* भूतपूर्व प्रशासनिक अधिकारी, उत्तर प्रदेश

भाषण कर रहे थे। सहसा माइक पर उत्तर प्रदेश की कांग्रेस सरकार के राजस्व मंत्री चौधरी चरण सिंह आये और डट कर सहकारी खेती का विरोध किया। लोग भौचक्के कि एक मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के प्रतिपादित सिद्धांतों के विरोध में कैसे बोल सकता है, पर चौधरी साहब ने धारा प्रवाह तर्कयुक्त भाषण में सहकारी खेती की कमियों और उसके अव्यावहारिक होने के कारण उसे देश में लागू न किये जाने पर बल दिया। उस समय के वातावरण को देखते हुए यह एक साहसपूर्ण कदम था, जिसे उठाने की हिम्मत अधिकांश लोगों में नहीं थी। देश के हित को सर्वोपरि मानने वाले चौधरी चरण सिंह ने उस समय जो आवाज उठाई,उससे उनका व्यक्तिगत नुकसान भले हुआ, पर जनमानस में उनकी प्रतिष्ठा को चार चांद लग गये और लोग उन्हें 'शेरे उत्तर प्रदेश' कहने लगे।

धीरे-धीरे चौधरी साहब कांग्रेस की नीतियों और विशेष रूप से उस समय अपनाई जाने वाली राजनीतिक पद्धतियों से असहमत होने के कारण अपने आपको उस बड़े गढ़ में अकेला महसूस करने लगे और अंततः उन्होंने अपने चन्द अनुयायियों सहित कांग्रेस छोड़ दी और उसके कुछ दिन बाद ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। उनदिनों मैं उत्तर प्रदेश सरकार का सहायक सूचना निदेशक और पत्र सूचना कार्यालय का प्रमुख था और इस नाते चौधरी साहब को नजदीक से देखने का मौका मिला। बहुत थोड़े लोगों को पता होगा कि उत्तर प्रदेश के जमींदारी उन्मूलन का बिल और उसका सफल कार्यान्वयन चौधरी साहब की ही देन है। उत्तर प्रदेश आज गर्व के साथ यह दावा करता है कि उसके'लैंड रेकॉर्डस' बिल्कुल 'अपटुडेट' हैं, लेकिन यह उपलब्धि उत्तर प्रदेश को चौधरी चरण सिंह की देन है, यह बात बहुत लोग नहीं जानते। अपने राजस्व मंत्रित्व काल में चौधरी साहब ने प्रदेश के सारे भूमि सम्बंधी रेकॉर्ड सही किये, जो अपने-आप में एक बड़ा काम था।

जिस दिन उत्तर प्रदेश में यह खबर होती थी कि कल से चौधरी साहब मुख्यमंत्री होने जा रहे हैं, पुलिस थानों और पी.डब्ल्यू.डी. में अपने-आप रिश्वत बन्द हो जाती थी। ये विभाग अन्य विभागों की अपेक्षा अधिक नामधारी रहे हैं। लोग सचिवालय में दस बजे आना शुरू कर देते थे और सभी सरकारी कार्यालयों में अनुशासन अपने आप उत्पन्न हो जाता था। स्वयं बारह घंटे से अधिक रोज काम करके चौधरी साहब बिना किसी के कुछ कहे सचिवालय में लगन के साथ काम करने का एक वातावरण उत्पन्न कर सकने में समर्थ थे।

कुछ लोगों का यह दावा है कि यदि स्थायी सरकार में चौधरी साहब को दस वर्ष मुख्यमंत्री होने का अवसर मिलता, तो उत्तर प्रदेश का नक्शा ही बदल गया होता। यह प्रदेश का दुर्भाग्य ही रहा कि उन्हें कभी स्थायी सरकार की बागडोर नहीं मिली, लेकिन थोड़े से समय में भी उन्होंने अपनी एक अमिट छाप शासन पर छोड़ी। जो उचित हो, वह काम हर कीमत पर होना चाहिए और अनुचित काम मुख्यमंत्रित्व

की कीमत पर भी नहीं हो सकता।

एक उदाहरण दे रहा हूं, संविद(संयुक्त विधायक दल)की सरकार कुछ पार्टियों की मिली -जुली सरकार थी और एक भी घटक का समर्थन न रहने पर सरकार गिर सकती थी। इस प्रकार की सरकार के मुख्यमंत्री थे चौधरी चरण सिंह। फिर यह हुआ कि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी उत्तर प्रदेश के दौरे पर आयीं। उनके दौरे की खबर होते ही संविद के एक घटक ने घोषणा की कि हम प्रधानमंत्री का घेराव करेंगे और उन्हें काशी के बाहर जाने नहीं देंगे। मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह के सामने यह एक ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई, जो उनकी सरकार के लिए घातक हो सकती थी। यदि मुख्यमंत्री उन लोगों को घेराव न करने दें, तो उन सबको गिरफ्तार करना पड़ेगा, जो प्रधानमंत्री का घेराव करना चाहते हैं और इस दिशा में यदि उस घटक ने सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया तो सरकार गिर जायेगी। दूसरी ओर यदि प्रधानमंत्री का घेराव कर लेने दिया जाये(क्योंकि उससे उत्तर प्रदेश की सरकार गिरने का खतरा टल जाता)तो मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह की व्यक्तिगत 'इमेज' को धक्का लगता। चौधरी साहब मुख्यमंत्री हों और प्रधानमंत्री (चाहे वह विरोधी दल की ही क्यों न हो)का घेराव कर लिया जाये, यह संभव नहीं था। चौधरी साहब स्वयं प्रधानमंत्री के साथ उनके दौरे के समय रहे, ताकि इस संबध में की गई व्यवस्था वे स्वयं देख सकें और सरकार रहे या न रहे, किसी को यह कहने का अवसर न मिले कि चौधरी साहब के मुख्यमंत्रिव में 'लॉ एण्ड ऑर्डर' में जरा-सी भी ढील हुई।

जो लोग चौधरी साहब को पूरी तरह नहीं जानते, वे समझते हैं कि चौधरी साहब बड़े कठोर दिल के और सबको डांटने-फटकारने वाले व्यक्ति थे। दरअसल उनकी कठोरता के पीछे सहृदय व्यक्तित्व छिपा था। एक दिन रात को करीब ग्यारह बजे मैं उनके घर गया तो उन्हें कुछ उदास-सा पाया। जिज्ञासावश मैंने पूछा कि उनके उदास होने का कारण क्या है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने अप्रत्याशित बात की। बोले "तिवारी, काश मेरी उम्र दस वर्ष कम हो जाती, तो मैं उन लोगों की सेवा और सक्रिय रूप से कर सकता, जो कष्ट में हैं और जिनकी सुनने वाला कोई नहीं है।" बाद में पता चला कि उनके माल एवेन्यू के घर पर रात दस बजे कोई बुढ़िया किसी गांव से आई थी,जिसके साथ गांव की पुलिस ने कुछ ज्यादती की थी। किसी को कष्ट में देख कर अपनी उम्र दस वर्ष घटाने की ईश्वर से प्रार्थना अपने-आप में एक कविता की पंक्ति जैसी लगती है, उनके जीवन-दर्शन को सार्थक और सशक्त सिद्व करने वाली सहज कविता। राज कर्मचारी उन्हें अपना मसीहा मानते थे। लखनऊ में वर्षों पूर्व खुलेआम यह घोषणा करके कि हम राज्य कर्मचारियों को कुछ भी नहीं दे सकेंगे, उन्होंने लखनऊ की प्रतिष्ठा वाली सीट जहां राज्य कर्मचारियों की संख्या बहुत है, जीती थी। यह इसलिए संभव हो सका था क्योंकि राज्य कर्मचारी जानते

थे कि चौधरी साहब जो कहते हैं, उसका मतलब वही होता है और उसके अतिरिक्त कुछ नहीं। वह किसी को अपने साथ आने के लिए प्रलोभन नहीं देते वरन कठिनाई का रास्ता बताते थे। और मजा यह कि लोग उनके साथ कठिनाई का रास्ता भी तय करने के लिए तैयार हो जाते थे।

उनके साथ अनेक बार दौरों पर जाने का मौका मिला, जहां वे जनसभाओं को सम्बोधित करते थे, मैंने देखा कि उनके शहर के भाषणों और गांवो के भाषणों में बहुत अन्तर होता था। ऐसा शायद ही कभी हुआ हो, जब उन्होंने केवल शहर का ही कोई कार्यक्रम स्वीकार किया। वे हमेशा ग्रामीण अंचल से अपने को जोड़ते रहे और गांव वाले उन्हें हमेशा अपना संरक्षक मानते रहे। गांवों के भाषणों में उनकी भाषा ग्रामीण और गांव वालों की समस्याएं उनके भाषण के विषय होते थे और शैली बातचीत की, जो गांव वाले तक सीधी पहुंचती थी।

56

अभिजात्यों के लिए वह उपेक्षित ही रहे

डा. प्रेम सिंह*

दिसम्बर की 23 तारीख को चौधरी चरण सिंह का जन्म दिन होता है। लेकिन भारतियों के लिए यह कोई महत्वपूर्ण या याद रखने लायक घटना नहीं मानी जाती। उन भारतीयों के लिए भी नहीं जिनके हितों और हकों के लिए वे अपने पूरे राजनैतिक जीवन में सक्रिय रहे। बड़े पैमाने पर नेहरू की जन्म शताब्दी मनायी जा चुकी है। यह तथ्य सर्वविदित है कि नेहरू के नाम पर इस देश में इस सरकार से कितना भी धन और सुविधाएं लूटी जा सकती हैं। ऐसा नहीं कि इस सारे खर्चीले आयोजन के पीछे नेहरू की भूमिका और विचारों के मूल्यांकन और विश्लेषण का मन्तव्य निहित हो। यदि ऐसा होता तो अपने पूर्ववर्ती सार्वजनिक व्यक्तियों की कमियों और चूकों से भी हम अपने वर्तमान की समस्याओं से निपटने और भविष्य का पथ प्रशस्त करने में मदद पाते, लेकिन हमारे यहां का आम(और विशिष्ट भी) रूझान और मिजाज ऐसा है कि केवल प्रभुत्वशाली धारा को ही धारा माना जाता है और साथ ही उसे कमियों और चूकों से रहित,सही और वास्तविक धारा भी माना जाता है। ऐसे माहौल में विश्लेषण और मूल्यांकन का मायना होता है- प्रभुत्वशाली धारा के व्यक्ति के प्रत्येक निर्णय और कार्यकलाप को उपलब्धि बनाकर प्रस्तुत करना और लोगों की श्रद्धा को, अविवेकी बनाते हुए, उसके पक्ष में झुकाना। प्रभुत्वशाली धारा से पोषित होने वाले वर्ग की सुविधाओं का यही रास्ता है। इसलिए वर्ग हित में ही वे अपना संगठन और जबर्दस्त आग्रह इस रास्ते पर बनाए रखते हैं। इस प्रभुत्वशाली धारा को चुनौती देने वाले व्यक्ति को ब्राह्मण समाज में अछूत अथवा बुद्धिजीवी समाज में विदूषक की तरह दुत्कारा जाता है। संगठित षडयन्त्र के तहत उसकी चुनौती को ही निरर्थक, यहां तक कि हास्यास्पद करार दिया जाताहै।

चौधरी चरण सिंह भारतीय सार्वजनिक जीवन में प्रभुत्वशाली धारा को चुनौती

---

* देशबंधु कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक

देनेवाली हस्ती थे। इसलिए उन्होंने नेहरू के उपहास-वह तो जाट बुद्धि है,वह जो 18वीं शताब्दी की बात करता है, और शहरी बुद्धिजीवियों तथा प्रेस की नुक्ताचीनी तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। चौधरी चरण सिंह निष्ठाओं में अडिग और प्रखर अहमू के स्वामी थे। इसलिए तमाम विरोधों के बावजूद वे भारतीय राजनीति में एक दुर्निवार शक्ति बने रहे और अन्ततः इस देश के अल्पकालिक प्रधानमंत्री बने।आमतौर पर यह माना जाता है कि उनका 6 महीने की अल्प अवधि के लिए प्रधानमंत्री बनना और उस दौरान एक बार भी संसद का सामना न करना उनके प्रधानमंत्री होने के महत्व को खारिज कर देता है। लेकिन सच्चाई इससे ठीक विपरीत है। चौधरी चरण सिंह का अल्पकालिक प्रधानमंत्री बनना ही महत्व की बात है, क्योंकि इसी बिन्दु से भारतीय राजनीति के चलन और उसमें उनकी भूमिका को समझा जा सकता है।

यह वास्तविकता है कि चौधरी चरण सिंह का अभी तक समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ है। इस दिशा में कोई गम्भीर प्रयास भी नहीं होते दिखते। संभ्रात नौकरी-पेशा शहरी और अघाये हुए व्यापारी इस बात से ही नाक-भौं सिकोड़ सकते हैं कि उस ग्रामीण विदूषक का मूल्यांकन करने की क्या आवश्यकता है। उसे आता ही क्या था? न शक्ल, न अक्ल। देहात में भी गरीब, अमीर सभी तरह के लोग मिल जायेंगे जो एक सिरे से चौधरी चरण सिंह को नकार देंगे। विशेषकर ब्राह्मण,ठाकुर,गूजर और हरिजन भी। प्रेस और सरकार ने उन्हें तोते की तरह रटाया है कि वह तो जाटों का नेता है, जातिवादी है, उसे किसानों और गरीबों से कुछ नहीं लेना-देना है। वह तो जाटों का शासन चाहता है। (यहां इस सच्चाई की ओर ध्यान दिलाना गैर-मुनासिब नहीं होगा कि चौधरी चरण सिंह के मंत्रिमंडल में एक भी जाट केबिनेट स्तर का मंत्री नहीं था)। अपने को किंचित गम्भीर सोच का मानने वालों का तर्क होता था कि वह तो एक क्षेत्रीय नेता है। राष्ट्रीय स्तर पर उसकी कोई पहचान नहीं है। ऐसा व्यक्ति प्रधानमंत्री बनने की बात भी सोचे तो इससे बड़ी हिमाकत क्या हो सकती है। थोड़ा और बारीक सोचने वालों-जैसे कि रोमेश थापर-का तर्क होता था कि राष्ट्रीय मूल्यांकन के आधार पर चौधरी चरण सिंह बहुत ज्यादा विश्वसनीय नहीं हैं। आर्थिक, राजनैतिक,मीमांसा के आधार पर वे अत्यंत अस्थिर स्वभाव के असंतुलित सामान्यीकरण पर विश्वास करने वाले व्यक्ति हैं। इंदिरा गांधी और उनके चारण उन्हें हरिजन-विरोधी, खेतिहर मजदूर-विरोधी और गरीब किसान-विरोधी बताकर कुलक की 'गाली' देते रहे। कुछ मार्क्सवादी विचारकों-पॉल ब्रास,हो पिंग, बायर्स ने अलबत्ता उनका गम्भीर मूल्यांकन करने की कोशिश की है। समाजवादी विचारक और राजनेता मधु लिमये का मानना है "जमींदारी उन्मूलन का जो कानून था, जो विधेयक था, वह खुद चौधरी चरण सिंह ने बनाया था। उनके मन में चूंकि दर्द था, पीड़ा थी किसानों के बारे में और खास करके गरीब किसानों के प्रति, इसलिए काश्त करनेवाला कोई भी क्यों न हो, उसके अधिकारों को चौधरी चरण सिंह ने इन कानूनों में सुरक्षित रखा।"

मैंने ऊपर कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि चौधरी चरण सिंह भारत के अल्पकालिक प्रधानमंत्री बने। उसी तरह क्षेत्रीय स्तर पर उनकी पहचान भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि अन्ततःउनके रहते भारतीय राजनीति में किसानों और किसानियत का जोर हमेशा बना रहा। आजाद भारत की राजनैतिक अर्थनीति के साथ उनका जीवन महत्वपूर्ण रूप से जुड़ा हुआ था। उनका विश्लेषण और मूल्यांकन इसलिए जरूरी है कि उन्होंने 1945 से 1985 तक पर्याप्त और ठोस लेखन कार्य किया। दरअसल चौधरी चरण सिंह के लेखन से अपरिचय के कारण ही शहरी बुद्धिजीवी उन्हें अस्थिर और असंतुलित मानते रहे। चौधरी चरण सिंह एक बुद्धिजीवी भी थे, इस सच्चाई को हमेशा झुठलाने की कोशिश होती रही है। बायर्स जब उन पर काम करने भारत आए और उन्होंने यहां के शहरी-बुद्धिजीवियों से उनकी पुस्तक "इकॉनामिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया" का जिक्र किया तो उन्हें जवाब मिला कि यह पुस्तक चौधरी चरण सिंह ने खुद नहीं लिखी होगी, किसी अन्य से लिखवाई होगी। पॉल ब्रास, जिसने चौधरी चरण सिंह को सहानुभूति पूर्वक समझने का प्रयास किया है, ने 1965 में कहा "राजनीति में चौधरी चरण सिंह सटीक रूप से बुद्धिजीवी नहीं है। परन्तु वे बारीक बुद्धि वाले सुपठित व्यक्ति हैं और अपनी बौद्धिकता को उन्होंने यू.पी.की कृषि मूलक समस्याओं के अनवरत अध्ययन में लगाया है।" लेकिन वह वास्तविक अर्थो में एक महत्व के बुद्धिजीवी थे। उन्होने अपने लेखन के जरिये विश्लेषण और समाधान का सशक्त मेल प्रस्तुत किया। वे ऐसी खासियत से युक्त थे जिसके आधार पर वे राजनैतिक कर्म के साथ बौद्धिकता का समन्वय करके विचारों का सहज सम्प्रेषण कर सकते थे। संगत और व्यापक विचारों के आधार पर उन्होंने ग्रामीण भारत की प्रकृति को दर्शाते हुए उस रास्ते को चौड़ा किया जिस पर उनके अनुसार ग्रामीण भारत को अग्रसर होना चाहिए। वास्तविकता यह है कि 40 सालों में फैले उनके तर्कों की एकतानता और संगति अद्भुत है। वस्तुतः वे आजीवन बड़े उद्योगों और व्यापारियों की प्रभुत्वशाली धारा, जिसके पुरोधा नेहरू थे, को चुनौती देने में लगे रहे।

अपने आरम्भिक राजनैतिक जीवन से लेकर अंत तक वे कृषि सुधारों और किसानों की समस्याओं के लिए लड़ते रहे। इंदिरा गांधी के आने से भारतीय राजनीति में लफ्फाजी का दौर शुरू हुआ, लेकिन चौधरी चरण सिंह की सोच और आचरण की एकरूपता बेमिसाल थी। आश्चर्य है कि उनके पीछे इतने लोग थे लेकिन उनके ईमान ने उन लोगों को कभी भी बरगलाना गवारा नहीं किया। मुख्यतः उनकी नीतियां भूमि सुधारों और देश की अर्थव्यवस्था के पक्ष को लेकर थीं। वे कभी भी अपनी इन नीतियों में द्वैधग्रस्त नहीं रहे। मधु लिमये ने जनता पार्टी के टूटने के कारणों में एक कारण यह भी गिनाया है कि मोरारजी देसाई व्यापारियों के हित साधना चाहते थे और चौधरी चरण सिंह किसानोन्मुखी अर्थव्यवस्था पर बल दे रहे थे। इससे दोनों के बीच तनाव पैदा हुआ। 1980 के आम चुनाओं में भी उनकी घोषणा स्पष्ट थी

कि यदि उनकी सरकार बनती है तो उद्योगपतियों को नुकसान उठाना लाजिमी है।

फरवरी 1937 को चौधरी चरण सिंह को यूनाइटेड प्रोविंसेज की विधान सभा के लिए मेरठ जिले के छपरौली चुनाव क्षेत्र से चुना गया। किसानों के सक्रिय प्रतिनिधि के रूप में उनका जीवन इसी बिन्दु से शुरू हुआ। तब से लेकर 1977 तक वे उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य बने रहे। 1951 से 1967 तक(1959-60 की अल्प अवधि को छोड़कर) वे राज्य मंत्रिमंडल के महत्वपूर्ण सदस्य बने रहे। पहली अप्रैल 1967 को उन्होंने 17 साथियों के साथ कांग्रेस छोड़ दी। 3 अप्रैल 1967 के दिन उन्होंने यू.पी.के मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की और 1968 तक पद पर बने रहे। 1968 में बी.के.डी.का गठन किया, जो 1969 के चुनावों में 98 सीटें जीत कर प्रमुख विरोधी पार्टी के रूप में उभरी। 1970 में वे दूसरी बार संयुक्त सरकार के मुख्यमंत्री बने। उसके बाद 1977 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा में विरोधी दल के नेता बने रहे। 29 अगस्त 1974 को भारतीय लोकदल का गठन किया जिसमें बी.के.डी.,स्वतंत्र पार्टी के प्रमुख हिस्से,संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, उत्कल कांग्रेस, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल,किसान मजदूर पार्टी और पंजाबी खेती-बाड़ी जमींदारी यूनियन शामिल हुए। भालोद का 1977 में जनता पार्टी में विलय हुआ और उसी वर्ष वे छठी लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। मार्च 1977 से जून 1978 तक जनता सरकार में गृहमंत्री रहे। जनवरी 1979 से जुलाई 1979 तक वित्त मंत्री। उनके 77वें जन्म दिन, 23 दिसम्बर 1978 को दिल्ली में लगभग 10 लाख किसानों की रैली हुई। राजनैतिक लिहाज से यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि इसके माध्यम से खाते-पीते किसानों ने अपना वर्चस्व प्रदर्शित किया और राष्ट्रीय स्तर पर चौधरी चरण सिंह की विचारधारा को अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हुआ। 1979 में जनता पार्टी का विभाजन हुआ। उसी साल जुलाई में कांग्रेस की सहायता से वे प्रधानमंत्री बने।

चौधरी चरण सिंह का यह लम्बा सक्रिय राजनैतिक जीवन सहज सत्ता की भूख से परिचालित नहीं था। सत्ता वे चाहते थे, लेकिन भोग के लिए नहीं बल्कि गलत लीक पर जा पड़ी भारत की राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था को सही रास्ते पर लाने के लिए। वे एक दृष्टि सम्पन्न राजनीतिज्ञ थे। वह हर हालत और हर हैसियत में कृषि उन्मुख अर्थ-व्यवस्था लागू करने की कोशिश करते रहे। उनके समस्त वैधानिक प्रयासों का जायजा लें तो यह बात स्पष्ट होती है। उनका पहला वैधानिक कार्य किसानों के पक्ष में व्यापारियों के प्रति लक्षित था। 31 मार्च और 1 अप्रैल 1938 को उन्होंने दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में "एग्रीकल्चरल मार्केटिंग "(कृषि विपणन) पर लेख लिखा। उसी साल बाद में उन्होंने प्राइवेट मेम्बर की हैसियत से यू.पी. विधान सभा में "एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट्स बिल" पेश किया, जिसके तहत व्यापारी की खूंखार प्रवृत्ति के खिलाफ उत्पादक के हितों की रक्षा का विधान था। उनका यह आरम्भिक वैधानिक प्रयास सफल नहीं रहा। यू.पी. में ऐसा बिल 1964 में जाकर पास हुआ। इस बाबत

उनका कथन है कि 1938 और 1964 के बीच किए गए उनके प्रयासों को कांग्रेस और सरकार के उच्च स्थानों पर बैठे निहित स्वार्थी तत्वों ने सफल नहीं होने दिया। यह सही है। व्यापारी आज तक शक्तिशाली ढंग से संगठित है और प्रभावी तरीके से उनका प्रतिनिधित्व हुआ है। 1939 में उन्होंने महाजन विरोधी ऋण मुक्ति अधिनियम तैयार करके पेश किया। इस बार उन्हें ख्याति भी मिली और सफलता भी। यह चौधरी चरण सिंह की दृढ़ इच्छा शक्ति का ही परिचायक है कि उन्होंने उत्तर प्रदेश से जमींदारी प्रथा का खात्मा कराया और अन्य कृषि सुधारों को लागू कराया। इस विषय में अर्थशास्त्री डब्ल्यू.ए. लेडजिन्स्की ने 1963 में योजना आयोग को दी गई अपनी रिपोर्ट में लिखा था "उत्तर प्रदेश को छोड़कर देश के अन्य किसी भी भाग में जमींदारी प्रथा समाप्त नहीं हुई है और किसानों को उनकी काश्त की जा रही जमीनों के मालिकाना हुकूक नहीं दिए गए हैं।.....केवल उत्तर प्रदेश में एक सुविचारित और व्यापक कानून बना है और कारगर ढंग से लागू किया गया है.....भारत में बहुत से अच्छे कृषि सुधार कानून बेजान ही रहे, लेकिन उत्तर प्रदेश में यह लागू भी हुए और इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियां भी रहीं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि करने की इच्छा हो तो यह काम किया जा सकता है।" यह रिपोर्ट राष्ट्रीय नेता का पट्टा पहनने वाले नेताओं की वास्तविकता का अच्छा खुलासा करती है। 1953 में उन्होंने टुकड़ों में बंटे खेतों को एक जगह करने के लिए चकबंदी की व्यवस्था की। यू.पी. में प्रस्तावित भूमि कर लगान का उन्होंने डटकर विरोध किया जिसकी आवाज केन्द्रीय सरकार और योजना आयोग तक पहुंची। वे किसानों से अनाज वसूली के भी विरोधी थे। इस मुद्दे पर उन्होंने केन्द्रीय सरकार की नीति को पूर्णतः न मानकर किंतु दबाव के तहत बीच का रास्ता अपनाया था। सामूहिक खेती के मुद्दे पर नेहरू के साथ उनका विवाद जग जाहिर है। भूस्वामित्व और खेतों पर किसानों द्वारा किए जाने वाले श्रम को वे उनकी स्वतंत्रता और सृजनशीलता से जोड़कर देखते थे। सामूहिक खेती के विरोध में प्रस्तुत उनके तर्क भारतीय सन्दर्भ में विलक्षण ताजगी और प्रभाव लिए थे। जनता पार्टी की सरकार बनने पर आर्थिक नीति तय करने वाली समिति के चौधरी चरण सिंह अध्यक्ष थे। उन्होंने कृषि क्षेत्र पर अधिक पूंजी लगाने के लिए समिति को तैयार किया। 1979 में वित्त मंत्री के नाते उन्होंने अपना बजट प्रस्तुत किया, जिसे याद कर शहरी बुद्धिजीवयों का जायका आज भी कड़वा हो जाता है। लेकिन पिंग के अनुसार उस बजट में "जनता की सांस और धरती की सुगंध व्याप्त थी।"मधु लिमये लिखते हैं "चौधरी चरण सिंह ने वित्तमंत्री के नाते जो बजट पेश किया था, उसमें उन्होंने एक झटके में जनता पार्टी की आर्थिक नीति के इस मुद्दे को लागू किया।" जाहिर है चौधरी चरण सिंह जनता पार्टी में अपनी घटक पार्टी के सर्वाधिक सांसद होने के बावजूद महज पद प्राप्त करने के लिए नहीं सक्रिय थे, जैसा कि बिना सोचे-समझे उन पर आरोप लगा दिया जाता है। वे देश की

अर्थव्यवस्था को किसानों के हित में मोड़ना चाहते थे। 1937 से लेकर अंत तक, उनके इस प्रयास में कभी भी शिथिलता देखने को नहीं मिली। उन्होंने सार्वजनिक रूप से सदैव यह इजहार किया कि वे गांधी को अपना पथ-प्रदर्शक मानते हैं। उनकी पुस्तक "भारत की आर्थिक नीति"का उप-शीर्षक है, "गांधीवादी रूपरेखा" जाहिर है कि गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त ने उन्हें परेशान किया होगा। उन्होंने 1942 में गांधी के साथ लुई फिशर के साक्षात्कार को उद्धृत किया और निष्कर्ष निकाला। "उनके सिद्धान्त के अनुसार ट्रस्टी लोगों ने गलत व्यवहार किया है। अतः उन्हें हटा देना चाहिए।" गांधी का नाम, अपने परिवार को देश की सत्ता सम्भालने वाला सुस्थापित वंश बनाने के लिए इस्तेमाल करने वाले नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी से अधिक स्पष्ट पहचान गांधी को लेकर चौधरी चरण सिंह की थी।

दरअसल शहरी बुद्धिजीवी चौधरी चरण सिंह को समझ नहीं पाए कि उन्हें किस रूप में देखा जाए। राष्ट्रीय मंच पर उभरते हुए वे किसानों की अपार संख्या के साथ शहरी भारत को आक्रांत कर रहे थे। इस शहरी भारत की सोच और आचरण, रीतियां भारत की ग्रामीण सभ्यता से संवाद करना नहीं चाहतीं। इसे अपने ही देसीपन से परहेज है। इसी परहेज ने चौधरी चरण सिंह को उपेक्षित बनाए रखा।

57

सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित व्यक्तित्व

राम नरेश यादव*

आज 47 वर्ष की स्वाधीनता के पश्चात् जब यह प्रश्न उठता है कि देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बाद कौन सा नेता था, जिसने अपने जीवन में किसानों की आवाज को बुलन्द किया, ग्रामीण भारत के उत्थान की बात की, खेतिहर मजदूरों तथा श्रमिकों के शोषण एवं उत्पीड़न की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया, देश के दारिद्र का चित्रण किया, श्रम को महत्व देकर भारत के विकास का पथ प्रशस्त किया, अशिक्षित तथा अन्धविश्वास पर जिन्दा रहने वाले करोड़ों दबे-थके लोगों को सम्मान के साथ जिन्दा रहने का भाव पैदा कर उन्हें राजनीति से जोड़ने का काम किया, हस्त-शिल्प, कुटीर उद्योग एवं कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास को गांवों के विकास से जोड़ कर देश को नई दिशा देने का काम किया एवं आजीवन मूल्य आधारित राजनीति की,तो एक ही उत्तर मिलता है- वह थे चौधरी चरण सिंह।

किसानों के लिए गौरव की बात है कि एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेकर अपने परिश्रम, लगन,तपस्या, निष्ठा तथा सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ आस्था के बल पर वह गांव की झोपड़ी से चलकर दिल्ली की सर्वोच्च सत्ता तक पहुंचे थे।

वकालत के पेशे में आने के साथ ही चौधरी साहब ने राजनैतिक जीवन का श्रीगणेश किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया। अनेक बार जेल जाकर, एक कर्मठ स्वाधीनता सेनानी के रूप में राष्ट्र की दासता की बेड़ियां तोड़ने में योगदान दिया था। वह युग था मातृभूमि की बलि वेदी पर अपने को न्यौछावर करने का। उसमें चौधरी चरण सिंह एक सच्चे सत्याग्रही तथा आन्दोलनकारी के रूप में खरे उतरे। वह भारत माता के एक महान सपूत और सच्चे स्वाधीनता सेनानी थे। मेरठ तो सन् 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति का अगुआ रहा है। यहां से स्वतंत्रता की जो चिंगारी फूटी थी, वह कभी दबी

---

* उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री

नहीं। आजादी की उस चिंगारी को बढ़ाने का काम मेरठ के इस सपूत न भी किया।

स्वाधीन भारत की रचना एवं निर्माण के लिए उनका एक स्वप्न था, जो महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित था। साध्य एवं साधन की पवित्रता तथा सादा जीवन एवं उच्च विचार जैसे मूल मंत्र को उन्होंने अपने जीवन में उतारा था।

उन्होंने पार्लियामेन्टरी सेक्रेट्री, मंत्री, मुख्यमंत्री तथा भारत सरकार के वित्तमंत्री, गृहमंत्री, उप-प्रधानमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री के पद तक को सुशोभित करते हुए अपनी योग्यता का परिचय दिया। उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने अपनी राजनीति को कुलषित नहीं होने दिया, जो अपने में एक महत्वपूर्ण बात है तथा राजनीति करने वाले युवकों के लिए अनुकरणीय है। उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन कानून बनाकर उन्होंने भूमिहीन किसानों के लिए जो काम किया, वह उनका ऐतिहासिक कार्य है, क्योंकि आज भी कुछ प्रदेशों में जमींदारी की परम्परा कायम है। पटवारियों,जो राजस्व अभिलेख का कार्य करते थे एवं जिनमें परम्परागत तौर पर एक ही समुदाय के लोग चले आ रहे थे, द्वारा प्रदेश व्यापी हड़ताल किये जाने पर उन्होंने उस पद को ही समाप्त कर दिया एवं उनका नामकरण लेखपाल कर दिया। इस निर्णय से पूरे प्रदेश में कई हजार नियुक्तियां हुई जिनमें हर वर्ग के लोगों को स्थान मिला। यह श्रेय चौधरी साहब को ही जाता है।

छठे दशक के उत्तरार्द्ध में तत्कालीन परिस्थितियों का आंकलन करते हुए उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर भारतीय क्रांति दल का गठन किया एवं संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, जनसंघ की मिली-जुली सरकार का प्रदेश में नेतृत्व किया। परन्तु वह संविद सरकार कुछ ही महीनों में गिर गई।

चौधरी साहब में दल चलाने की क्षमता थी, विश्वास था, इसलिए अपने आत्मविश्वास के बल पर किसानों, पिछड़ों तथा दलितों में प्रिय रहे एवं लगभग 50 वर्षों से ऊपर राजनीति में छाये रहे।

आपात स्थिति में वह नजरबन्द रहे। तत्पश्चात् जनता पार्टी के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही। 1977 में हुए चुनाव के परिणाम स्वरूप केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी, उसमें वह गृहमंत्री एवं उप-प्रधानमंत्री बने। सरकार गिरी और जनता पार्टी में विघटन हुआ। उन्होंने जनता दल(एस) का गठन किया तथा प्रधानमंत्री बने। बाद में उन्होंने पुनः लोकदल के नाम पर दल का नेतृत्व किया।

1977 में उत्तर प्रदेश में मुझे मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपे जाने का श्रेय स्व.चौधरी साहब एवं स्व. राजनाराण जी को है। नेताजी ने मेरे नाम का प्रस्ताव उनके सामने विचारार्थ रखा था, जिस पर चौधरी साहब ने अपनी मुहर लगाई। यदि चौधरी साहब अपनी स्वीकृत नहीं देते तो मेरे जैसे छोटे कार्यकर्ता को उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य का मुख्यमंत्री बनने का गौरव कभी प्राप्त नहीं होता। उस कुर्सी पर बैठने के पश्चात् मैंने राष्ट्रपिता बापू के आदर्शों पर चल कर आचार्य नरेन्द्र देव,

डा. राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण जैसी महान विभूतियों से प्रेरणा तथा शिक्षा लेकर एवं स्व. चौधरी साहब की सादगी एवं ईमानदारी को हृदयंगम कर किसानों के दामन पर दाग नहीं लगने दिया। आज भी मुझे इस बात का गर्व है और मैं समझता हूं कि यही मेरी पूंजी है।

किसानों के प्रति उनके मन में बहुत दर्द था। वे कृषि को प्राथमिकता देने की बात करते थे तथा उनका नारा था "देश की समृद्धि का रास्ता गांवों और खेतों से होकर गुजरता है।" गांधी जी की अर्थनीति की पूरी छाप उनके मस्तिष्क पर थी। गांधी जी ने कहा था "अगर कंगाल भारत में रह रहे भूखे भारतीयों की तस्वीर देखनी हो, तो उस 80 प्रतिशत आबादी की बात सोचनी चाहिए, जो खेतों में काम करती है, जिसके पास साल में करीब चार महीने तक कोई धन्धा नहीं होता और इसलिए जो लगभग भुखमरी की जिन्दगी जीते हैं।" एक अवसर पर उन्होंने यह भी कहा था कि "हर एक कृषि प्रधान देश को ऐसे एक पूरक उद्योग की जरूरत होती है, जिससे किसान अपने अवकाश के समय का उपयोग कर सके।" इसीलिए वे जहां खेती में पैदावार की वृद्धि कर, किसान को उसके उत्पाद का उचित मूल्य दिलाने की बात करते थे, वहीं कृषि पर आधारित उद्योगों के द्वारा गांवों का और अन्ततः सारे देश का विकास भी चाहते थे।

वह कभी-कभी गांव की गरीबी देखकर बहुत भावुक हो उठते थे। मुझे याद आता है एक प्रसंग, जब वह गया(बिहार) में लोकदल की राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक के पश्चात् सभी नेताओं के साथ राजगृह देखने के लिये गये। वहां एक वृद्धा को उन्होंने गर्म पानी के सोते पर स्नान करते देखा। वृद्धा ने आधी धोती पहन रखी थी, आधी हाथ में लिये थी, ताकि नहाने के बाद उस आधी सूखी धोती से अपना तन ढांप सके। जाहिर था, उसके पास केवल एक ही धोती थी। यह दृश्य देख वे द्रवित हो उठे और क्षण भर स्तब्ध रह कर सोचते रहे। बाद में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "देखा! यह स्थिति है भारत में गरीबी की।"

चौधरी साहब पक्के आर्यसमाजी थे। उनकी महर्षि दयानन्द में अटूट श्रद्धा थी। उनका सामाजिक दर्शन इस बात से जुड़ा था कि सामाजिक विषमता, जिसका आधार जाति है, समाप्त होनी चाहिए। उनका विचार डा. राम मनोहर लोहिया के इस विचार से मेल खाता था कि हमारे देश का सबसे अधिक नुकसान जाति प्रथा से हुआ है। इसके कारण ही हमारा देश गुलाम होता रहा है, क्योंकि समाज के पिछड़े तबके विशेष रूप से खेतों में काम करने वाले किसान एवं मजदूर, देश पर आक्रमण के समय भी शस्त्र नहीं उठा सकते थे, क्योंकि शस्त्र उठाना मात्र क्षत्रियों का काम था। सरकारी सेवाओं में उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह का प्रस्ताव रखा था। सारे कार्यक्रमों तथा सम्मेलनों एवं शिविरों से इसका उद्घोष किया था। वह जाति प्रथा को भारतीय समाज के लिए कोढ़ समझते थे

बाबू जगजीवन राम इस देश की राजनीति में प्रमुख स्थान रखते थे। मैंने सोचा था कि यदि चौधरी साहब एवं बाबू जी एक दूसरे के नजदीक आ जायें एवं मिलजुलकर काम करना आरम्भ करें, तो निश्चित रूप से दोनों का जनाधार एक नई सामाजिक क्रांति लाने की दिशा में सार्थक कदम हो सकता है। यह कार्यकर्ताओं की मांग भी थी। मुझे सन् 1982 का वह दिन स्मरण आता है, जब बनारस सेन्ट्रल जेल में डेढ़ माह तक मैं अपने लगभग 300 साथियों के साथ बन्द था। वहां मुझसे इलाहाबाद एवं वाराणसी से, सामाजिक आन्दोलनों से जुड़े काफी लोग मिले एवं उन्होंने आग्रह किया कि "हम मुगलसराय (वाराणसी) में एक विशाल सम्मेलन करना चाहते हैं। उसमें चौधरी साहब के साथ बाबूजी को भी आमंत्रित करना चाहते हैं। हम गये थे लेकिन दोनों नेता एक साथ आने को तैयार नहीं हैं।" अक्टूबर में जब मैं जेल से रिहा हुआ, तो दिल्ली आया और इन नेताओं से मिला। दोनों को अनुनय-विनय कर वाराणसी जाने के लिए राजी कर लिया। दोनों उस सम्मेलन में गये। वहां बहुत गर्मजोशी के साथ दोनों नेताओं का स्वागत हुआ। उसके पश्चात् दोनों नेतागण बहुत नजदीक आये। इसका जन–मानस पर बहुत प्रभाव पड़ा किन्तु किन्हीं कारणों से एक साथ दोनों नेता चल नहीं सके।

जब चौधरी साहब सरकार से अलग कर दिये गये, तो सन् 1978 में उनके अनुयायियों ने उनके 77 वें जन्म दिवस के अवसर पर, दिल्ली में वोट क्लब पर एक ऐतिहासिक रैली करने का निश्चय किया। उस समय किसानों में कितना उत्साह तथा उनके प्रति कितना प्यार था, यह उस ऐतिहासिक रैली में देखने को मिला। उस अवसर पर किसानों ने उन्हें जहां लाखों रुपये भेंट किये, वहीं उनके जय-जयकार के नारों ने पूरी दिल्ली को गुंजा दिया। उन्होंने "किसान ट्रस्ट" के नाम से एक ट्रस्ट कायम किया है, जो उनके विचारों को प्रतिपादित करने में लगा है।

मुझे वह दिन भी याद है जब वह सरकार से बाहर थे और सूरजकुंड में स्वास्थ लाभ कर रहे थे। वहां मैं उनसे मिलने गया था। वे काफी अस्वस्थ थे। जब मैं उनसे मिलकर बाहर आया तो मस्तिष्क में एक बात आई कि इस घड़ी में इनकी मनोवैज्ञानिक ढंग से स्वस्थ होने में मैं भी सहायता करूं। मैंने उन्हें अपना त्याग-पत्र सौंपने का निश्चय किया। तत्काल मैंने त्याग-पत्र लिखा एवं पुनः उनके पास गया तो उन्होंने कहा कि इतनी जल्दी फिर कैसे वापस आ गये। मैंने उन्हें लिफाफा दिया और कहा कि मेरा मुख्यमंत्री पद से त्याग-पत्र इस लिफाफे में हैं। आप जब चाहें, इसे इस्तेमाल कर सकते हैं। वह बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में थे। उन्होंने कहा कि इसकी क्या आवश्यकता है। उन्हें पत्र देकर मैं फिर चला आया।

आज चौधरी साहब नहीं हैं किन्तु उनका जीवन, आचार-विचार संघर्ष भरी राजनैतिक यात्रा सामने है, जिससे लोगों को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

58

रोजगार-परक व्यवस्था के पक्षधर

कैलाश नाथ सिंह*

चौधरी चरण सिंह का जन्म मध्यवर्गीय किसान परिवार में हुआ था। वे सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। श्वेत खादी वस्त्रों में स्वस्थ शरीर, सौम्य-गम्भीर चेहरा और उनकी चमकती आंखें जिनमें करुणा और दृढ़ता एक साथ परिलक्षित होती थीं, प्रत्येक मिलने वाले को अनोखे आकर्षण में बांध लेती थीं।

बचपन में मिले संस्कार निरन्तर मानव जीवन को निर्देशित, प्रेरित और गन्तव्य की ओर बढ़ने के लिए ऊर्जा तो प्रदान करते ही हैं, उसे अनुशासित, संयमित और निष्ठावान भी बनाते हैं। उनकी आस्था और विश्वास उसे ईमानदारी और परिश्रम से कर्तव्य पालन की प्रेरणा देते हैं और उसका व्यवहार एक विशाल जनसमूह को प्रभावित, प्रेरित और अपने विचारों का अनुगामी बनाने में सफल होता है।

चौधरी चरण सिंह जी के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी थे। बचपन से ही उन्हें आर्य समाजी संस्कार प्राप्त हुए थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों व सुधार आन्दोलन ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया था। वास्तव में उनके क्रांतिकारी विचारों की पृष्ठभूमि आर्य समाज द्वारा तैयार हुई थी, जिसने उन्हें महान देशभक्त, राष्ट्रवादी एवं मातृभाषा-अनुरागी बना दिया था। आर्य समाज के समाज सुधार आन्दोलन ने उनके मन में भी जातीय भेदभाव व अस्पृश्यता के उन्मूलन की प्रेरणा जागृत की थी। वह जीवन पर्यन्त जातीय भेदभाव को दूर करने के प्रयास में लगे रहे।

1921 में जब वह आगरा कालेज के छात्र थे, उन्होंने एक बाल्मीकि के साथ भोजन ग्रहण किया था। गाजियाबाद में उन्होंने एक हरिजन को ही अपना रसोइया नियुक्त किया था। साप्ताहिक यज्ञों में भी हरिजन और पिछड़ी जाति के लोगों को वे सदा आमंत्रित करते थे।

---

* भूतपूर्व सांसद

जातीय भेदभाव को कम करने के लिए ही उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित किया। उनकी कथनी और करनी में हमेशा साम्य रहा।उन्होंने अपनी पुत्री और निकट सम्बंधियों को अन्तर्जातीय विवाह के लिए प्रोत्साहित कर यह सिद्व कर दिया कि जो कुछ वह दूसरों को सिखाना चाहते थे, उसे अपने जीवन में उतार चुके थे। उन्होंने बड़ौत (मेरठ) में मुख्य अध्यापक तथा जिला बुलन्दशहर के जाट कालेज का प्रधानाध्यापक का पद इसलिए ठुकराया था, क्योंकि इन संस्थाओं का नामकरण जाति विशेष का सूचक था।

चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की राह में सबसे बड़ा अवरोध जातिवाद को मानते थे, क्योंकि जातिवाद व्यक्ति के दृष्टिकोण को संकुचित और निष्ठा को खोखला करता है। इस संकीर्णता को दूर करने के लिए उनका प्रथम कदम था कि शिक्षण संस्थाएं जो बालक के जीवन आदर्शों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, में जातीय भेदभाव को दूर किया जाए। इसलिए उन्होंने उन समस्त शैक्षणिक संस्थाओं की अनुदान-राशि रोकने की मांग की, जो किसी जाति विशेष के नाम से चल रही थीं।

इससे पूर्व भी चौधरी चरण सिंह ने अप्रैल 1939 में कांग्रेस विधायक दल के समक्ष एक प्रस्ताव रखा था कि लोक सेवा तथा शैक्षणिक संस्थाओं में हरिजन प्रत्याशी बिना किसी भेदभाव के प्रवेश प्राप्त करें तथा अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को सेवाओं में वरीयता दी जाए। 22 मई 1954 को एक पत्र के माध्यम से उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि संविधान में इस आशय का संशोधन किया जाए कि भविष्य में केन्द्र या राज्य में किसी भी नौजवान को "राजपत्रित पद" पर उस समय तक प्रविष्ट नहीं किया जायेगा, जब तक उसने अपनी जाति के बाहर किसी अन्य जाति में (या अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषाई से) विवाह किया होने या करने की इच्छा व्यक्त न की हो।

चौधरी चरण सिंह महिलाओं के समान अधिकार और भावनात्मक स्वाधीनता के पक्षधर थे। नारी की रक्षा वह उतनी ही महत्वपूर्ण समझते थे, जितनी कि देश के अन्य कमजोर वर्गों की। वह दहेज प्रथा के भी विरोधी थे। यही कारण है कि उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह आर्य समाज पद्धति से बिना दहेज लिये सम्पन्न करवाया। वह विवाह में वर-वधू की सहमति के भी पक्षपाती थे। नारी पर किये गये अत्याचार वह सहन नहीं कर सकते थे। बागपत काण्ड(माया त्यागी काण्ड) में एक स्त्री पर पुलिस द्वारा किये गये अत्याचार के विरोध में उन्होंने सत्याग्रह का आवाहन किया था और उनके निर्देश पर ही उनके समर्थकों ने नारी सुरक्षा और सम्मान के लिए सत्याग्रह किया और हजारों की संख्या में जेल गये ।

समाज में बढ़ते हुए नशा-व्यसन के भी वह विरोधी थे और किसी भी तरह के नशे की आदत को वैयक्तिक और सामाजिक उन्नयन में बाधा मानते थे, क्योंकि

नशा विवेक को कुंठित करता है एवं व्यसनी को पथभ्रष्ट। इसलिए चौधरी चरण सिंह चाहते थे कि सरकारी स्तर पर इसे रोकने के लिए कड़े कानून बनाये जायें तथा इस व्यसन में फंसे लोगों के सुधार के लिए पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जाएं।

चौधरी चरण सिंह समाज के दलित और शोषित वर्ग के उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। उन्हें उन्नति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों, इसके लिए विभिन्न राजकीय सेवाओं में उन्हें विशेष वरीयता देने या उनके लिए आरक्षण की व्यवस्था का सदा समर्थन किया। "मण्डल आयोग" के गठन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण और सराहनीय थी।

"देश की गरीबी का उन्मूलन कृषि की समृद्धि के बिना नहीं हो सकता। उन्नत कृषि ही देश की अर्थव्यवस्था के उत्कर्ष का मार्ग है", उनके इन शब्दों से भलीभांति स्पष्ट हो जाता है कि उनका दृढ़ विश्वास था कि ग्राम्य प्रधान भारत में प्रजातंत्र का सपना तब तक स्थाई रूप से साकार नहीं हो सकता, जब तक कि धरती पर पसीना बहाने वाले किसान के अधिकार और उन्नति के अवसर स्पष्ट न हों।

चौधरी चरण सिंह ने देश की अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था- "कृषिक संरचना के चार उद्देश्य होने चाहिए-अधिकतम उत्पादन, रोजगार की व्यवस्था, न्यायोचित वितरण तथा जनवादी प्रवृतियां।" यह तभी सम्भव हो सकता है जब अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार कृषि की उन्नति हो। चौधरी चरण सिंह का विचार था कि भारत गांवों में बसता है तथा गांवों में छोटी जोत व बिना जोत के लोगों का बाहुल्य है, इसलिए उनकी दृष्टि में ग्रामोत्थान , निम्न वर्ग का उत्थान अथवा देशोत्थान एक दूसरे के पर्याय हैं। इसीलिए उन्होंने "गांवों की ओर चलो"का नारा बुलन्द किया था।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में नेहरू जी ने पाश्चात्य देशों के अनुकरण पर विस्तृत पैमाने पर राष्ट्रीयकृत सहकारी खेती को बढ़ावा देने का प्रावधान किया, परन्तु चौधरी चरण सिंह सहकारी खेती में राष्ट्रीयकृत व्यवस्था के अन्तर्गत विशाल फार्म स्थापित करने के विरोधी थे, क्योंकि इससे जमीन के साथ आदमी का व्यक्तिगत लगाव कम होता है, जिससे उद्यम में शिथिलता की सम्भावना बढ़ जाती है। दूसरे, उत्पादित पूंजी के कुछ हाथों में केन्द्रित हो जाने की भी समस्या बनी रहती है। इसलिए उनका विचार था कि 100 एकड़ से अधिक के विशाल फार्म के बजाए 100 एकड़ भूमि को 2.5 एकड़ के 40 फार्मों में बांट दिया जाए, तो इसमें पूंजी की लागत कम होगी और पैदावार अधिक। इससे भी बड़ी बात यह होगी कि अधिक संख्या में बेरोजगारों को काम मिलेगा। इस प्रकार वह चाहते थे कि खेतिहर अपनी छोटी-छोटी जोतों के मालिक हों और सेवा सहकारी समितियां उन्हें आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा एक दूसरे से जोड़ने की भूमिका निभाएं।

इसी प्रकार वह कृषि में यन्त्रीकरण का समर्थन तो करते थे, परन्तु बड़ी-बड़ी

मशीनों से,बड़े-बड़े फार्मों पर खेती करने के बजाए छोटे-छोटे फार्मों पर छोटी-छोटी मशीनों से खेती करना वह अधिक लाभदायक समझते थे। श्री पी.एस.अप्पू, कृषि एवं भूमि सुधार आयुक्त एवं संयुक्त सचिव,ने अप्रैल 1971 में "सीलिंग ऑन लार्ज होल्डिंग"नामक अपनी रिपोर्ट में छोटी जोतों का समर्थन करते हुए उन्हें कृषि उन्नति के लिए अधिक लाभकारी बताया है।

जनसंख्या वृद्धि के साथ टुकड़ों में विभाजित होते खेत और बिखरी हुई जोतें कभी भी किसान को समुचित लाभ नहीं दे सकतीं। इसलिए उन्होंने चकबन्दी की योजना प्रारम्भ करवायी, जिसमें किसानों के विभिन्न स्थानों पर बिखरे हुए खेतों को दो-तीन चकों में इकट्ठा कर दिया गया। इससे उसे खेती करने में सुविधा हुई, वह व्यर्थ की भाग दौड़ से बच गया। चकबन्दी का एक लाभ यह भी है कि सरकार तथा किसान के बीच सीधे सम्बंध स्थापित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए बस्ती जिले की डुमरियागंज तहसील को लिया जा सकता है, जहां छोटे-छोटे खेतों की बहुलता थी। किसी एक किसान परिवार के औसतन 25 खेत थे, जिनका क्षेत्रफल 300 एकड़ अर्थात एक औसत खेत का रकबा 4 बिस्वा (600 वर्ग गज) के लगभग था। चकबन्दी के बाद, एक परिवार के अधिकार वाले 25 खेतों को दो चकों में बदल दिया गया।

भूमि सुधार और भूमि वितरण सम्बंधी जो कानून, समय-समय पर पारित हुए, उनके पालन में अधिक सतर्कता तथा उन्हें त्वरित गति से लागू किये जाने पर वह बल देते थे, जिससे सुधार कानूनों का समुचित लाभ जोत विहीन शोषित और दलित वर्ग को प्राप्त हो सके और वे अपनी स्थिति तथा देश की अर्थव्यस्था की उन्नति में सहायक बन सकें।

उनके प्रयासों से जमींदारी उन्मूलन अधिनियम पारित हुआ। उन्होंने उसे अविलम्ब लागू करने का प्रयास किया, जिससे भूमि जोतों का खेती करने वालों में समान वितरण हो तथा 50 प्रतिशत व्यक्तियों के पास केवल 9 प्रतिशत भूमि होने की विषमता की स्थिति का अन्त हो सके। जमींदारी उन्मूलन से प्राप्त होने वाले लाभों के प्रति लोग आश्वस्त हो सकें, इसके लिए समय-समय पर अपने भाषण द्वारा सशक्त वैचारिक पृष्ठभूमि तथा समुचित जन-मानसिकता भी तैयार करने का प्रयास किया।

खेतिहर किसानों की भूमि का अधिग्रहण वह उचित नहीं समझते थे, फिर भी यदि किन्हीं अति अनिवार्य परिस्थितियों में भूमि का अधिग्रहण करना ही पड़े, तो वह चाहते थे कि किसान को उचित मुआवजा दिया जाए।

किसानों को शोषण से बचाने, न्यायिक अधिकार व रक्षा प्राप्ति के लिए आवाज बुलन्द करने के लिए वह "किसान संगठन" या "किसान संस्था" के गठन पर बल देते थे। उनके द्वारा स्थापित "किसान संगठन" उनके कृषि प्रधान अस्तित्व का परिचायक था। वर्तमान समय में भी ऐसे स्वतंत्र कृषक संगठन की नितान्त आवश्यकता है, जो देश की आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों में अपना प्रभाव रख सके और ग्रामीण

जनता व किसान को शोषण से बचाते हुए ग्रामोत्थान का मार्ग प्रशस्त कर सके,तभी भारत का समुचित उत्थान हो सकेगा।

चौधरी चरण सिंह भारत की अपार जन शक्ति को उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ना चाहते थे। इसीलिए वह भी महात्मा गांधी की भांति बड़े उद्योगों के बजाए कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल देते थे। परन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं था कि बड़े उद्योग स्थापित न हों। वे केवल इतना चाहते थे कि जिन वस्तुओं का उत्पादन सार्वजनिक क्षेत्र में लघु स्तर पर, कुटीर उद्योगों के माध्यम से हो सकता है, उनके लिए बड़े उद्योग लगाने की अनुमति न प्रदान की जाये। जापान जैसा एशिया का एक छोटा देश अपने लघु स्तरीय उद्योगों के द्वारा त्वरित और अभूतपर्व उन्नति कर सका है तथा विश्व की अर्थव्यवस्था में उसे प्रमुख स्थान प्राप्त है।

चौधरी चरण सिंह रोजगार के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने के समर्थक थे, जिससे कार्य करने के लिए इच्छुक व्यक्ति को कार्य उपलब्ध हो सके। इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण, लघु रोजगार परामर्श समितियों की सुविधा उपलब्ध करवाना सरकारी दायित्व समझते थे। वे ऐसे अनावश्यक सरकारी प्रतिष्ठानों को बन्द करवाने के पक्षपाती थे जो लम्बे अर्से से घाटे पर चल रहे हों या जिनके कारण देश की अर्थव्यवस्था पर विदेशी ऋण का भार बढ़ रहा हो।

चौधरी साहब संचार माध्यमों, विशेषकर आकाशवाणी और दूरदर्शन की स्वायत्त भूमिका को देश की उन्नति में अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण समझते थे। संचार माध्यमों के द्वारा सरकारी योजनाओं, आवश्यक कृषि सूचनाओं, रोजगार सुविधाओं की जानकारी जन-जन तक पहुंचा कर ही वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

अन्ततोगत्वा उनका दृढ़ विश्वास था कि कृषि विकास तथा रोजगार प्रेरक लघु उद्योगों की व्यवस्था ही निर्धनता, बेरोजगारी तथा सामाजिक और आर्थिक विषमता को दूर कर, भारत के भविष्य को उज्जवल बना सकेगी।

59

एक महान व्यक्तित्व : एक आदर्श पिता

वेदवती*

चौधरी चरण सिंह, मेरे पिता का नाम लेते ही मन पर एक छवि चित्र की तरह घूम जाती है, वह है एक शान्त, सौम्य व्यक्ति-सफेद खद्दर की धोती-कुर्ता पहने हुए जमीन पर बैठा हुआ, सामने रखे लकड़ी के डेस्क पर कोई किताब पढ़ रहा है या कुछ लिख रहा है। मैंने जब से होश संभाला, उनको दो रूपों में ही सन्तुष्ट और प्रसन्न देखा—एक उपरोक्त और दूसरा गांव के गरीब किसान व मजदूरों के बीच में बैठकर ध्यान से उनकी बातें सुनना, उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करना। हम भाई-बहनों और अनेक रिश्तेदारों के बच्चों ने उनसे अत्याधिक स्नेह पाया। मारना तो दूर, कभी ऊंची आवाज भी नहीं सुनी उनकी। उनके प्यार की विशेषता थी कि बुआ, चाचा, मामा, मौसी सभी रिश्तेदार और उनके बच्चे, सबको अलग-अलग यही विश्वास था कि हमें उनका विशेष स्नेह प्राप्त है। लेकिन इस अथाह प्यार और स्नेह के साथ ही उन्होंने कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। यह सिद्धान्त दूसरों के लिए ही नहीं, स्वयं के लिए और परिवार के लिए भी दूसरों के समान ही थे।

अपने जीवन की एक घटना बताती हूं, जिसमें उनके व्यक्तित्व और चरित्र के उस पहलू के दर्शन होते हैं, जिससे यह पता चलता है कि उनके कहने और करने में कोई अन्तर नहीं था।

सन् 1950, मई का महीना था। लखनऊ में बहुत गर्मी पड़ रही थी। मैंने पिताजी के पी. ए. को कूलर लगाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब से पूछ लीजिएगा, कहीं मना कर दें। पर मुझे विश्वास था कि मैं उनकी प्रिय बेटी हूं, मेरी बात अवश्य मानेंगे। कूलर घर में आया। उसी शाम को विधान सभा से लौटते ही पिताजी ने पूछा कि यह क्या है और क्यों यहां रखा है ? जब मैंने कहा कि गर्मी बहुत है, कल को कमरे में लग जायेगा, तो आपको भी बहुत अच्छा लगेगा।

---

* चौधरी चरण सिंह जी की पुत्री

उन्होंने कुछ क्षण स्नेह से मुझे देखा और अन्दर जाकर अपने कमरे में व्यस्त हो गये। दूसरे दिन सुबह मुझे आदेश मिला बेटी ! अपना सामान तैयार कर लो और गर्मियों की छुट्टियों में गांव में अपनी दादी जी के पास जाकर रहो और देखो कि गांव के लोग और तुम्हारे रिश्तेदार कैसे रहते हैं। तुम्हें तब पता चलेगा कि गर्मी किसे कहते हैं। मैं दो महीने गांव में रही, जहां बिजली ही नहीं थी और कच्चा घर था।

दूसरी घटना बचपन की है। पिताजी जेल से छूटकर आये थे। हम दिल्ली में डा. स्वरूप सिंह जी के यहां थे। मेरी बड़ी बहिन ने शिकायत करते हुए कहा कि उसके पास दो ही साड़ियां हैं। अम्मा खरीद कर नहीं देती हैं। यह सुनकर उनके चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं आई। प्यार से हंसकर कहा कि बेटी तुम बहुत भाग्यशाली हो। तुम्हारे पास दो साड़ियां हैं। हमारे देश में बहुत सी बेटियां ऐसी हैं, जिन पर एक भी साड़ी नहीं है। इससे पता चलता है कि वे हमेशा देश के गरीबों के बारे में ही सोचते रहते थे; और स्वयं ही नहीं, हमें भी उनसे दूर जाने देना नहीं चाहते थे। हम सब बच्चे हमेशा मोटा खद्दर ही पहनते थे।

सन् 1943-44 की बात है, घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बार-बार जेल जाने से वकालत छूट जाती थी। एक दिन हमारे मुंशी श्री शिवचरण जी ने हमारी अम्मा से कहा कि एक रईस व्यक्ति का मुकदमा है पर चौधरी साहब ले नहीं रहे हैं। आप कह दें तो शायद ले लें। दूसरे दिन पिता जी कचहरी जा रहे थे, तब अम्मा ने जिक्र किया, तो कहने लगे कि हां मुकदमा है पर मैं उसे नहीं लूंगा, क्योंकि वह झूठा है।

जब उत्तर प्रदेश में सभी पटवारियों को हटा दिया गया, तो बहुत से लोग आते थे अपनी नौकरी बहाल करवाने के लिए। तभी कुमायूं की तरफ की, एक पटवारी की पत्नी, अपने बच्चों सहित आई और कहा कि मेरे पति को न हटाइये, हम भूखों मर जायेंगे, हमारे पास और कोई आमदनी का स्रोत नहीं है। उसको फूट-फूट कर रोता देख पिताजी की आंखें भर आईं। वे उसको काफी समय तक आर्थिक सहायता देते रहे। जब इसका कारण पूछा तो कहा कि मुझे इससे व्यक्तिगत सहानुभूति है, इसलिए व्यक्तिगत रूप से सहायता कर रहा हूं लेकिन कानून सबके लिए बराबर है, सबके साथ इसके पति को भी हटाया जायेगा।

सन् 1979 में जब पिताजी प्रधानमंत्री थे, तो रोज की तरह जब हम शाम को उनके निवास स्थान पर गये, तो एक पूंजीपति का नुमाइन्दा पसीना पोंछते हुए उनके कमरे से निकला। जब मेरे पति—डा. जे. पी. सिंह ने पूछा, क्या बात है, तो उसने कहा कि आज मेरे साथ ऐसी आश्चर्यजनक घटना घटी है जो पहले कभी नहीं हुई और न मैंने सुनी थी। पता चला है कि पिछली शाम को वे चौधरी साहब से मिलने गये थे, तो एक अटैची वहां छोड़ गये थे, जिसमें कुछ लाख रुपये थे। आज सुबह पी. ए. का फोन गया कि आपको चौधरी साहब ने बुलाया है और जब वे आये तो

पिताजी ने उनको वह अटैची वापिस देकर कहा कि कल आप इसे भूल गये थे। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार और इस सरकार के भी कुछ नेताओं के पास वह जाते रहे हैं और जब भी उन्हें दुबारा बुलाया गया, तो इसलिए कि जो आप छोड़ गये थे, वह कम है और इस बार भी यही सोचकर आये थे कि मांग ज्यादा की होगी, लेकिन जब वापिस लौटा दिये गये तो वह इस बात से अभिभूत थे कि चलो, आज एक ईमानदार के तो दर्शन हुए, काम न बना, न सही।

इन घटनाओं से पता चलता है कि उनके सिद्धांत अपने और दूसरों के लिए समान थे। ईमानदारी, मेहनत, सादगी का जीवन जीने की प्रेरणा दूसरों को देते थे, तो इन्हीं मूल्यों को अपने जीवन में भी अपनाया। यही कारण था कि उन्होंने कभी किसी का व्यक्तिगत काम नहीं किया, लेकिन फिर भी उनके रिश्तेदार और अनुयायी उनसे कभी नाराज नहीं हुए और प्रयत्न करते थे कि उनके किसी काम से पिताजी की छवि पर आंच न आये।

इन घटनाओं के अलावा और भी अनेक प्रसंग हैं, स्थानाभाव के कारण जिन्हें देना सम्भव नहीं है, पर उद्धृत संस्मरण ही मेरे पिताजी के व्यक्तित्व और चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। अपने पिता सभी बच्चों को प्रिय होते हैं पर वे हमारे सिर्फ पिता ही नहीं, आदर्श-पुरुष थे। हम ही नहीं, सभी रिश्तेदार और मित्र उनका आदर करते थे, पूजा की हद तक। वे हमारे आराध्य थे। सभी उनके बताये रास्ते का अनुसरण करने का प्रयास करते थे। विशेष बात यह थी कि जितना ही कोई व्यक्ति उनके करीब जाता था, उतना ही उनके प्रति आदर भाव बढ़ता था और दूरी कम होती थी।

अपनी असाध्य बीमारी में भी वह हमेशा देश के बारे में सोचते थे। रानी झांसी का गाना गाया करते थे।

60

उन्होंने कमजोर तबकों को निजाम में हिस्सेदारी का एहसास कराया

मुफ्ती मोहम्मद सईद*

चौधरी साहब ने हिन्दुस्तान के किसान-मजदूर के लिए जो सपने देखे थे, वह हम किस तरह पूरे कर पाते हैं, यह सोचने की बात है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा था कि भारत गांवों में रहता है और देश की आबादी का 80 फीसदी हिस्सा गांवों में ही रहता है। दुःख इस बात का है कि आजादी के 47 साल बाद भी आज करोड़ों लोग ऐसे हैं जो गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं। करोड़ों हाथ ऐसे हैं जो काम मांगते हैं लेकिन हमारा निजाम और आर्थिक हालात ऐसे हैं कि हम उन्हें काम नहीं दे सकते हैं। चौधरी साहब ने उन्हीं करोड़ों मजदूर-किसानों की आवाज को बुलन्द करने का काम किया, जो सैकड़ों सालों से हर तरफ से पिछड़े थे। वह उन लोगों की आवाज बने और उनके लिए ताजिन्दगी संघर्ष करते रहे। यही नहीं उन्होंने उन तबकों के लोगों को निजाम में शिरकत करने का एहसास कराया। यही वजह है कि वे तबके उन्हें आज अपना रहनुमा मानते हैं।

हम असली मायने में तभी कामयाब होंगे जब हिन्दुस्तान के किसान को उसकी खून-पसीने की कमाई का, रात दिन मेहनत करके जो सोना पैदा करता है, उसका माकूल दाम मिले। चौधरी साहब के सपने तभी पूरे होंगे जब देश के किसान-मजदूर, गरीब, मेहनतकश इंसान खुशहाल होंगे, उनके सपने पूरे होंगे, गांव-देहात खुशहाली के रास्ते पर बढ़ेंगे। मेरा यह पक्का विश्वास है कि चौधरी साहब के सपनों को पूरा करने में हम किसी भी बड़ी से बड़ी रुकावट की परवाह नहीं करेंगे।

मेरा यकीनन यह मानना है कि गांधी के बाद हिन्दुस्तान के रहनुमाओं में चौधरी चरण सिंह ऐसे रहनुमा थे, जिन्होंने सही ढंग से इस मुल्क की नब्ज को पहचाना।

---

* भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

उन्होंने देश की आर्थिक नीति की उस कमजोरी को पकड़ लिया जिसके चलते हिन्दुस्तान का किसान-मजदूर बदहाली की जिन्दगी जीने को मजबूर है। उन्होंने देश के किसान-मजदूर और सदियों से दबे-थके पिछड़े लोगों की बदहाली को समझा और उनकी बहबूदी के लिए उन्होंने ताजिन्दगी संघर्ष किया। उन्होंने माना कि अगर देश का किसान-मजदूर अपने पैरों पर खड़ा हो जाए, उसे अपना हक मिले तो देश खुशहाल हो जायेगा। यही चौधरी साहब का सपना था जिसे पूरा करने में हम कोई कोर-कसर न छोड़ेंगे। देश के किसान-मजदूर और गरीबों के लिए, उनकी बहबूदी के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ किया, उसके लिए हिन्दुस्तान का किसान-मजदूर और मजलूम ताजिन्दगी कर्जदार रहेगा और अपने रहनुमा को याद करता रहेगा।

61

वह आजीवन किसान ही रहे

रघुवर दयाल वर्मा*

एक सामान्य किसान परिवार में जन्मे चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं, विचार थे। वह एक जाने-माने चिंतक और अर्थशास्त्री भी थे। सच तो यह है कि वह अदम्य साहसी, निर्भीक, कठिन परिश्रमी, दृढ़ निश्चयी, विलक्षण प्रतिभा के धनी और सिद्धान्तों के प्रति अटूट आस्था रखने वाले राजनीतिज्ञ थे। प्रधानमंत्री की गौरवमयी कुर्सी पर बैठकर भी वह अपने आपको सदैव किसान ही मानते रहे। उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी श्री मिश्र ने उनसे मेरे सामने एक बार कहा था कि "चौधरी साहब आपकी धोती और कुर्ते में मैच नहीं है, कुर्ता ज्यादा और धोती उसकी अपेक्षा कम साफ दिखाई देती है।" चौधरी साहब हंसते हुए बोले कि मिश्रा जी - "देखो मैं किसान हूं। किसान ने तो कभी कुर्ता-धोती का मैच नहीं देखा। किसान के संस्कार तो आज भी मेरे साथ हैं। यह जो वर्मा जी आपके साथ बैठे हैं, फिरोजाबाद से विधायक हैं। इनको तो मैंने आज तक कभी मैच के हिसाब से कपड़े पहने ही नहीं देखा है। इनसे पूछो तो मालूम हो जायेगा।" मैंने कहा, "चौधरी साहब ने जैसा भी बताया है, वही हमारी किसान संस्कृति है और उसका ही अनुसरण चौधरी साहब कर रहे हैं।" इसके साथ ही श्री मिश्र जी ने अपने कथन को वापिस ले लिया। यह तो महज एक संयोग था कि यकायक ऐसी बात हुई। यह तो हम सभी जानते हैं कि चौधरी साहब किसान संस्कृति के सच्चे प्रतीक रहे। उनसे हमें यह प्रेरणा लेनी चाहिए।

चौधरी साहब ने कभी जातिवाद को प्रश्रय नहीं दिया और वह जातिवाद के सदैव खिलाफ रहे। वह जातिवाद को कलंक मानते थे। यह मैंने नजदीक रहकर देखा। एक बार लोकदल की दिल्ली में रैली थी। उसके बाद हम उनके निवास पर भी गये। तब उन्होंने कहा कि "वर्मा जी! आओ और यह बताओ कि उत्तर प्रदेश

---

* समाजवादी नेता एवं भूतपूर्व विधायक

में गैहूं ज्यादा बोया गया है या लाहा-सरसों।" मैंने उत्तर दिया कि "चौधरी साहब" बिजली मिलती नहीं, नहरों में पानी नहीं, नलकूप चलते नहीं, गूलें टूटी पड़ी हैं, इन सबके रहते गैहूं में कम से कम चार बार सिंचाई करनी पड़ती है। यही वजह है कि हमारे यहां के किसान लाहा और सरसों ज्यादा बोते हैं, क्योंकि उसमें दो बार के पानी से ही काम चल जाता है। पानी नहीं है तब भी उपज तो अच्छी होती ही है। इस कारण गेहूं का क्षेत्रफल घट रहा है और कैश क्रॉप्स का एरिया बढ़ रहा है।" मेरा इतना कहते ही पास में ही खड़े सांसद चौधरी दिगम्बर सिंह ने कहा कि "चौधरी साहब जहां जाट वहां गैहूं और जहां जाट नहीं, वहां गैहूं नहीं।"

चौधरी साहब इतना सुनते ही आक्रोश में बोले कि जाट की आबादी पूरे देश में 2 प्रतिशत से कम है। उत्तर प्रदेश में आगरा से पूर्व में जाट नहीं है, इस तरह तो तुम्हारे हिसाब से वहां गेहूं होना नहीं चाहिए। तुम गलत हो, तुम लोग सही बात का निर्णय लेने ही नहीं देते हो। तुम तो बस अपने आगे-पीछे जाट ही को देखते रहना, मुल्क तुम्हें नहीं देखेगा। चले जाओ और मुझे बात करने दो।"

हमें दुःख तो इस बात का है कि आज हम सब लोग, जिन्होंने चौधरी साहब के साथ रहकर बरसों इस मुल्क की तकदीर बदलने के लिए संघर्ष किया है,उनके आदर्शों सिद्धान्तों से सबक नहीं लिया। आज राजनीति प्रदूषित हो गई है और अपराधियों का बोलबाला हो गया है और नेता जाति की राजनीति करने लग गये हैं। यदि इनसे छुटकारा पाना है तो चौधरी साहब के आदर्शों पर चलना होगा। ऐसे अनेक प्रसंग मेरे सामने आये, जब चौधरी साहब ने अपराधियों और शराबियों को अपने कार्यालय तक में घुसने नहीं दिया। यदि किसी अपराधी प्रवृत्ति वाले को किसी प्रकार टिकट मिल भी जाता और जब चौधरी साहब को इसकी जानकारी मिलती, तो वह चुनाव सभाओं में मंच से खुलेआम कहते थे कि मेरा फलां उम्मीदवार अपराधी है, इसलिए आप इसे वोट नहीं दें। यह था चौधरी साहब का आदर्श। इस देश के लिए असलियत में महामानव थे वह। ईमानदारी, नैतिकता और सिद्धांत उनके लिए सर्वोपरि था, आज के माहौल में ढूंढे नहीं मिलेंगे ऐसे लोग। वह चिंतक, विचारक और लेखक भी थे। उन्होंने भारत की गरीबी और बदहाली पर कई पुस्तकें भी लिखीं। उनके द्वारा लिखी पुस्तकें देश के लिए मार्गदर्शक से कम नहीं हैं। इन पुस्तकों में उन्होंने देश की गरीबी, बेरोजगारी, जातिवाद, कृषकों तथा खेतिहर मजदूरों की मजबूरी,देश के बिगड़ते स्वरूप,हमारी आर्थिक गुलामी के कारणों का विशद् विश्लेषण किया है। यही नहीं एक सुधार सिद्धांत भी प्रस्तुत किया है। मैं चाहता हूं कि देश का वर्तमान नेतृत्व उनकी आर्थिक नीतियों का अनुसरण करे, तभी देश का विकास सम्भव है और तभी उनका किसान,गरीब,मजदूर, जिनके लिए वह जीवन भर संघर्षरत रहे, खुशहाल होगा। उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

62

एक दृष्टा थे चौधरी चरण सिंह

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी*

नगरों में चौधरी चरण सिंह के विचारों की गहराई एवं व्यापकता से बहुत कम ही लोग परिचित हैं। स्वतंत्रता के बाद, महात्मा गांधी और सरदार पटेल के प्रयाणोपरान्त चौधरी चरण सिंह ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो जवाहर लाल नेहरू द्वारा सोवियत रूस से आयातित समाजवाद के सिद्धान्त को चुनौती देने में सक्षम थे।

नेहरू व चौधरी चरण सिंह में राजनैतिक मतभेद स्पष्ट थे। नेहरू जी देश की अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण चाहते थे जबकि चौधरी चरण सिंह का स्पष्ट अभिमत था कि अर्थ-व्यवस्था का राज्य मार्ग दर्शन एवं सहायता करे, उस पर नियंत्रण नहीं। उनका मानना था कि यदि किसानों एवं लघु उद्यमियों को लाभकारी मूल्यों एवं उचित विपणन द्वारा सरकारी सहायता मिले, तो अर्थव्यवस्था की प्रगति की दर तेज होगी। आज नेहरू जी व चौधरी साहब दोनों ही हमारे बीच नहीं है किन्तु पिछले दशक की घटनाएं चौधरी चरण सिंह की आर्थिक विकास की नीतियों को सर्वथा उचित ठहराती हैं। यही नहीं वह नेहरू-रूस मॉडल,जो हमने अपनाया, को गलत साबित भी करती हैं।

भारी औद्योगीकरण का स्टालिनवादी ढांचा सर्वप्रथम सोवियत संघ ने अपनाया। फिर यूरोप के अन्य देशों ने और अन्ततः चीन और भारत ने भी वही ढांचा अपनाने का काम किया। यह ढांचा वांछित परिणाम देने में असफल सिद्व हुआ। पहले पूर्व यूरोप के देश जैसे हंगरी व पोलेण्ड 1960 में इस ढांचे से अलग हुए। फिर 1970 में चीन ने सोवियत ढांचे को स्थानीय परिस्थितियों में प्रतिकूल पाया और त्याग दिया। सोवियत रूस में भी ग्लासनोस्त(उदारवादी) कार्यक्रम के तहत यह महसूस किया गया कि यह ढांचा वांछित परिणाम देने में सक्षम नहीं रहा। सोवियत ढांचे का तो चौधरी साहब ने 1959 में अविभाजित कांग्रेस के अधिवेशन में भी प्रखर विरोध किया था।

---

* अर्थशास्त्री एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

इस बीच अनेकों देश जैसे जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, सिंगापुर तथा ताईवान आदि ने चौधरी चरण सिंह द्वारा कृषि एवं लघु उद्योग को प्राथमिकता देने वाली नीति को अपनाया तथा दूसरे विश्व युद्ध के विनाश से पूरी तरह उबर गए। यही नहीं वह 1980 तक नव-विकसित देशों की सूची में भी आ गए। वास्तविकता यह है कि आज जापान की प्रति व्यक्ति आमदनी अमेरिका से भी अधिक है जबकि 1950 में वह अमेरिका का दसवां हिस्सा थी।

अतः पिछले चार दशकों का राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय अनुभव यह सिद्व करता है कि आर्थिक विकास का नेहरू-सोवियत ढांचा गलत था, जबकि महात्मा गांधी, सरदार पटेल, चौधरी चरण सिंह की नीतियां देश के लिए सर्वोत्तम सिद्व हुयी हैं। हमारा देश भी आज विकसित देशों की सूची में होता, यदि हमने नेहरू के बजाय चौधरी साहब की नीतियों और सिद्वान्तों को अपनाया होता। आज इस बात पर हर भारतीय देशभक्त को मनन करना होगा। मैं चौधरी चरण सिंह जी के प्रशंसकों, उनके अनुयायी और दलीय कार्यकर्ताओं से आग्रह करता हूं कि वह देश के कोने-कोने में जायें तथा चौधरी साहब की नीतियों का व्यापक प्रचार व प्रसार करें, जो उन्हें जीवन भर प्यारी रहीं।

63

सात्विक और दृढ़ व्यक्तित्व का राजनेता

शिवकुमार गोयल*

लखनऊ की एक शाम। राजधानी दिल्ली से उत्तर प्रदेश के दौरे पर गये हम पत्रकारों का दल तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह जी के बंगले के लॉन में बैठा हुआ था। चौधरी साहब चाहते थे कि मेरठ, बुलंदशहर तथा अन्य स्थानों से उनसे भेंट करने आये कुछ व्यक्तियों से मुलाकात कर, उन्हें विदा करने के बाद वे हमसे बातें करें।

"विश्वंभर, तूने मेरठ से इतनी दूर आने की तकलीफ किसलिये की ?" चौधरी साहब ने सबसे किनारे बैठे हुए एक युवक से पूछा।

"चौधरी साहब, आपके दर्शनों के लिए यों ही चला आया हूं।" उसने कहा तथा कुछ क्षण रुक कर वह बोला, "शराब की दुकान नीलाम होने वाली है। यदि आप किसी से कह दें तो काम हो जाये।"

मैं उनके बिल्कुल पास की कुर्सी पर बैठा ये सब बातें सुन रहा था। चौधरी साहब का चेहरा तमतमा उठा। परन्तु उन्होंने गुस्से को दबाते हुए बहुत आहिस्ता से कहा, "भले आदमी, तुझे और कोई काम नहीं मिला। अब खेती-बाड़ी छोड़कर दलाली करके पैसा कमाना चाहता है। शराब और मुकदमेबाजी ने तुम लोगों का नाश कर डाला और तू मुझसे यह आशा करता है कि मैं तेरे लिए मौत का कुआं खोदने में तेरी मदद करूं ?"

चौधरी साहब के ये शब्द सुनकर तथा उनके लाल हुए चेहरे को देखकर उस बेचारे का वहां से उठना भारी हो गया। वह उनके पैर छूकर वहां से चुपचाप खिसक लिया। इसके बाद उन दर्जन भर ग्रामीणों में से आधे तो उन्हें 'नमस्ते' करके खिसक गये। किसी ने बिजली व पानी की कठिनाई बताई, तो चौधरी साहब ने अपने निजी सचिव से नोट करके तथा तुरन्त कार्रवाई कराने का निर्देश दिया। चाय-पानी व भोजन की बात पूछने के बाद सबको विदा कर दिया।

---

* पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता

वे 1930 में गाजियाबाद में वकालत करते थे। एक बार जब बलात्कार के आरोप में एक युवक का केस उनके पास आया और उन्हें बताया गया कि मामला झूठा है तथा आपस की रंजिश के कारण उस पर यह गम्भीर आरोप लगाया गया है, तो प्रारम्भ में उन्होंने मामला पैरवी के लिए स्वीकार कर लिया। बाद में एक दिन उसी गांव के एक विश्वस्त आदमी से उन्हें यह पता लगा कि उक्त युवक वास्तव में कुख्यात अपराधी है तथा इस प्रकार के अपराधों का आदी है, तो उन्होंने अदालत में मामला पेश होने वाले दिन युवक के आने पर पैरवी करने से स्पष्ट इंकार कर दिया तथा कहा, "मैं किसी बलात्कारी एवं बदमाश को कानून के शिकंजे से छुड़ाने का पाप नहीं कर सकता।" उनके एक साथी वकील ने तर्क दिया, "हमें इन बातों से क्या लेना-देना है।" परन्तु चौधरी साहब अपने निर्णय से टस से मस न हुए तथा उन्होंने एक सप्ताह पहले ली हुई फीस आदि अपने मोहर्रिर से कह कर वापिस करा दी।

इमरजैंसी लागू किये जाने से कुछ माह पूर्व की बात है। मैं 'हिन्दुस्तान समाचार' के प्रबन्ध सम्पादक श्री बालेश्वर अग्रवाल के साथ मेरठ एक कार्यक्रम में गया हुआ था। चौधरी साहब मेरठ के सर्किट हाऊस में ठहरे हुए थे। हम दोनों उनसे भेंट करने पहुंचे। देश की स्थिति पर उनसे बातचीत होने लगी। कम्युनिस्ट पार्टी की अवसरवादी नीति से लेकर कांग्रेस सरकार की नीतियों तक की चर्चा हुई। चौधरी साहब ने मुख्य रूप से 'व्यक्ति-पूजा' पर चिंता व्यक्त की तथा चेतावनी दी कि यदि व्यक्ति पूजा पर नियंत्रण न हुआ तो देश शीर्घ ही 'एक व्यक्ति तथा एक परिवार' की तानाशाही की जकड़ में आ जायेगा। उन्होंने श्री बंसीलाल के कुछ कार्यकलापों की भी चर्चा की। कुछ ही दिन बाद व्यक्ति-पूजा ने श्री संजय गांधी को नेता बना दिया, तो चौधरी साहब की वह चेतावनी मुझे याद आई। उसके बाद तो उनकी अनेक बातें तथा आशंकाएं सत्य होती चली गईं।

1940 के बाद आप स्थायी रूप से मेरठ में रहने लगे और कांग्रेस के कार्यकलापों में पूर्णतः सक्रिय हो गये। उन दिनों प्रसिद्ध गांधीवादी श्री विचित्र भाई मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री थे। वे गांधी आश्रम के भी सचिव थे। आचार्य कृपलानी ने आदेश किया कि जो गांधी आश्रम के पदाधिकारी हैं, वे त्यागपत्र देकर ही सत्याग्रह में भाग लें। व्यक्तिगत सत्याग्रह का दौर दौरा था। कांग्रेस कमेटी का सचिव जेल न जाये, यह कैसे संभव था। क्षेत्र के किसानों को सक्रिय करने की दृष्टि से चौधरी चरण सिंह को जिला सत्याग्रह समिति का मंत्री बनाया गया। 28 अक्टूबर 1940 को वे किसानों के एक बड़े जत्थे के साथ सत्याग्रह करते हुए बन्दी बनाये गये। मेरठ के प्रसिद्ध नेता पं. प्यारेलाल शर्मा, बाबू लक्ष्मीनारायण जी, महाशय प्यारेलाल जी आदि भी मेरठ जेल में उनके साथ थे। उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा हुई तथा जुर्माना किया गया। इस संदर्भ में मजेदार बात यह है कि चौधरी साहब के मकान से उनकी भैंस

कुर्क कर ली गयी, तो कांग्रेसी नेता मास्टर सुन्दरलाल जी ने जिलाधीश श्री बनर्जी के पास जाकर कहा, "भैंस से तो उनके परिवार को दूध मिलता है। उसकी जगह आप चौधरी साहब की लायब्रेरी कुर्क क्यों नहीं कर लेते ?" तब जाकर भैंस को कुर्की से मुक्त किया गया।

वे अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारंभ से ही निर्भीक व स्पष्टवादी रहे थे। डा. सम्पूर्णानंद जी से उनका किसी विषय पर मतभेद हो गया और उन्होंने उन्हें लिखा, "मैं इस विषय में यह मत रखता हूं, यदि आप इससे सहमत नहीं हैं, तो फिर मेरा सहयोग मिलना कठिन ही है।" परिणामस्वरूप वे मंत्रिमंडल से अलग हो गये।

नेहरू जी अत्यंत दबंग प्रधानमंत्री थे। उनके समक्ष किसी भी नेता ने उनके विचारों को चुनौती देने का कभी साहस नहीं किया। किन्तु चौधरी साहब पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने नागपुर में हुये कांग्रेस कार्यसमिति के अधिवेशन में नेहरू जी के सहकारी खेती संबंधी विचारों को अव्यावहारिक बताकर चुनौती दी। उन्होंने तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध किया कि सहकारी खेती में व्यक्तिगत रुचि के अभाव के कारण कृषि उत्पादन गिर जायेगा। उन्होंने आंकड़े दे कर बताया कि निजी भूमि तथा उसके उत्पादन पर निजी अधिकार की भावना ही किसान को धूप व वर्षा की प्रेरणा देती है। उन्होंने इस विषय में आचार्य विनोबा भावे का उद्धरण भी दिया। उनके भाषण के बीच जब कई बार तालियां बजीं तो उन्होंने निर्भीकता के साथ कहा, "ये तालियां स्वयं सिद्ध कर रही हैं कि आप सब मेरे विचारों से सहमत हैं, परन्तु आप में मेरी तरह खुले विचार रखने का साहस नहीं है।"

एक पत्रकार के नाते मुझे चौधरी साहब से अनेक बार मिलने और उनके साथ दौरे पर जाने का अवसर प्राप्त होता रहा। मैंने सदैव यह देखा है कि चौधरी साहब स्पष्टवादी, दो टूक बात कहने वाले तथा किसी भी गलत बात को स्वीकार न करने वाले तेजस्वी नेता थे। अपनी दो टूक बातों तथा किसी गलत व हृदय के विपरीत काम न करने के स्वभाव ने उनके विरोधियों को भी जन्म दिया, परन्तु यह सब अहसास करने के बावजूद उन्होंने कभी अन्य राजनीतिक नेताओं की तरह व्यवहार कुशल बनने, लगी–लिपटी बातें करने तथा सभी को प्रसन्न करने के लिए 'झांसेबाजी' का सहारा लेना स्वीकार नहीं किया। चौधरी साहब का यह स्वभाव प्रारम्भ से ही रहा।

चौधरी साहब गाजियाबाद में प्रैक्टिस के दौरान ही कांग्रेस तथा आर्यसमाज में सक्रिय भाग लेने लगे थे। वयोवृद्ध बाबू शम्भूदयाल मुख्तार उन दिनों उनके निकट के मित्रों में थे। उन्होंने मुझे बताया कि चौधरी साहब तथा वे, कुछ मित्रों के साथ किस प्रकार प्रातः हिंडन नदी पर स्नान के लिए जाया करते थे, किस प्रकार प्याऊ स्थित बगीची पर कभी-कभी कुश्तियां लड़ा करते थे, वे घंटों हिंडन नदी में तैरते, जल का आनंद लेते थे। उनका जीवन शुरू से ही सात्विक तथा नियमित था। बीड़ी,

सिगरेट, हुक्के का व्यसन उन्होंने कभी पास नहीं फटकने दिया, प्रारम्भ से ही अपने जीवन को सादा तथा सात्विक रखा।

गाजियाबाद में उन्हीं दिनों एक एग्जीक्यूटिव अफसर ने किसी स्थानीय लड़की का अपहरण कर लिया तथा इस घटना से नगर में बबंडर मच गया। नगर के संभ्रांत नागरिकों ने लड़की का पता लगाने के लिए एक समिति का गठन किया, तो चौधरी साहब भी उसमें सक्रिय थे। वे वकालत की चिन्ता न करके लड़की की वापसी के लिए दौड़धूप में लगे रहे तथा तब तक चुप न रहे, जब तक लड़की अपने घर वापस न आ गई।

इसी प्रकार एक पाखंडी साधू ने गाजियाबाद आकर डेरा जमाया तथा अपने को 'अवतार' व 'सिद्ध' बताकर वह लोगों, विशेषकर महिलाओं को, अपने जाल में फांसने लगा। उसके चरित्र के विषय में लोगों को संदेह हुआ तो नगर में सनसनी फैल गई, संभ्रांत नागरिकों ने उसके विरुद्ध अभियान चलाया, चौधरी साहब उसमें भी सबसे आगे थे।

चौधरी साहब ने जीवन में कभी पाखंड, छल-छिद्र तथा फरेब को सहन नहीं किया तथा उसके विरुद्ध वे सदैव संघर्षरत रहे।

64

ग्रामीण उत्थान के प्रतीक : चौधरी चरण सिंह

देवेन्द्र प्रसाद यादव*

किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह एक राज नेता ही नहीं, वरन एक चिंतक, दार्शनिक,अर्थशास्त्री,समाज सुधारक सभी कुछ एक साथ थे। एक ही व्यक्ति में इतनी प्रतिभायें ढूंढ़ने से ही मिलती हैं। जिस ग्रामीण परिवेश में वे पले, बढ़े, पढ़े, उस परिवेश के मर्म को कम ही लोग इतनी तन्मयता से समझ पाये हैं, जितना चौधरी चरण सिंह। उन्होंने गांव, गरीब, किसान, मजदूर, दलित व उपेक्षित लोगों के दर्द को समझा, पहचाना। उस दर्द के मूल कारणों का गहन अध्ययन किया एवं मात्र यही नहीं बल्कि उन्होंने इस संपूर्ण उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए एक नीति-विकल्प तैयार किया। चौधरी चरण सिंह का संपूर्ण राजनैतिक जीवन इस नीति विकल्प के प्रतिपादन, उसके शिक्षण,प्रसार व इस हेतु संघर्ष में बीता। विशेषकर गांव किसानों की पीड़ा को जितना चौधरी चरण सिंह ने समझा, उतना आज तक किसी ने नहीं। यही कारण है कि वे ग्रामीण भारत के प्रतीक बन गए। यह देश का दुर्भाग्य ही रहा कि उनकी ग्रामोन्मुखी नीतियों के कारण उन्हें शहर का विरोधी समझा गया।

चौधरी चरण सिंह एक आदर्श पुरूष थे। उनकी कथनी व करनी एक जैसी थी। वे भ्रष्टाचार के विरोधी थे, साथ ही स्वयं ईमानदारी के प्रतीक थे। उन पर उनके कड़े-से-कड़े विरोधी भी किसी प्रकार का आक्षेप नहीं लगा सके। उनका जीवन खुली किताब की तरह था, जिसे कोई भी पढ़ सकता था। कांग्रेस सरकार की उल्टी प्राथमिकताओं से वह दुःखी थे। वह चाहते थे कि देश की अस्सी प्रतिशत जनता जो गांवों में रहती है, की उपेक्षा न की जाए। सरकारी नीतियों को पूंजीपतियों के लाभ व हितों को ध्यान में रखते हुए न बनाया जाए। इसके लिए वे आजीवन संघर्ष करते रहे कि गांव खुशहाल बन सके। वे हमेशा यह कहते थे कि देश की बहुसंख्यक जनता ग्रामीण है किन्तु जो शासन में हैं या प्रशासन चलाते हैं, वे शहरों में ही पले हैं, अतः

---

* सांसद

उनको ग्रामीण समस्याओं की जानकारी नहीं है। जो विचार उनके मन में आते हैं, उनके आधार पर बिना सोचे समझे योजनाएं बना दी जाती हैं। इससे गांवों का अहित होता है। चौधरी चरण सिंह सिद्धांतप्रिय व्यक्ति थे। अपने सिद्धांत पर अटल रहने के लिए वे बड़ी-से-बड़ी कुर्बानी देने को तैयार रहते थे। उनका कांग्रेस से 1967 में त्यागपत्र सिद्धांत की लड़ाई के फलस्वरूप ही था। वह चाहते थे कि जो व्यक्ति भ्रष्ट है, उसे राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए। संविद सरकार से उनके मतभेद भी सिद्धांतों को लेकर ही हुए। यही बात 1979 में जनता शासन में उनके तत्कालीन प्रधानमंत्री से मतभेद को लेकर कही जा सकती है।

वह हमारे प्रेरणा स्त्रोत थे। आज वह हमारे बीच नहीं हैं लेकिन हम संकल्प लेते हैं कि उनके आदर्शों व नीतियों पर चलकर उनके सपनों के भारत का निर्माण करने में कोई कोर कसर न रखेंगे।

65

ग्रामीण राजनीति के युग पुरुष

राकेश कपूर*

चौधरी चरण सिंह के निधन से भारतीय राजनीति में ग्रामीणवाद का युग समाप्त हो गया। देश के कथित अभिजात्य और शहरी मानसिकता के पोषक वर्ग ने चौधरी चरण सिंह को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। उनकी छवि इस वर्ग के दिमाग में एक अवसरवादी की थी। चौधरी चरण सिंह अपने पूरे राजनीतिक जीवन में एक खूंटे के चारों तरफ घूमते रहे। अभिजाज्य वर्ग ने इस खूंटे को सत्ता या कुर्सी का नाम दिया। मगर चौधरी चरण सिंह ने इस अर्धसत्य को अपने जीवन काल में कभी नहीं स्वीकारा। उनकी नज़र में यह खूंटा राजनीति की 'देसी' धुरी थी। वे सत्ता पर साधारण व्यक्ति का आधिपत्य चाहते थे। जब भी आरोप लगाए गए, उन्होंने टका सा जवाब दिया: "हिन्दुस्तान का शासन किसी मजदूर-किसान के हाथ में होना चाहिए। भारत को वही आदमी चला सकता है जो गांव की मिट्टी की सुगंध से वाकिफ हो। बड़े-बड़े शहरों का निर्माण करके हम अपनी कब्रें खोद रहे हैं, जिन पर दिया जलाने के लिए भी किराए के आदमियों की जरूरत पड़ेगी।"

चौधरी चरण सिंह सत्ता के शिखर तक पहुंचने वाले पहले भारतीय किसान थे। क्या वे भारत को वह रूप दे पाए, जो वह देना चाहते थे ? उनके शासन काल के दिनों में यदि हम लौटें तो पाएंगे कि चौधरी चरण सिंह ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में पूरे देश में अपने बहुसंख्यक विरोधी खड़े कर लिए। उन्होंने एशियाई खेलों के आयोजन का विरोध किया और राजधानी की महत्वाकांक्षी 'रोहिणी आवास योजना' का विरोध किया। इन दो योजनाओं के विरोध से चौधरी चरण सिंह की छवि एक ऐसे 'सनकी नेता' के रूप में बनी जो देश की प्रगति में रोड़े अटका रहा था, जो देश को 18वीं सदी में लौटाने पर आमादा था। देश की जनता के गले वे कारण नहीं उतरे जो चरण सिंह ने इनके विरोध में रखे थे।

---

* पत्रकार

चौधरी चरण सिंह ने एशियाड का विरोध इस मुद्दे पर किया था कि जिस देश में करोड़ों लोग भूखे रहते हों, जहां सभी गांवों को पेयजल तक सुलभ न हो, वहां एशियाड कराना फिजूलखर्ची है। क्या उन्होंने गलत कहा था ? चौधरी चरण सिंह ने यदि यह कह दिया कि 'एशियाड' पर खर्च होने वाली राशि राजस्थान में नहर खुदवाने पर खर्च की जाएगी, तो क्या बुरा कहा ?

वे बड़े-बड़े कारखानों के विरोधी थे। वे खेती में सहकारिता आन्दोलन के खिलाफ थे। वे शहरों के एकांगी विकास के विरुद्ध थे। वे अन्धाधुंध मशीनीकरण के खिलाफ थे।

उनका मानना था कि बड़े कारखाने भारत की श्रम शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। वे कहा करते थे कि हमारे यहां काम तो है कम और आदमी हैं ज्यादा। अगर बड़े कारखाने लगेंगे तो कम आदमियों को रोजगार मिलेगा और बेरोजगारी बढ़ेगी। मगर साथ ही चौधरी साहब कहते थे कि मैं सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े-बड़े कारखानों का विरोधी नहीं हूं। ये कारखाने भी देश की तरक्की के लिए उतने ही जरूरी हैं, जितने कि छोटे कारखाने या कुटीर उद्योग।

कुटीर उद्योग की बात चौधरी चरण सिंह सिर्फ इसलिए करते थे जिससे ज्यादा लोगों को रोजगार मिले। वे पाउडर, टॉफी, टूथपेस्ट या बिस्कुट बनाने के बड़े-बड़े कारखानों या बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विरोधी थे। इसीलिए जब चौधरी चरण सिंह जनता शासनकाल में वित्त मंत्री बने तो उन्होंने सबसे ज्यादा कीमतें इन्हीं वस्तुओं की बढ़ाईं। मगर साथ ही कुटीर उद्योगों में निर्मित इन्हीं वस्तुओं की कीमतों में जरा भी वृद्धि नहीं की। चूंकि भारत के बाजारों पर भी बड़े-बड़े उद्योगपतियों का वर्चस्व है, अतः कुटीर उद्योग में निर्मित यह माल बाजार से गायब हो गया। जनता में चौधरी चरण सिंह एक निष्ठुर वित्त मंत्री के रू में प्रसिद्ध हो गए।

चौधरी चरण सिंह बड़े और छोटे कारखानों का उत्पादन क्षेत्र निश्चित करने के हिमायती थे। वे चाहते थे कि बड़े कारखानों का उत्पादन क्षेत्र केवल भारी मशीनरी या कुटीर उद्योगों के लिए आवश्यक आधारभूत मशीनी उत्पादन तक सीमित हो। शेष सभी वस्तुओं, खासकर उपभोक्ता सामग्री, का उत्पादन कुटीर उद्योग में हो।

रोहिणी का विरोध भी चौधरी चरण सिंह के पूरे सोच को प्रकट करता था। शहरों के अंधाधुंध फैलाव से क्या बीसवीं सदी कुलबुला नहीं रही है। गांवों की जमीन हड़प कर जो बड़े शहर बसाए जा रहे हैं, यह कहां तक न्यायसंगत है। किसान की जमीन कौड़ियों के भाव लेकर उसे 100 गुना दामों पर बेचना क्या गांवों पर शहरी हमला नहीं है ? चौधरी चरण सिंह उसी हमले के विरोधी थे। वे मानते थे कि यह भारत के पिछड़ेपन को बरकरार रखने की प्रक्रिया है। बिजली और पानी की रफ्तार जिस तेजी से शहरों की तरफ मुड़ी है, क्या गांवों में भी रफ्तार उतनी ही है ? हकीकत यह है कि जब दिल्ली और बम्बई बिजली के कृत्रिम प्रकाश में गंगास्नान करती हैं,

तब कस्बे और गांव घुप अंधेरे के साम्राज्य में लालटेन से टिमटिमाते हैं।

अपनी पुस्तक 'इकोनॉमिक नाइटमेअर ऑफ इंडिया' में भी चौधरी साहब ने इस बाबत ज्वलंत सवाल उठाकर उनका समाधान किया है। वे कहते थे—"जिस देश में किसान ज्यादा होंगे, वह देश गरीब होगा और जिसमें किसान कम होंगे, वह अमीर होगा।" इस बारे में वे अमेरिका का उदाहरण देते थे। भारत में खेती में लगे लोगों का प्रतिशत आजादी के बाद बढ़ा है। अतः गरीबी भी बढ़ी है। जमीन जब निश्चित है तो आबादी बढ़ने से किसान भी ज्यादा ही होंगे। यदि किसान दूसरे काम-धंधों में लगेंगे तो कृषि उत्पादन आधुनिक तरीकों से बढ़ेगा ही और किसान खुशहाल होगा। अमेरिका में यही हुआ है। किसान का बेटा इंजीनियर, डाक्टर भी हो सकता है। भारत में यही स्थिति चौधरी साहब देखना चाहते थे।

चौधरी चरण सिंह पर दल-बदलू होने का आरोप प्रायः लगाया जाता रहा है। उन्होंने 1967 में उत्तर प्रदेश में चन्द्रभानु गुप्त को झटका देकर मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली। 1979 में जनता सरकार के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को धता बताकर प्रधानमंत्री की कुर्सी पाई। ये दोनों ही घटनाएं इतिहास को एक नया मोड़ देने वाली साबित हुईं। आप कल्पना कीजिए यदि उत्तर प्रदेश में 1967 में कांग्रेस से विद्रोह कर चौधरी चरण सिंह ने अपनी सरकार न बनाई होती तो क्या अन्य राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें गठित हो सकती थीं ? दरअसल चौधरी चरण सिंह के इस विद्रोही चरित्र का मूल्यांकन राजनीति में अभी तक हुआ ही नहीं है। जनता सरकार के दमघोंटू माहौल के खिलाफ भी चौधरी चरण सिंह ने विद्रोह किया। चौधरी चरण सिंह का यह चरित्र उनकी राजनीतिक इलैक्ट्रिक मोटर रहा है।

जनता सरकार का टूटना बेशक बहुसंख्य जनता के लिए स्वप्न भंग रहा होगा, मगर चौधरी चरण सिंह के लिए वह एक अनिवार्यता थी। वे स्वयं गैर कांग्रेसी पार्टियों के ध्रुवीकरण हेतु प्रयास रत रहे। वे इमरजैंसी से पहले से कहते थे और मानते थे कि यदि इमरजैंसी न लगी होती तो लोकदल विपक्षी पार्टियों का चुम्बक बनती। इसमें चार प्रमुख राष्ट्रीय दलों का विलय पहले ही हो चुका था। मगर इमरजैंसी लगी और जनता पार्टी बनी। चौधरी चरण सिंह इसके पहले उपाध्यक्ष बने। उन्होंने उत्तरी भारत में कांग्रेस के खिलाफ अलख जगाया। जनता सांसदों में सर्वाधिक संख्या लोकदल खेमे की ही रही। फिर यदि इस खेमे का नेता प्रधानमंत्री बनने का दावा करे, तो इसमें बुराई क्या है ?

चौधरी चरण सिंह अक्खड़ थे। वे किसी की सिफारिश नहीं मानते थे। आर्य समाजी थे, ईमानदार थे, कर्मवीर थे, चरित्रवान थे। सिद्धान्तों को सर्वोपरि मानते थे। इसीलिए गांधीवादी थे।

66

जैसा मैंने उन्हें जाना

ए. नीललोहितदास नाडार*

चौधरी चरण सिंह का नाम मैंने पहले पहल सन् 1967 में सुना, जब वह कांग्रेस से अलग होकर विपक्षी दलों के समर्थन से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। मेरी राय में ईमानदारी और संघर्षशील व्यक्तित्व के प्रतीक चौधरी चरण सिंह को उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी लोगों ने वहीं दबाकर रखने की कोशिश की, ताकि उनके व्यक्तित्व और सिद्धान्त देश भर में न फैलें। कांग्रेस से बाहर आने के बाद उनका व्यक्तित्व राजस्थान, हरियाणा और बिहार में फैलने लगा। गैर कांग्रेसी शक्तियों को मिलाकर जब चौधरी साहब ने भारतीय लोक दल की स्थापना की, तो उनके नाम और सिद्धान्तों का और प्रचार हो गया। लेकिन तब भी चौधरी साहब को निकट से जानने का मौका मुझे नहीं मिला। सन् 77 में वे केन्द्र में गृहमंत्री, 1979 में उप-प्रधानमंत्री तथा प्रधानमंत्री बने। तब भी मैं उनके बारे में अधिक जान नहीं सका, क्योंकि उस समय भी अखबार उनके बारे में गलत प्रचार करते रहते थे। चौधरी चरण सिंह जैसे निष्ठावान और आदर्शवादी नेता के बारे में लोग ठीक रूप से न समझ सकें, ऐसा प्रतीत होता है, इसके लिए कोई षड्यन्त्र रचा गया था।

सन् 1980 में जब मैं संसद सदस्य बनकर दिल्ली आया, तब मुझे चौधरी चरण सिंह को निकट से जानने और उनके द्वारा लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। इसके बाद चौधरी चरण सिंह के बारे में मुझे जो जानकारी मिली, उसे संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं।

एक बार एक संवाददाता ने चौधरी चरण सिंह से पूछा कि आप अपने जीवन की कोई अविस्मरणीय घटना बता सकते हैं ? उन्होंने जवाब दिया कि 'मेरे जीवन में हुई सारी घटनाएं समान हैं।' वे जीवन भर कदम-कदम पर संघर्ष करके ही आगे बढ़े, मगर सदा सन्तुलित रहे। बीमार पड़ जाने पर मृत्यु से भी डेढ़ वर्ष तक लड़ते

* भूतपूर्व मंत्री, केरल सरकार

रहे। चौधरी साहब ने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया।

क्या चौधरी साहब का यह संघर्ष केवल एक व्यक्ति का संघर्ष था ? सन् 1979 में जब वह प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने कहा कि "मेरे जीवन की इच्छा पूर्ण हो गयी।" एक ग्रामीण किसान का बेटा भारत के प्रधानमंत्री पद तक पहुंच गया, यह एक बड़ी बात थी। चौधरी साहब के राजनैतिक जीवन का उतार-चढ़ाव एक साधारण ग्रामीण भारतीय के जीवन का उतार-चढ़ाव ही था। सन् 1902 में 23 दिसम्बर को नूरपुर, गांव में जन्मे तथा 31 मई 1987 को किसान घाट में पंच तत्वों में विलीन होने तक का उनका जीवन किसी साधारण भारतीय किसान द्वारा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए किये गये संघर्षों का प्रतीक है।

चौधरी साहब जब हाई स्कूल के विद्यार्थी थे, तभी से आर्य समाज के सिद्धान्त और राष्ट्रीयता के पाठ पढ़कर सहज ही अंग्रेजों के विरोधी बन गये थे। उन्होंने कई बार स्वीकार किया कि उनका सामाजिक दृष्टिकोण स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित है। सन् 1917 में मैथिली शरण गुप्त का 'भारत भारती' नाम का काव्य पढ़कर चौधरी साहब देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हो गये। सन् 1919 की 'जलियांवाला बाग' की घटना और गांधी जी के नेतृत्व, दोनों ने, उनको और बढ़ावा दिया।

समाज सुधार सम्बंधी कार्यों में चौधरी साहब की बचपन से ही रुचि थी। अपने गांव के हजारों लोगों को इकट्ठा करके उन्होंने ऐसे कामों का आयोजन किया था। वह जब आगरा कालेज के छात्र थे, तब आर्य समाज के आह्वान पर उन्होने हरिजनों द्वारा आयोजित भोज में भाग लिया था। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्रित्व काल में उनका रसोइया एक हरिजन था। इस सन्दर्भ में उन्होंने अपने कुछ परिचितों-मित्रों की सलाह की कोई परवाह नहीं की। उनको जाट, समाज के लोगों से ज्यादा पिछड़े तबके के लोग आदर करते थे और समर्थन देते थे। ऊंची जाति के लोग भी, जो जातिवादी नहीं थे, एक आदर्शवान, सिद्धान्तवादी, विचारवान और संघर्षशील राजनीतिज्ञ के रूप में चौधरी चरण सिंह का आदर करते थे।

चौधरी साहब अपने जमाने के बेहद अनुभवी राजनीतिज्ञ थे। सन् 1930 के नमक सत्याग्रह से लेकर कई बार उनको जेल जाना पड़ा। आपातकाल में भी वह जेल में रहे। शासन के क्षेत्र में उनका अनुभव बहुत लम्बा था। सन् 1931 में वह मेरठ जिला बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये। उत्तर प्रदेश में गोविन्द बल्लभ पंत, डा. सम्पूर्णानन्द, सुचेता कृपलानी, सी. बी. गुप्ता आदि प्रमुख नेताओं के मंत्रिमंडल में उन्होंने भिन्न-भिन्न मंत्रालयों का दायित्व संभाला। उनके शासन में भ्रष्टाचार नाम को भी देखने को नहीं मिलता था।

उत्तर प्रदेश में जमींदारी प्रथा की समाप्ति, भूमि सुधार सम्बंधी महत्वपूर्ण कार्यों का श्रेय उन्हें ही है। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर ही वह कांग्रेस से बाहर आये। डा.

लोहिया के गैर कांग्रेसवाद को मूर्त रूप देने का श्रेय भी चौधरी साहब को ही जाता है। इसके बाद उन्होंने भारतीय क्रांति दल, भारतीय लोकदल का गठन किया। आपातकाल में जनता पार्टी के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

चौधरी चरण सिंह अपने वैयक्तिक जीवन और आर्थिक नीतियों के सम्बंध में पूर्ण रूप से गांधीवादी थे। गांधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों के लिए इतना संघर्ष भारत के और किसी राजनैतिक नेता ने नहीं किया है। गांधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से भारत की समस्याओं का हल सम्भव है, यही उनका दृढ़ विश्वास था। वे कई ग्रंथों के रचयिता थे। उनके ग्रंथों में सबसे प्रमुख था 'इकोनॉमिक नाइमेयर ऑफ इंडियाः इट्स कॉजेज एण्ड क्योर' (भारत की भयावह आर्थिक स्थितिः कारण और निदान)। इस ग्रंथ में चीन और भारत की भौतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करके उन्होंने अपनी स्पष्ट राय दी है कि चीन में साम्यवादी राजनैतिक ढांचा है, तो भी गांधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन से ही लोगों की प्राथमिक मांगों की पूर्ति हो सकी और जनता की तालीमी समस्याओं का हल हो सका; लेकिन भारत में, जिसने गांधी जी को जन्म दिया, उन्हीं कार्यक्रमों को त्यागने के कारण ही जनता की बुनियादी समस्याओं का हल न हो सका।

दुनिया के अविकसित राष्ट्रों के एक बड़े आर्थिक विशेषज्ञ गिलबर्ट आट्टिनों ने भी इस बात में चौधरी चरण सिंह की राय से सहमति प्रकट की है। महात्मा गांधी के बाद चौधरी चरण सिंह ही हिन्दुस्तान में एक मात्र नेता हुए हैं, जो हमेशा अपने विचारों एवं सिद्धान्तों पर अटल रहे। जवाहरलाल और गांधी जी के निकट रहकर भी गांधीवादी आर्थिक सिद्धान्त और कार्यक्रम की महानता अपने शासन के शुरू में समझ नहीं पाये। पाश्चात्य विकास की रणनीति से वे इतने आकृष्ट हो गये थे कि गांधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों को भारत के विकास के लिए बिल्कुल अनुचित समझते थे। उनका विचार था कि भारत के गांव बिल्कुल पिछड़ी और प्राकृतिक अवस्था में हैं, उनको आधार बनाकर विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना मुश्किल है। लेकिन सन् 1963 में अपनी मृत्यु के छह महीने पहले योजना के बारे में एक चर्चा में भाग लेकर उन्होंने अपनी गलती महसूस की और कहा कि "जहां तक हम देश की समस्याओं की गहराई में जाते हैं, तब महात्मा गांधी के बारे में सोचने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं। जितनी भी प्रगति देश में हो, उस प्रगति का लाभ सबसे गरीब लोगों को नहीं मिलता, तो उससे कुछ फायदा नहीं।" लेकिन अपनी गलती को सुधारने के लिए वह अधिक दिनों तक जिन्दा नहीं रह पाये। इस पृष्ठभूमि में चौधरी साहब को देखने पर स्पष्ट मालूम हो जाता है कि अपने सार्वजानिक जीवन में हमेशा वे गांधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों पर अटल रहे लेकिन उनके क्रियान्वयन के लिए उनको अवसर नहीं मिला।

यह बड़ी विडम्बना की बात है कि चौधरी चरण सिंह को एक जाति के नेता

के रूप में चित्रित करने के लिए हमारे प्रचार के माध्यमों ने हमेशा कोशिश की है। लेकिन जाति-प्रथा के विरोध में चौधरी साहब के समान और किसी नेता ने लड़ाई लड़ी नहीं होगी। आर्य समाजी चौधरी साहब सार्वजनिक जीवन में जाति प्रथा का आरम्भ से विरोध करते थे। सन् 1954 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू को जाति प्रथा मिटाने का सुझाव देते हुए उन्होंने चिट्ठी लिखी कि राजपत्रित पदों (गजेटेड पोस्ट्स) पर केवल अन्तर्जातीय विवाहितों की नियुक्ति करनी चाहिए।

चौधरी चरण सिंह ने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव के हर पहलू में ग्रामीण भारत एवं किसानों की स्पंदन की धारा को अपना लिया था। अपने को ग्रामीण किसान के प्रतिनिधि कहने में स्वाभिमान का अनुभव करते थे। समय के चलते चौधरी चरण सिंह से सम्बन्धित अन्य बातें भले ही भुला दी जायें लेकिन ग्रामीण भारत एवं कृषि को आधार बनाकर उन्होंने जो आर्थिक कार्यक्रम रखे, भारत के राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में वह सदैव जिन्दा रहेंगे—चिन्तनीय रहेंगे। चौधरी चरण सिंह के लिए सबसे बड़ा स्मारक कृषि एवं कुटीर उद्योगों पर आधारित एक नये भारत का निर्माण ही है, उससे ही गरीबी एवं बेकारी की समस्याओं से भारत बाहर निकल सकता है।

67

भ्रष्टाचार के खात्मे के सबसे बड़े हिमायती

हरि सिंह नलवा*

इतिहास इस बात का गवाह है कि दुनिया में आज तक दो ही नेता इस धरती पर पैदा हुए हैं, जिन्हें असली मायने में जनता का नेता कहा जाता है। इन नेताओं के पीछे उन देशों की जनता दीवानों की तरह दौड़ती थी। यह बात इन नेताओं की दो रैलियों ने साबित करके दिखा दी है। ये दो नेता थे माओ त्सेतुंग और चौधरी चरण सिंह। चीन में क्रांति के बाद माओ त्सेतुंग के नेतृत्व में आयोजित रैली में तकरीब दस लाख लोग शामिल हुए थे और दूसरी बार हिन्दुस्तान में चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में 23 दिसम्बर 1978 को नई दिल्ली में वोट क्लब पर, उनके जन्म दिवस पर आयोजित रैली में 10 लाख से भी अधिक किसान-मजदूर शामिल हुए थे। यह भी सच है कि इन्हीं रैलियों ने इन दोनों नेताओं को महान बनाया और इनका नाम इतिहास में दर्ज कराया। वोट क्लब की रैली ने यह साबित कर दिया कि चौधरी चरण सिंह की सख्शियत क्या थी और देश के लोगों के मन में उनका कितना मान था।

हिन्दुस्तान गांवों का देश है और देश की तकरीब 80 फीसदी आबादी गांवों में रहती है। चौधरी चरण सिंह जी के मन में गांवों और उनमें रहने-बसने वालों के लिए बेहद दर्द था, टीस थी। वह उनकी बहबूदी के लिए, उनकी समस्याओं के निदान के बारे में हर पल सोचते रहते थे। असलियत में वह 'ग्राम देवता' थे।

चौधरी चरण सिंह एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, लेखक, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ ही नहीं, पक्के गांधीवादी भी थे। वह राजनीतिक भ्रष्टाचार के सबसे पहले खात्मे के हामी थे। इस बारे में एक बार उन्होंने कहा था कि जब तक देश से राजनीतिक भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होता, तब तक नौकरशाही से भ्रष्टाचार के खात्मे की बात बेमानी है। और जब तक नौकरशाही से भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा, तब तक देश की 80 फीसदी आबादी, जो गांवों में रहती है, उसका भला नहीं हो सकता, उसका सुधार नहीं हो सकता।"

उनके दिल में हर मजहब और उसके मानने वालों के लिए इज्जत थी। सिद्धांतों से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया और पूरी जिंदगी सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलते रहे। आज देश में उनके बराबर ईमानदार, सादगी पसंद और स्पष्टवादी कोई राजनेता नहीं है। उनकी गांधीवादी अर्थनीति जिसकी विदेशी अर्थ शास्त्रियों ने भी प्रशंसा की है, को अपनाने से देश की समस्याओं का काफी हद तक निदान हो सकता है। लेकिन यह तभी संभव है जब नेतृत्व और सरकार में इच्छा शक्ति हो।

68

वह मेरे जीवन के आदर्श पुरुष थे

मनोहर लाल*

देश के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के एक साधारण किसान परिवार में जन्मे चौधरी चरण सिंह केवल एक राजनीतिज्ञ रहे हों, एक राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष रहे हों, प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हों या फिर देश के एक प्रधानमंत्री रहे हों, ऐसा नहीं है, वह तो जाने-माने स्वाधीनता संग्राम सेनानी, समाज सुधारक, लेखक, विचारक और अर्थशास्त्री भी थे। स्पष्टवादिता, ईमानदारी उनकी विशिष्टता थी। नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के प्रति वह आजीवन प्रतिबद्ध रहे। वह जो सोचते थे, वही करते भी थे। उनके आचरण में यानी कथनी तथा करनी में कोई अंतर नहीं था।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज देश में इने-गिने राजनीतिज्ञ हैं जिनकी राजनीति एवं जीवन दर्शन नैतिक मूल्यों के सिद्धांत पर आधारित है। चौधरी साहब उनमें अग्रिम पंक्ति के नेता थे। उनकी राजनीतिक समझ जितनी स्पष्ट थी, विचारों में उतनी ही दृढ़ता थी। चरित्र की पवित्रता एवं नैतिक बल की अतिरेकता के कारण स्पष्टवादिता उनके स्वभाव में रच-बस गयी थी। मानवीय संवेदनशीलता एवं परदुख कातरता इतनी कि गरीबों की दुर्दशा पर रो पड़ते थे। वहीं प्रशासनिक क्षमता, आदर्शजीवी दृढ़ता एवं ईमानदारी इतनी कि भ्रष्टाचारी यदि आत्मीय जन भी हो, तो भी उसे कभी माफ नहीं करते थे। यही कारण है कि प्रतिगामी शक्तियों से लोहा लेते समय और जीवन के अनेकानेक उतार-चढ़ावों के दौरान भी वह अपनी अस्मिता को कायम रखने में कामयाब हो सके।

दरअसल लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना, नागरिक स्वतंत्रता को बहाल करना, देश के सर्वांगीण विकास के लिए कानून एवं दण्ड व्यवस्था स्थापित करना, गांधी दर्शन के अनुरूप ही साध्य एवं साधन दोनों की पवित्रता, ग्रामीण अंचल में रह रहे करोड़ों लोगों को उनकी इच्छा तथा क्षमतानुसार विकास के अवसर सुलभ

---

* दिवंगत भूतपूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश

कराना, किसानों, खेतिहर मजदूरों, भूमिहीनों, ग्रामीण दस्तकारों एवं कमजोर वर्गों की सेवा के लिए उनका जीवन समर्पित था। चौधरी साहब के प्रति मेरी यह धारणा और आकर्षण शुरूआत में उनके भाषणों और विचारों का अध्ययन कर लेने के कारण ही आयी थी, किंतु जब मैंने अपने जीवन को राजनीतिक दिशा में ढालने का निश्चय किया, तो मैंने बड़े आदर के साथ उन्हें अपने आदर्श के रूप में ग्रहण किया।

राजनीति में मेरी रुचि तो सन् 1959 से ही थी। उस समय मैं क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर में पढ़ रहा था। उन्हीं दिनों मैंने जीवन में पहली बार स्थानीय महापालिका का चुनाव लड़ा। उस चुनाव में मुझे आशा से अधिक सफलता प्राप्त हुयी। उसके बाद तो क्षेत्रीय मतदाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके, उनके सुख-दुख में हाथ बटाना मेरी दिनचर्या में शामिल हो गया। पता नहीं यह सब मैं कैसे कर पाया, पर आज जब अतीत पर दृष्टि डालता हूं, सोचता हूं, तो यह सब चौधरी साहब के सिद्धांतों का ही प्रभाव रहा लगता है। 1968 में जब चौधरी साहब ने भारतीय क्रांतिदल की स्थापना की, तो इस नये दल के संगठन हेतु दौरा करते हुए वे कानपुर में जाजमऊ स्थित मेरे निवास पर भी पधारे। उन्हें मैं अपने घर पाकर धन्य-धन्य हो गया। उस समय ऐसा लगता था जैसे कि वह अपने शिष्य को वरदान देने आये हों। और जब चौधरी साहब उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री हुए, तो मुझे उनके मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री के रूप में काम करने का अवसर मिला। यह मेरा चौधरी साहब के निर्देशन में राजनीति में एक प्रकार से "प्रशिक्षण काल" था। उस समय कोई भी कठिनाई होने पर वह किसी योग्य गुरू की भांति हमें समझाते थे और उसके हल का उपाय ढूंढ निकालते थे।

कार्यकर्ताओं में उनका गहरा और अटूट विश्वास था। लगन और निष्ठा से वह कार्यकर्ताओं को अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सदैव उत्साहित करते रहते थे। इसके अलावा उनकी क्षमता, चरित्र और आचरण की दृढ़ता पर विशेष बल, सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और स्वच्छता के प्रति उनका आग्रह और प्रशासन में अनुशासन को सर्वोपरि महत्व देने की आदत आदि इन्हीं गुणों के कारण वे मेरे राजनीतिक जीवन के प्रेरणास्त्रोत बने और मेरे अंतस्तल में एक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

चौधरी साहब का व्यक्तित्व राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए ही बना था। उनके व्यक्तित्व का दायरा जितना बड़ा था, उतना ही बड़ा उनका हृदय था। स्वामी दयानंद सरस्वती का उनके जीवन पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। उनके व्यक्तित्व में गांधीवाद की उच्च उपलब्धियों के दर्शन होते थे। सरदार पटेल उनके आदर्श थे। चौधरी साहब की संगठनात्मक क्षमता देखकर और प्रशासनिक कुशलता को देख सरदार पटेल का सहज ही स्मरण हो आता है। भ्रष्टाचार, झूठ और फरेब तथा मक्कारी से नफरत करने वाले चौधरी साहब के लिए सिद्धांत सर्वोपरि थे।

हमारे देश का दुर्भाग्य रहा है कि यहां नेता और राजनीतिक कार्यकर्ता राजनीति

को साधन मानकर सुख-सुविधा को हासिल करने में ही लगे रहते हैं। उनका जीवन लोकतांत्रिक मूल्य और सिद्धांत परक न होकर अवसरवादी रहा है। जोड़-तोड़ में जो जितना माहिर हो, वह उतना ही बड़ा नेता माना जाता है। यह समझ केवल अपरिपक्व विचार वाले आम आदमी की ही नहीं रही है, बल्कि कुछ वैचारिक लोगों तक के मन में यह बात घर कर गई है। लेकिन चौधरी चरण सिंह ऐसे नेता थे जिन्हें जोड़-तोड़ की राजनीति से घृणा थी। उन्होंने कभी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया और यही नहीं सिद्धांतों की खातिर पदत्याग करने से भी वह नहीं चूके। उनकी राष्ट्रभक्ति, ईमानदारी और सादगी बेमिसाल है। आज तो जरूरत इस बात की है कि देश के राजनेता उनकी सादगी, ईमानदारी और नैतिकता-सिद्धांतवादिता से सबक लें और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

वह अपने अनुयायियों में चौधरी साहब के नाम से पुकारे-जाने जाते थे। असलियत में वह भूमि सुधारों के तहत उस किसान को उस जमीन का मालिक बनाना चाहते थे, जिस पर वह सदियों से हल चला रहा था। वह चाहते थे कि अतिरिक्त भूमि का आबंटन भूमिहीनों को बिना किसी भुगतान के हो। जमींदारी उन्मूलन तथा अपनी इस मांग को स्वीकृत कराने में उन्हें व्यापक स्तर पर विरोध का भी सामना करना पड़ा। चौधरी साहब को अपने जीवन में असफलताओं का भी सामना करना पड़ा। लेकिन उस दौर में भी उनका किसान-मजदूर, गरीब, पिछड़े, कमजोर वर्गों और अल्पसंख्यकों से जो उनके आधार थे, संबल थे, संबंध कभी नहीं टूटा।

चौधरी चरण सिंह व्यक्ति नहीं, विचार थे। उनकी एक स्पष्ट अर्थनीति थी। वे भारी उद्योगों के समर्थक नहीं थे, लेकिन एकदम उसके विरोधी भी नहीं। उनका मानना था कि बड़ी मशीनें वहीं लगायी जायें, जहां उनकी बहुत जरूरत हो और रोजगार की जरूरत पूरी करें। वह तो देश में कुटीर एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिये जाने के पक्षधर थे। किसान, गांव और गरीब के बारे में उनकी जानकारी मात्र किताबी नहीं थी, वह गांव की मिट्टी में पले-पुसे और बड़े हुए थे, उन्हें गांव, गांव के जीवन और वहां रहने-बसने वालों के सामने आने वाली समस्याओं का विस्तृत ज्ञान था। वह गरीबी को अन्यायी व्यवस्था की उपज मानकर उसके निराकरण हेतु आजीवन जुटे रहे। वह चाहते थे कि हमें पूंजीगत उत्पादों के बजाए उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करना चाहिए और वह भी इस तरह कि जो हाथ से और छोटी मशीनों से बनाया जा सके। उसके लिए बड़ी मशीनें न लगायी जाएं। वह आधुनिकता के नाम पर पश्चिमी देशों की भोंड़ी नकल अनावश्यक मानते थे और तर्कों के आधार पर अपने कथन की वकालत करते थे।

चौधरी चरण सिंह विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व और सार्वजनिक जीवन में कोई अंतर नहीं था। इस मामले में उनकी तुलना किसी से नहीं

की जा सकती। संस्कृत का मुहावरा "वज्रादीप कठोरान मृदून कुसुमादीप" उन पर पूरी तरह सटीक बैठता था यानी वह वज्र से भी अधिक कठोर और फूल से भी अधिक कोमल थे। वह धर्मनिरपेक्षता के प्रतीक थे। गांव, गरीब, किसान-मजदूर और कमजोर तबकों के हितों के लिए वह ताजिन्दगी संघर्षरत रहे। इन लोगों के लिए उनके दिल में कितना दर्द था, टीस थी, जो इनकी बात करते-करते उनकी आंखों से आंसुओं की धारा के रूप में फूट पड़ती थी। मैंने उन्हें अक्सर बातचीत के दौरान हलक-हलक कर रोते और यह कहते देखा है कि इस देश का क्या होगा, जहां आजादी के चार दशक बाद भी इन तबकों की हालत में कोई सुधार नहीं आ पाया है। उनको इस बात के लिए सदैव याद किया जायेगा कि देश में एक ऐसा इंसान, राजनेता भी हुआ जिसने देश के सदियों से शोषित-पीड़ित, कमजोर पिछड़े वर्ग के लोगों, दस्तकारों, किसानों को आवाज दी। उन्हें जुल्म का विरोध करने और अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए जागृत किया, उनमें ताकत और साहस का संचार किया तथा देश की राजनीति में हिस्सेदारी का एहसास कराया। यही नहीं इन तबके के लोगों, जिनमें मैं भी एक हूं, को विधान सभा, लोकसभा तक पहुंचाया और मंत्री बनाया। यही एक प्रमुख वजह रही कि इन तबकों, जिनकी कोई आवाज नहीं थी, लॉबी नहीं थी, की बात आज देश का हर राजनीतिक दल करने को मजबूर है। असलियत में चौधरी साहब इन वर्गों के मसीहा थे। देश के इतिहास में उनके इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता और देश का किसान, पिछड़ा व कमजोर वर्ग, दस्तकार-मजदूर इस उपकार के लिए उनका सदैव ऋणी रहेगा, इसमें संदेह नहीं है। आज वह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन इस सच को भुलाया नहीं जा सकता कि उनके न रहने से देश में राजनीतिक क्षितिज पर जो रिक्तता आयी है, उसकी पूर्ति असम्भव है।

69

नैतिक मूल्यों की स्थापना के पक्षधर

बलवंत सिंह रामूवालिया*

छठी लोकसभा में मैंने तकरीब तीन साल उस इंसान के साथ गुजारे हैं, जो इंसानों में हीरा था। जिसने कभी झूठ नहीं बोला और जो ईमानदारी, उसूलों तथा साफगोई के लिए मशहूर था। उस इंसान का नाम था चौधरी चरण सिंह, जिसे उनके अनुयायी और समर्थक प्यार और आदर के साथ "चौधरी साहब" के नाम से पुकारते थे। उन्होंने देश के सदियों से दबे-थके किसानों-मजदूरों और पिछड़े तबके के लोगों के लिए जिन्दगी भर सोचा, लिखा और संघर्ष किया। यही नहीं उन्हें राजनीति में हिस्सेदारी का एहसास भी कराया। उन्हें विधान सभा और संसद में पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही। उनकी बहबूदी के लिए वह सड़क से लेकर संसद तक अपनी अंतिम सांस तक आवाज उठाते रहे।

वह राजनीति में नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों की स्थापना के पक्षधर रहे और इनके प्रति आजीवन वह प्रतिबद्ध भी रहे। वह एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, किसानों के रहनुमा और एक जाने-माने अर्थशास्त्री भी थे। असलियत में वह एक नेकइिल इंसान थे जिसकी मिसाल ढूंढे नहीं मिलेगी।

छल-छिद्र की राजनीति से वह कोसों दूर थे। लेकिन दुख इस बात का है कि उनका वास्ता हमेशा ऐसे लोगों से पड़ा जो राजनीति में धोखाधड़ी के सहारे मिली सफलता को ही सफल राजनीति मानते हैं। उन्हें अक्सर झूठे और फरेबी लोगों ने बार-बार छला और धोखा दिया, फिर भी उन्होंने उसका कभी बुरा नहीं माना। लेकिन उस इंसान की बड़प्पन की मिसाल मिलना मुश्किल है कि उन्होंने उन लोगों को पुनः पास आने पर माफ भी कर दिया। ऐसे अनूठे व्यक्तित्व के धनी इंसान से मेरी पहली भेंट 13 जनवरी 1974 को तब हुयी, जब वह मुक्तसर (पंजाब) में होने वाले माघी मेले में आयोजित किसान सम्मेलन में हिस्सा लेने हेतु अकाली दल के निमंत्रण पर

---

* सदस्य, अल्पसंख्यक आयोग, पूर्व सांसद एवं महासचिव, अकाली दल

पधारे थे। उस समय मैं नौजवान था और अकाली दल ने मुझे दल के प्रचार मंत्री का काम करने का जिम्मा दे रखा था। मैं चौधरी साहब को सम्मेलन में लाने हेतु मुक्तसर के सरकारी गैस्ट हाउस पहुंचा। कमरे में पहुंचकर मैंने आने का अपना कारण बताया। चौधरी साहब बोले–"ठीक है। तुम करते क्या हो ?" मैंने उत्तर दिया–"चौधरी साहब मैं मेरठ में पढ़ता हूं और अकाली दल के प्रचार मंत्री की हैसियत से काम कर रहा हूं।" चौधरी साहब ने फिर कहा–"जगत सिंह को जानते हो।" मैंने उत्तर दिया कि –"हां।" फिर पूछा कि–"वह कैसा आदमी है।" मैने जबाव दिया कि–"अच्छा है और मेरा दोस्त भी है।" यह सुनने के बाद चौधरी साहब सलाह देते हुए बोले कि–"वह लड़का अच्छा है, आगे भी उससे मिलते रहा करो।" इसके बाद सम्मेलन में जाने के लिए गाड़ी से चल दिए। रास्ते में बातचीत का दौर चलता रहा। शुरूआत में उन्होंने मुझसे कहा कि–"भई सम्मेलन किसानों का है, संयोजकों में से एक तुम भी हो, लेकिन क्या कभी किसानी की है।" मैंने जबाव दिया कि –"चौधरी साहब, पढ़ता तो मैं हूं ही लेकिन जब घर आता हूं तो किसानी भी करता हूं।" फिर उन्होंने पूछा–"अच्छा बताओ कि तुम्हारे यहां एक एकड़ कितना माना जाता है।" मैंने जबाव दिया कि– "40 कदम एक ओर और 36 कदम दूसरी ओर। दोनों ओर इतने कदम चलते ही एक एकड़ जमीन के बराबर हो जायेगा।" मेरे जबाव पर वह मुस्कराये और फिर बोले–"ठीक है। तुम्हें असली मायने में किसान सम्मेलन करने का हक है। सच तो यह है कि किसान ही किसान का दुख-दर्द अच्छी तरह देख, सुन, समझ और उसका एहसास कर सकता है।" सम्मेलन में उन्होंने अपने भाषण की शुरूआत सरदार भाइयों कह कर की और अपने भाषण में उन्होंने संगठन बनाने पर जोर दिया और कहा कि संगठन में शक्ति होती है, संगठन बनते ही समस्याओं पर विजय पाओगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। मेरी यह निश्चित मान्यता है और मैं समझता भी हूं कि वह इस सम्मेलन के जरिये पंजाब की जमीं पर सरदारों को उनकी एहमियत, अरवलाक और भारतीय संस्कृति और एकता की रक्षा के लिए कुर्बानी और जिम्मेदारी का निरंतर एहसास कराना चाहते थे।

मेरी उनसे दूसरी बार 1978 के आस-पास सूरज कुंड में मुलाकात हुयी। उस समय चौधरी साहब गृह मंत्री थे। मेरे साथ पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल भी थे। जब मैंने सूरज कुंड स्थित उस कमरे में, जिसमें चौधरी साहब ठहरे थे, प्रवेश किया, तो इसे संयोग ही कहा जायेगा कि उस समय चौधरी साहब के पास जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री रामकिंकर जी व दूण्डला के चौधरी मुल्तान सिंह जी, जो जलेसर क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य थे, बैठे थे। चौधरी साहब किसी बात पर उन दोनों नेताओं से नाराज थे और उनको डांट-धमका रहे थे। मेरे कमरे में पहुंचने पर उनकी आवाज तो धीमी जरूर हुई लेकिन उनकी मुद्रा में कोई बदलाव नहीं आया। तभी सरदार प्रकाश सिंह बादल जी ने कहा कि–"चौधरी साहब, आप तो बड़े हैं

और यह सब पार्टी के सीनियर नेता। इन्हें प्यार से ही समझा बुझा दिया करें।" चौधरी साहब तपाक से बोले—"सीनियर तो हैं लेकिन यदि यह गलती करेंगे तो इन्हें मेरी नाराजगी जरूर बर्दाश्त करनी पड़ेगी। वैसे इनको भी उतना ही हक हासिल है मुझसे अपनी नाराजगी का इजहार करने का।" जब बाद में मैंने इन नेताओं से बातचीत की तो उनका कहना था कि—"यह तो बाबा, पिता और बड़े भाई के बराबर हैं। नाराज भी होते हैं और प्यार भी करते हैं। इनके साथ तो सब चलता है। यह केवल हमारे नेता ही नहीं हैं, वह तो हमारे सब कुछ हैं।" जब उन दोनों से विदा ली तब ऐसा लगा कि यह चौधरी साहब का कितना उच्च व्यवहार है और सहयोगियों के प्रति उच्चस्तरीय सोच का परिणाम।

एक बार और उनसे मुलाकात का मौका मिला। हम लोग चाहते थे कि चंड़ीगढ़ स्थित पोस्ट-ग्रेज्युएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंस में डायरेक्टर का पद किसी ऐसे व्यक्ति को दिया जाय जो अकाली पृष्ठभूमि का हो। इसके लिए हम स्वास्थ्य मंत्री श्री राजनारायण जी से भी मिल चुके थे लेकिन वह इसके लिए कतई तैयार नहीं थे। उसके बाद ही हमने चौधरी साहब से मुलाकात का फैसला लिया और जा पहुंचे उनके पास। उन्होंने कहा कि —"भई ऐसी क्या बात है कि तुम लोग अकाली पृष्ठभूमि वाले को ही वहां का डायरेक्टर बनवाना चाहते हो।" मैंने जबाव दिया कि—"एक तो अकाली दल क्षेत्रीय दल है, फिर पहली बार देश की मुख्य धारा में शामिल हुआ है। विपक्षी दलों के साथ मिला है। मैं चाहता हूं कि विरोधी दल अकाली दल को अपने साथ आत्म-सात कर लें, अन्यथा वह अलग-थलग पड़ जायेगा।" चौधरी साहब ने हमारा मंतव्य समझ कर तुरंत श्री राजनारायण जी को फोन किया और राजनारायणजी ने उसी अनुसार आदेश भी कर दिये। तब मुझे एहसास हुआ कि इस व्यक्ति में देश की एकता और अखंडता के प्रति कितनी आस्था है।

सन् 1980 के आस-पास की एक घटना मुझे याद आती है। उस समय जालंधर से प्रकाशित अखबार 'प्रताप' ने 'जाट मरा तब जानिये, जब तेरहवीं हो जाये,' नामक शीर्षक से एक समाचार छाप दिया था। यह समाचार चौधरी चरण सिंह जी से ही सम्बधित था। संयोग कि उसी दिन मैं उनके पास किसी काम से गया था। मुझे देखते ही बोले कि—"देखो तुम्हारे जालंधर से प्रकाशित यह अखबार मेरे लिए क्या कहता है ? मैं इस बात से बहुत नाराज हूं। यदि वह 'चौधरी मरा तब जानिये, जब तेरहवीं हो जाये,' लिखता तो निश्चित ही मुझे कोई नाराजगी नहीं होती। मुझ एक जाति से जोड़कर, उस जाति पर ही क्यों प्रहार किए जा रहे हैं। इस तरह क्या यह देश की सेवा कर रहे हैं ? समाज को तोड़कर नष्ट-भ्रष्ट करने के इनके प्रयास क्यों हो रहे हैं ? मेरा तुमसे यह कहना है कि इन अखबार वालों से जाकर कहना कि मैं उनसे बहुत नाराज हूं। वह जातिवाद को बढ़ावा न दें और न इसे फैलायें। देश को टूटने से बचायें।" मैंने कहा कि "चौधरी साहब वह तो आपके ही आदमी हैं और

आप और वह दोनों आर्य समाजी हैं। आप उन पर इस तरह नाराज न हों।" मेरी बात पर चौधरी साहब ने जबाव दिया कि–"मुझे ऐसे आर्य समाजी नहीं चाहिए जो देश का नाश करने में लगे हैं।" चौधरी साहब के विचार सुनकर मैं यह बात सोचने पर मजबूर हो गया कि–काश, ऐसे विचार देश के सभी राजनेताओं के होते, तो आज देश जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि विवादों में फंसकर विनाश की ओर अग्रसर न होता।

एक दिलचस्प वाकया और याद आता है। एक बार चंडीगढ़ में चौधरी साहब और जगजीवन राम जी दोनों ही पधारे थे। दोनों गेस्ट हाउस में ठहरे थे। मैं वहां पहुंचा, तो देखते ही बिठा लिया। फिर बात चीत का दौर शुरू हुआ। लौट फिर कर बात श्री अजीत सिंह पर आकर ठहर गई। मैंने उनसे कहा कि "आप अजीत सिंह को भारत क्यों नहीं बुलवा लेते। आपके काम में सहायता करेंगे। वह तो पढ़े-लिखे, समझदार और भले, अपने आदमी हैं।" इस पर वह बोले–"कि भई राजनीति पेशा नहीं है, सेवा कार्य है। इसमें आदमी को स्वयं ही निर्णय लेना पड़ता है। क्या वह सेवाकार्य के लिए तैयार है। अगर मेरा अपना काम होता, घर-गृहस्थी का काम होता, तो मैं अपने बेटे को तुरंत बुला लेता। लेकिन यह तो सार्वजनिक सेवा का कार्य है। इसके लिए तो उसे ही खुद निर्णय लेना होगा। मेरा इस मामले में कोई लेना-देना नहीं है। वो चाहे आवे या वो न चाहे तो न आवे।" वास्तव में चौधरी साहब निर्लेप व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने हमेशा राजनीति को समाज सेवा का कार्य-साधन माना। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति का आचार-विचार स्वतंत्र होना चाहिए।

मैं एक बार लक्ष्मी कॉमर्शियल बैंक के चेयरमैन सरदार बजाज साहब के साथ चौधरी साहब के पास गया। दरअसल बजाज साहब को अपने कार्यकाल के लिए एक वर्ष की अवधि और चाहिए थी। उन्होंने बड़े-बड़े लोगों से चौधरी साहब के पास इस काम के लिए सिफारिशें पहुंच वायीं लेकिन सबकी सिफारिशों को चौधरी साहब ने ठुकरा दिया था। मैं जब कमरे में दाखिल हुआ तो चौधरी साहब बोले कि "कहो भई कैसे आए।" मैंने तुरंत कहा–"चौधरी साहब यह सरदार साहब है। कहते हैं मेरे बारे में बड़े-बड़े आदमियों की पहुंच, सिफारिशों को चौधरी साहब ने ठुकरा दिया है। मैं तो एक छोटा सा आदमी हूं। इन्हें लेकर आपके पास आया हूं। आप बस इनकी एक बार सुन लें।" चौधरी साहब ने कहा कि –"अच्छा भई, अब तुम आए हो, तो इनकी बात सुन लेते हैं।" बजाज साहब ने अपनी समस्या बताई और चौधरी साहब ने उसे ध्यान से सुनने के बाद बिना किसी हील-हुज्जत के बजाज साहब को 6 माह का एक्सटेंशन दे दिया। फिर मेरी ओर देखकर हंस दिये। मैंने चौधरी साहब को इस तरह मुस्कराते-हंसते हुए पहली बार देखा था। मुझे यह बात कहने में कोई संकोच नहीं है कि मैं भी उन्हें हंसते देख यकायक मुस्करा पड़ा और सोचने लगा कि चौधरी साहब का कितना सरल और साफ व्यक्तित्व है।

वास्तव में चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं, वरन् गुणों की खान थे। उनमें एक विलक्षण दूर दृष्टि, सहयोगियों के लिए दर्द, किसान के लिए स्वप्न, देश की एकता और अखंडता के लिए कुछ भी कर सकने की लालसा, समाज की कुरीतियों के प्रति रोष तथा समाज सेवा के लिए संकल्प के साथ सीधी-सादी मनोवृत्ति के दर्शन होते थे।

आज चौधरी साहब हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी नीतियां देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निबाह सकती हैं। मुझे उम्मीद है कि चौधरी साहब जो देश के सैंकड़ों सालों से पिछड़े-लोगों के उत्थान का सपना लिए चले गए, उसे उनके अनुयायी और समर्थक पूरा करने का प्रयास करेंगे। उनके लिए हम सबकी यही सबसे बड़ी और विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

70

दलितों के हितैषी : चौधरी चरण सिंह

डा. राज सिंह राणा*

वर्ष 1925। आगरा कालेज, आगरा का छात्रावास। एक युवा छात्र छात्रावास में झाड़ू लगाने वाले हरिजन के घर जाकर उससे खाना बनाकर खिलाने के लिए कहता है। झाड़ू लगाने वाला वह हरिजन युवक एकदम हैरान रह जाता है और कुछ समझ नहीं पाता। छात्र के बार-बार आग्रह करने पर आखिरकार वह मजबूर हो जाता है और उस युवा छात्र की यह अनूठी प्रार्थना स्वीकार कर लेता है। छात्र फौरन समूचे छात्रावास में घूम-घूमकर अपने इस निश्चय का ऐलान कर देता है और इस ऐलान से छात्रावास में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्तब्ध रह जाता है कि भला कोई सवर्ण किसी 'अछूत' के घर उसका बनाया हुआ खाना कैसे खा सकता है !

इस छात्र का नाम था चौधरी चरण सिंह। दरअसल हुआ यह कि हरिजन के घर खाना खाने से एक दिन पहले वह छात्रावास के अपने कुछ साथियों के साथ बड़े जोर-शोर से छूआछूत की समस्या पर बहस कर रहा था। उसका दृढ़ विचार था कि छूआछूत को मिटना ही चाहिए और वह अपने दोस्तों को भी इस बात पर राजी करने की कोशिश कर रहा था कि वे अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में छूआछूत को जगह न दें। इन साथियों में से एक पुरातनपंथी साथी ने उसे चुनौती दी कि अगर वह छूआछूत के इतना ही ज्यादा खिलाफ है, तो फिर खुद किसी हरिजन के घर उसका बनाया हुआ खाना खाकर क्यों नहीं दिखाता ! यह सुनते ही छात्र चौधरी चरण सिंह ने तुरन्त इस बात के लिये हां कर ली और अगले ही दिन अपने इस फैसले को अमलीजामा पहना डाला।

मिनटों में ही चौधरी चरण सिंह के भ्रष्ट होने की खबर छात्रावास में तेजी से फैल गई और उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया। उसे छात्रावास की रसोई

---

* चिकित्सक

के बर्तनों में भी नहीं खाने दिया गया। चौधरी चरण सिंह ने केले के पत्तों पर खाना शुरू कर दिया पर वह हरिजनों के साथ बराबरी का व्यवहार करने के अपने निश्चय से टस से मस नहीं हुआ। काफी दिनों तक छात्रावास में तनातनी का माहौल बना रहा। अन्त में छात्रावास के वार्डन को मजबूर होकर उसे रसोई के बर्तनों में खाने की इजाजत देनी पड़ी।

गांव में भी जब कभी कोई सवर्ण हिन्दू किसी हरिजन के साथ बुरा बर्ताव करता था, तो चौधरी चरण सिंह हमेशा उसका विरोध किया करते थे। जब उन्होंने गाजियाबाद में वकालत शुरू की तब नानक नाम के एक हरिजन को अपना रसोईया रखा। यह 1930 की बात है। उस जमाने में किसी हरिजन को रसोईया रखना बहुत हिम्मत का काम था और यह काम चौधरी चरण सिंह ने कर दिखाया। उन्हें इन्सान की बराबरी में अटूट विश्वास था। अपने सक्रिय जीवन के आरम्भिक वर्षों में एक आर्यसमाजी नेता के रूप में चौधरी चरण सिंह ने छूआछूत मिटाने के लिए अथक प्रयास किये।

जब चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री बने तो उन्होंने हरिजन युवाओं को रोजगार देने के लिए अनेक कदम उठाये। नवम्बर 1954 से मार्च 1959 तक के अपने राजस्व मंत्री के कार्यकाल में चौधरी चरण सिंह ने राजस्व परिषद की ओर से जिलाधिकारियों को इस आशय के अनेक आदेश जारी कराये कि जिलाधीश कार्यालय में चपरासी और लेखपाल तथा उगाही अमीन के पदों पर हरिजनों की नियुक्ति 18 प्रतिशत तक की जानी चाहिए। अधिकारियों के बीच इस प्रस्ताव को लेकर काफी विरोध था। अतः इस दिशा में केवल आंशिक सफलता ही मिल पायी। दिसम्बर 1963 में फिर चौधरी चरण सिंह ने यह आदेश जारी किया कि उनके अधीन सभी विभागों-कृषि, वन और पशु-पालन में सभी रिक्त स्थानों पर अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों की नियुक्ति तब तक की जाए, जब तक उनका 18 प्रतिशत का निर्धारित कोटा पूरा न हो जाए।

चौधरी चरण सिंह ने हमेशा जातिवाद के खिलाफ जेहाद छेड़ा। वे उन संस्थाओं को कभी भी संरक्षण प्रदान नहीं करते थे, जिनका नाम किसी जाति विशेष से सम्बद्ध हो। उन्होंने मंत्रिमंडल के अपने अन्य सहयोगियों से भी इस बात का अनुरोध किया था कि वे इस प्रवृत्ति को बढ़ावा न दें। उन्होंने तीन बार पत्र लिख कर पण्डित जवाहर लाल नेहरू से यह अनुरोध किया था कि देश की सबसे बड़ी हस्ती होने के नाते उन्हें जातिवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए कदम उठाने चाहिये। चौधरी चरण सिंह ने पंडित नेहरू को यह भी सुझाव दिया था कि जातिवाद के अभिशाप को खत्म करने के लिए सरकार उन उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे जिन्होंने अन्तर्जातीय विवाह किया हो। उन्होंने तो यहां तक सुझाव दिया था कि विधान सभा और लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस का टिकट देते वक्त अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रांतीय विवाह करने

वालों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पंडित नेहरू ने उनकी भावनाओं की कद्र करते हुए यह सुझाव दिया कि इस प्रकार के सामाजिक सुधार स्वेच्छापूर्वक होने चाहिए, न कि जोर-जबर्दस्ती से।

कैसी विडम्बना है कि एक ऐसे व्यक्ति को हरिजनों का दुश्मन और जातिवादी बताया जाता रहा है जबकि उन्होंने जिन्दगी भर दलितों के उत्थान के लिए काम किया। यह हरिजनों के लिए भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि उनके जायज हकों के लिए जिन्दगी भर लड़ने वाले व्यक्ति को उनका दुश्मन बताया गया है। न सिर्फ उनके बल्कि हिन्दू समाज और राष्ट्र के लिए भी यह बात दुर्भाग्यपूर्ण है कि बराबरी पर आधारित समाज की स्थापना के लिए संघर्ष करने वाले चौधरी चरण सिंह जैसे प्रगतिशील समाज सुधारक के प्रयासों को विफल करने की हरदम कोशिशें की जाती रहीं।

यूं इन कोशिशों के पीछे क्या मकसद था, यह तो सभी जानते हैं। चौधरी चरण सिंह का बेदाग व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों और सत्य के प्रति उनकी अविचल निष्ठा तथा अपने सिद्धांतों से कभी न डिगने की उनकी आदत, इन सबने मिलकर उनकी एक ऐसी छवि बनायी जिसके सामने उनके विरोधी भी हतप्रभ हो गए। अतः वे किसी ऐसे हथियार की तलाश में रहते थे जिससे वे उन पर पीछे से वार कर सकें। और तो और चौधरी चरण सिंह से स्वयं उनकी जाति वाले नाराज रहते थे क्योंकि उन्होंने कभी अपनी जाति वालों को वरीयता नहीं दी और उन्हें कोई अनुचित लाभ नहीं पहुंचाया, जैसे कि आमतौर पर राजनैतिक नेता किया करते हैं।

चौधरी चरण सिंह द्वारा उठाये गए कदमों से यथास्थितिवादी किस प्रकार झुंझलाए, इसकी एक झलक उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डा. सम्पूर्णानन्द द्वारा चौधरी चरण सिंह की पहल कदमी पर बने जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार कानून के बारे में एक गोपनीय रिपोर्ट में की गई टिप्पणी से मिल सकती है। उसमें डा. सम्पूर्णानंद ने कहा कि–

"इसका (जमींदारी उन्मूलन कानून का) अर्थ होगा अपने विरोधियों की एक और जमात तैयार करना जिसके पास बहुत अधिक ताकत है। हमने लगभग हर उस वर्ग को अपने खिलाफ कर लिया है जिसके हाथ में अब तक शिक्षा, सम्पति, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनैतिक प्रभाव रहा है। यहां हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन्हीं लोगों की वजह से समाज में कानून और व्यवस्था कायम रख पाना संभव हो सका है।

हमने जो कदम उठाये हैं, और जो हम उठाना चाहते हैं, उनसे निश्चय ही ऊंची जातियों के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। और हमें यह याद रखना चाहिए कि आम तौर पर यही वे लोग रहे हैं जिन्होंने कांग्रेस को सबसे अधिक समर्थन दिया है। ये लोग कांग्रेस नेतृत्व के साथ सांस्कृतिक रूप से जुड़े रहे हैं और हम लोग उन्हीं के कन्धों पर बैठकर सत्ता में आये हैं।

सार्वजनिक रूप से हमने जो कदम उठाये हैं, उनसे भूमिहीनों और उन लोगों

को जिनके पास बहुत थोड़ी सी जमीन है, फायदा हुआ है। शताब्दियों की कुण्ठा और दबी झुंझलाहट ने उन्हें औरों से अलग रखा है। इन्हें मुख्यतः शोषित संघ जैसे संगठनों ने ही नेतृत्व प्रदान किया है और वे स्वभावतः कांग्रेस नेतृत्व के प्रति संदेहशील हैं। हम उन्हें कितना ही लाभ क्यों न पहुंचायें, वे हमारे पास आने वाले नहीं।"

इस उद्धरण से साफ हो जाता है कि चौधरी चरण सिंह ने दलितों और शोषितों के लिए क्या-क्या किया और वह इन तबकों के कितने बड़े हितैषी थे जबकि उनके विरोधी, जो न एक वर्ग विशेष के थे बल्कि उनके ही दल के भी थे, की इन वर्गों के प्रति क्या दिशादृष्टि थी और वह चौधरी चरण सिंह के विरोध में किस सीमा तक जा सकते थे, यह उपरोक्त टिप्पणी से भी सिद्ध हो जाता है। जबकि चौधरी चरण सिंह को हरिजन विरोधी कहने से पहले इस तथ्य को एकदम भुला दिया जाता है कि अपने राजनैतिक जीवन के आरम्भिक दिनों से ही चौधरी चरण सिंह ने हरिजनोद्धार के लिए अथक प्रयास किए। असलियत में चौधरी चरण सिंह का योगदान, खासकर इन तबकों के मामले में अविस्मरणीय है।

समाचार पत्रों की राय में चौधरी चरण सिंह

चौधरी चरण सिंह का मूल्यांकन करते हुए विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों की जो राय बनी है, उसे हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नव भारत टाइम्स

किसान-क्रान्ति के जब अन्य नेता कांग्रेस की परिधि से निकलने का साहस न जुटा पाये, तब चौधरी चरण सिंह ने किसान के लिए विद्रोही मंच पर अपनी आवाज उठायी।

चरण सिंह में काफी कुछ ऐसा था जो व्याख्या की मांग करता रहेगा।

ट्रिब्यून

एक मजबूत, दबंग और स्पष्टवादी नेता के रूप में उभरे इस व्यक्तित्व ने दृढ़ इच्छा शक्ति के जरिये उत्तर प्रदेश और देश की राजनीति को कई बार नए मोड़ दिये। उन्हें लोकप्रियता भी बेतहाशा मिली जिससे उनके मजबूत और निष्ठावान अनुयायियों की एक बड़ी जुझारू फौज खड़ी हो गयी।

....किसानों और खेतों के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें किसान नेता के रूप में स्थापित किया एवं लोकप्रियता दी। आज जब किसानों में बहुत जागृति आयी है, तो इसका काफी श्रेय चौधरी साहब को जाता है।

आज

राष्ट्रीय राजनीति के राष्ट्रीय परिदृश्य पर आधी शताब्दी तक छाये रहने वाले पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह जैसा देश में दूसरा राजनैतिक व्यक्तित्व पैदा नहीं हुआ, जो चौधरी साहब की किसानों और धरती से जुड़े आम लोगों के बीच विलक्षण लोकप्रियता का मुकाबला कर सके।

हिन्दुस्तान

चौधरी चरण सिंह का उत्तर प्रदेश तथा भारत की राजनीति में लगभग आधी

शताब्दी तक बोलबाला रहा। उत्तर प्रदेश में वर्षों तक मंत्री तथा दो बार मुख्यमंत्री और केन्द्र में उप प्रधान मंत्री तथा फिर कुछ समय तक प्रधान मंत्री रहने के बावजूद उनका धरती और किसानों से सम्बन्ध नहीं टूटा।

जनसत्ता

चौधरी चरण सिंह उन गिने-चुने भारतीय नेताओं में से थे जिन्होंने अपना जीवन तपस्या पूर्वक जीया.....चौधरी चरण सिंह के मूल्य और मान्यताएं ठेठ भारतीय किसान जैसे थे। अपने आपको महात्मा गांधी का अनुयायी तो हमारे यहां करीब-करीब हर नेता बताता रहता है लेकिन चौधरी चरण सिंह का दावा उसी तरह अधिक विश्वसनीय दिखाई देगा, जिस तरह अपनी सहज परंपरागत बुद्धि वाले किसी ठेठ भारतीय किसान का।

पंजाब केसरी

चौधरी चरण सिंह भारतीय राजनीति के एक सशक्त स्तम्भ थे। चौधरी साहब उन विरले नेताओं में से थे, जिनकी देशभक्ति, ईमानदारी और साहस के सम्बन्ध में कोई उंगली उनकी ओर आज तक नहीं उठाई जा सकी है।

अमर उजाला

चौधरी चरण सिंह भारत के राष्ट्रीय क्षितिज में एक ऐसे नक्षत्र थे, जिसकी अपनी ही चमक, अपनी प्रेरणा और अपना ही संदेश था। पांच दशकों के लम्बे सार्वजनिक जीवन में चौधरी साहब ने भारतीय कृषि,कृषक एवं ग्राम्य उत्थान के लिए संघर्ष किया।

राजस्थान पत्रिका

चौधरी साहब अनेक वर्षों तक उत्तर भारत के राज्यों की राजनीति और खास तौर से हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में छाए रहे।.....राजनीति में निर्णय सही भी होते हैं और गलत भी लेकिन सिद्धान्तों पर अडिग रहने वाले व्यक्ति की ही इतिहास प्रशंसा करता है।

दि स्टेट्समैन

कृषि और किसान के लिए चौधरी चरण सिंह वैसे ही याद किये जायेंगे जैसा भारत के संविधान निर्माण हेतु डा.अम्बेडकर और राम मनोहर लोहिया द्वारा सर्वप्रथम पिछड़ी जातियों के हक में कांग्रेस सरकार की आलोचना। राजनीति में व्यक्तिगत प्रभाव की दृष्टि से वह उत्तर भारत में सर्वाधिक मान्य रहे।

दि टाइम्स ऑफ इण्डिया

इतिहास में दर्ज हो या न हो, चौधरी चरण सिंह एक मात्र किसान पुत्र थे जो भारत के प्रधान मंत्री पद तक पहुंचे। वे चाहे कितने ही विवादास्पद रहे हों, इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जा सकती कि वे अपने जीवन काल में मान्य और शिखर व्यक्ति रहे, विशेषकर उत्तर भारत में। उन्होंने पिछड़ी जातियों का नेतृत्व कर, उन्हें एकता और संघर्ष का रास्ता दिखाकर भारतीय राजनीति में एक नये शक्तिशाली तत्व का समावेश कर दिया।

दि हिन्दुस्तान टाइम्स

चौधरी चरण सिंह ग्रामीण भारत का सर्वोत्कृष्ट उत्पाद थे। वे सर्वत्र किसानों में गांधी के मानिंद व्यक्तित्व रहे जिनका विश्वास था कि देश का विकास गांवों के आर्थिक और सामाजिक विकास पर निर्भर करता है, विशेषकर किसानों और ग्राम आधारित उद्योग धन्धों पर।

नेहरू के समाजवाद और सहकारिता दर्शन के विरूद्ध सर्वप्रथम आवाज बुलन्द करने पर चौधरी साहब की राजनीति में एक निर्भय व्यक्तित्व के रूप में पहचान बनी। सहकारिता के छद्म रूप में सहकारिता को वे भारतीय परिवेश में उचित नहीं मानते थे।

सत्ता में रह कर उन्होंने भारत की प्रथम साम्यवादी केरल सरकार के मुख्यमंत्री ई. एम. एस. नम्बूदरीपाद से भी कहीं आगे प्रगतिशीलता दिखाई और उत्तर प्रदेश के लाखों किसानों को जमीन के खातेदारी हक दे दिये। "खेत उसका जो स्वयं जोते" इस आधार पर सामन्तों और बड़े भूमिधारियों की जमीन वास्तविक किसानों के पास पहुंचाना 1917 की सोवियत क्रान्ति की तरह इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना है।

इंडियन एक्सप्रेस

कोई भी राष्ट्रीय नेता चौधरी चरण सिंह की भांति किसान हक में किसानों का हमदर्द नहीं रहा या अपनी पहचान नहीं बना पाया।.....चौधरी साहब नेहरूवाद और पश्चिमी अन्धानुकरण के खिलाफ ग्रामीण पुर्नत्थान की आवाज बुलन्द करते रहे।

दि टेलीग्राफ

वे एक चतुर कूटनीतिज्ञ और दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे। वे एक लोकप्रिय किसान नेता थे। उनका यह व्यक्तित्व देश के प्रथम गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के समकक्ष या उस लौह पुरुष की याद ताजा कर देता है।

पेट्रियाट

भू. पू. प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह ने अपने समकालीन इतिहास को सामाजिक और आर्थिक, विशेषकर कृषि क्षेत्र को नये आयाम दिये। वे महाराष्ट्र के महात्मा फुले एवं बंगाल के राम मोहन राय की तरह समय की बुराइयों से जीवन पर्यन्त जूझते रहे। वे महान स्वतंत्रता सेनानी तो थे ही, स्वतंत्रता के बाद भू-प्रबन्धों के सर्वोत्कृष्ट इंजीनियर (वास्तुविद) थे।

दि इकॉनोमिक टाइम्स

चौधरी साहब ने गांवों की आधार शक्ति और संगठन के जरिये असली भारत (ग्रामीण भारत) को एक निश्चित दिशा दी थी।

दि हिन्दू

चौधरी चरण सिंह एक साफ दिल और दृढ़ इच्छा शक्ति वाले नेता थे जिन्होंने आम राजनीति से हट कर मार्क्स के उद्योग और श्रमिक, अध्ययन और लेखक की भांति कृषि और किसान के सम्बन्ध में एक सांगोपांग दर्शन को लिखा और उसे प्रायोगिक रूप दिया।

गणमान्य व्यक्तियों एवं राजनैतिक दलों के नेताओं की नजर में चौधरी चरण सिंह

चौधरी चरण सिंह के सम्बंध में गणमान्य व्यक्तियों, देश के विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं एवं प्रमुख सामाजिक संगठनों द्वारा व्यक्त विचारों को यहां प्रस्तुत कर रहे हैं :–

"चरण सिंह भारतीय किसानों के मसीहा थे।"

–आर॰ वेंकटरमण, भूतपूर्व राष्ट्रपति

"चौधरी चरण सिंह स्वाधीनता के वरिष्ठ सिपाही थे। वे अपनी चारित्रिक दृढ़ता एवं सिद्धांतों की मजबूती के कारण उ. प्र. में और बाद में देश के सर्वोच्च पदों पर पहुंचे। वे एक महान देशभक्त व ग्रामीण विकास के प्रबल समर्थक थे।"

–(स्व॰) राजीव गांधी, भूतपूर्व प्रधानमंत्री

"श्री चरण सिंह एक महान नेता थे। वे जीवन भर ईमानदारी से जनता की सेवा में जुटे रहे। आज जब चारों ओर भ्रष्टाचार की बातें हो रही हैं, इस मामले में चौधरी साहब पूरी तरह बेदाग रहे।"

–नीलम संजीवा रेड्डी, भूतपूर्व राष्ट्रपति

"एक गरीब किसान परिवार में जन्मे श्री चरण सिंह ने देश की अथक सेवा की, विशेषकर गरीब ग्रामीणों की। वह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की पीढ़ी के थे। उन्हें कई बार जेल हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो जिम्मेदारियां मिलीं, उनको उन्होंने आजीवन गांधीवादी परम्परा से निभाया। वे 1937 में उत्तर प्रदेश सदन में पहली बार चुने गये थे। उसके बाद उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया। ग्रामीण उत्थान हेतु उन्होंने अथक परिश्रम किया। उन्होंने अपनी स्पष्टवादिता, सादगी एवं कुशल प्रशासन से सबको प्रभावित किया। एक सच्चे धरती पुत्र चौधरी साहब को मेहनतकश किसान की सेवाओं के लिए सदैव याद किया जायेगा।"

–बलराम जाखड़, केन्द्रीय कृषि मंत्री

"वह जमींदारी उन्मूलन के प्रणेता थे। उनके मन में गरीबों और दलितों के उत्थान की चाह थी। वे कृषि पर आधारित अर्थ-व्यवस्था तथा कुटीर उद्योगों के प्रबल हिमायती थे, जो अपने आदर्शों पर हमेशा अडिग रहे और उसी के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे।"

—श्रीमती प्रतिभा पाटिल, सांसद एवं भूतपूर्व उपसभापति, राज्य सभा

"चौधरी चरण सिंह एक महान देशभक्त एवं समर्पित जन प्रतिनिधि थे।"

—(स्व॰) पंडित कमलापति त्रिपाठी, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

"वे किसानों के मसीहा थे।"

—आचार्य तुलसी

"सारा देश जानता है कि चौधरी चरण सिंह ग्रामवासियों के अद्वितीय प्रवक्ता थे। वह एक देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी थे। वह भारतीयता के एक जीते-जागते प्रतीक थे।

—चित्त बसु, सांसद, फारवर्ड ब्लाक

"उनकी सादा जीवन-शैली, सिद्धांतवादी दृढ़ता,धर्म-निरपेक्षतावादी नीति ने मुझे हमेशा प्रभावित किया। वे संकीर्ण जातिवाद,सम्प्रदायवाद से ऊपर थे। उनके इन गुणों के लिए राष्ट्र उन्हें याद रखेगा। उन्होंने सिद्धांतों के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

—समर मुखर्जी, भूतपूर्व सांसद एवं भाकपा नेता

"चौधरी चरण सिंह पक्के देशभक्त थे। 1979 में उन्होंने गैर-उत्पादित तम्बाकू से राजस्व कर हटाकर करोड़ों तम्बाकू उत्पादकों का भला किया। रासायनिक उर्वरकों पर 50 प्रतिशत छूट देकर उन्होंने सराहनीय कार्य किया। उनका ग्रामीण जनता के लिए बलिदान, हमारे राजनैतिक इतिहास में अमर रहेगा।"

—अल्लादी अरुणा, सांसद, अ॰ भा॰ द्र॰ मु॰ क॰

"हमारे देश में कई प्रधानमंत्री हुए हैं किन्तु चौधरी चरण सिंह पहले प्रधानमंत्री थे जो किसानों के प्रतिनिधि थे। वह मृदुभाषी थे किन्तु उनकी मृदुभाषा में एक साहसिक व सैद्धांतिक व्यक्तित्व छिपा हुआ था। अभूतपूर्व जन समर्थन पाने वाले वे एक सच्चे नेता थे। वे कृषि अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे तथा उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण करने वाले देश में लाखों लोग हैं।"

—पी॰ उपेन्द्र, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी चरण सिंह को इतिहास के एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, किसानों के हितों के संघर्षशील योद्धा, कुशल प्रशासक, किसान वर्ग के लिए एक सिद्धांतवादी एवं निष्ठावान नेता, देश की एकता व अखंडता के प्रति उनकी सजग निष्ठा के लिए सदैव याद रखा जायेगा। उन्होंने जमींदारी उन्मूलन हेतु जो भूमि सुधार कानून बनाया,वह ऐतिहासिक है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में, बाद में केन्द्र में महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया। श्रद्धेय चौधरी चरण सिंह जी जीवन भर किसानों व सामान्य जन के हित के लिए लड़ते रहे। उन्हें किसानों व गरीबों की पीड़ा का पूरा अनुभव था। उनकी ग्रामोन्मुखी आर्थिक नीति से सभी राजनीतिक दल प्रभावित रहे। विधान सभा एवं संसद में उनके अविस्मरणीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। हम उन्हें उनकी देशभक्ति व शोषितों एवं पिछड़ों के मसीहा के रूप में हमेशा याद रखेंगे।"

—नारायण दत्त तिवारी, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

"चौधरी चरण सिंह एक महान नेता थे।"

—ज्योति बसु, मुख्यमंत्री, प॰ बंगाल

"चौधरी चरण सिंह आम आदमी के नेता थे, वे एक कुशल प्रशासक थे। इसमें दो राय नहीं है।"

—एन॰ टी॰ रामाराव, मुख्यमंत्री, आंध्र प्रदेश

"चौधरी साहब एक महान स्वतंत्रता सेनानी,देशभक्त और योग्य प्रशासक थे।"

—हर देव जोशी, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

(स्व॰) वीर बहादुर सिंह, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

"चौधरी चरण सिंह गांव की जीती जागती तस्वीर थे। वह किसानों के कट्टर हिमायती थे। वे आजादी की उस पीढ़ी के सदस्य थे, जो अब धीरे-धीरे लोप होती जा रही है।"

—अटल बिहारी वाजपेयी, नेता विपक्ष, लोक सभा

"वह एक महान स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, देशभक्त, कुशल प्रशासक, विचारक के अलावा किसानों के मित्र ही नहीं,पथ-प्रदर्शक भी थे।"

—एम॰ एस॰ गुरुपद स्वामी, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"वह ग्रामीण जनता के लिए सदैव चिंतित रहते थे। यहां तक कि वह शहरीकरण के खिलाफ जेहाद छेड़ने को तैयार थे।"

—मुरासोली मारन, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"वह देश के सम्मानित राजनीतिज्ञ, ग्रामीण जनता के हितैषी और महान गांधीवादी नेता थे।"

—ले॰ जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा (अवकाश प्राप्त)

"वह एक ईमानदार, दृढ़ निश्चयी व पक्के राष्ट्रभक्त नेता थे।"

—गुलाम रसूल मट्टू, भूतपूर्व सांसद, नेशनल कांफ्रेंस

"चौधरी चरण सिंह किसानों की समस्याओं के बारे में सदैव चिंतित रहते थे। कृषक समुदाय के लिए उनकी सेवाओं को देश हमेशा याद रखेगा।"

—स्व॰ एन॰ ई॰ बलराम, भाकपा नेता

"वह सच्चे देशभक्त थे।"

—(स्व॰) बसंत दादा पाटिल, भूतपूर्व राज्यपाल, राजस्थान

"चौधरी चरण सिंह न केवल योग्य प्रशासक और वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि निर्बल पिछड़े वर्ग के लोगों के सच्चे हितैषी भी थे।"

—मोहम्मद उस्मान आरिफ, भूतपूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

"वे ग्रामीण जनता के हितों के लिए आजीवन लड़ते रहे।"

—रामकृष्ण त्रिवेदी, भूतपूर्व राज्यपाल, गुजरात

"चौधरी साहब ने आजीवन शोषित और गरीब तबके की आवाज को बुलंद किया तथा महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलते हुए पिछड़े वर्ग के लिए व ग्रामीण उत्थान का कार्य किया।"

—दौलत राम सारण, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी साहब ने किसानों को उनकी शक्ति का एहसास करा, उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया।"

—मदनलाल खुराना, मुख्यमंत्री, दिल्ली

"चौधरी चरण सिंह ने किसानों-गरीबों के लिए जो कुछ किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता।"

—नरसिंह यादव, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी चरण सिंह भारत के एक सच्चे देशभक्त, ईमानदार प्रशासक थे।"

—ज्यां पाकल डेलामुराज
भूतपूर्व केन्द्रीय सार्वजनिक अर्थव्यवस्था मंत्री, स्विट्जरलैण्ड

"चौधरी चरण सिंह एक ईमानदार राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक और सच्चे देशभक्त थे।"

–(स्व॰) स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (रामगोपाल शालवाले)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान एवं सांसद

"चौधरी चरण सिंह सही मायने में भूमि-पुत्र थे।"

–बूटा सिंह, केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी चरण सिंह के व्यक्तित्व में राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, प्रशासक और लेखक का अदभुत संगम था।"

–(स्व॰) गुरूदयाल सिंह ढिल्लो, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं अध्यक्ष लोकसभा

"वह देश के एक अच्छे इंसान व कुशल प्रशासक थे।"

–मोहसिना किदवई, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी साहब हमारे और युवा पीढ़ी के लिए हमेशा प्रेरणा के स्त्रोत बने रहेंगे।"

–अर्जुन सिंह, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"वह महान देशभक्त और निष्ठावान नेता थे।"

–एच॰ के॰ एल॰ भगत, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"वह देश के एक सम्मानित राजनीतिज्ञ थे।"

–एम॰ करुणानिधि, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, तमिलनाडु

"चौधरी साहब दलितों के सच्चे नेता थे।"

–(स्व॰) दिनेश गोस्वामी, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी चरण सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन और उसके बाद किसानों के हितों के लिए अंत तक संघर्ष किया।"

–शीलभद्र याजी
अध्यक्ष, अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संघ

"चौधरी साहब देश के बहुत बड़े त्यागी, कर्तव्य निपुण और क्रांतिकारी नेता थे।"

–राजा दिनेश सिंह, केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी साहब सही मायने में किसान अवतार थे।"

—चौ॰ महेन्द्र सिंह टिकैत
अध्यक्ष, भारतीय किसान यूनियन

"वह पुराने स्वतंत्रता सेनानी व गांधी जी के कट्टर समर्थक थे। वे जीवन पर्यन्त मजबूत व धर्मनिरपेक्ष भारत के लिए काम करते रहे।"

—एच॰के॰एल॰कपूर, भूतपूर्व राज्यपाल, दिल्ली

"चौधरी साहब प्रख्यात गांधीवादी, अर्थशास्त्री और विचारक थे। वह गरीब व कमजोर वर्ग के मसीहा थे।"

—सत्यपाल सिंह यादव,सांसद

"चौधरी चरण सिंह जी के आर्थिक विचारों की आज देश को अत्यंत आवश्यकता है और उन्हीं विचारों पर आधारित आर्थिक नीति से ही देश की समस्याओं का हल सम्भव है।"

—प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा, सांसद, भाजपा

"चौधरी चरण सिंह ताजिंदगी किसान की बहबूदी और उसकी एकता के लिए संघर्ष करते रहे। उनका मानना था कि जब तक देश के गांव खुशहाल नहीं होते, देश के विकास की कल्पना ही व्यर्थ है। यह तभी सम्भव है जब किसान को उत्पाद का उचित मूल्य मिले और उसकी क्रय-शक्ति बढ़े, साथ ही विभिन्न मोर्चों पर उसकी लूट बंद हो।"

—इन्दु भाई पटेल, भूतपूर्व सांसद

"चौधरी चरण सिंह जो कुछ कहते और करते थे, उसके पीछे उनकी दृढ़ राजनीतिक आस्था थी। वह जिस किसी पद पर भी रहे, वहीं उन्होंने अपने को एक योग्य प्रशासक सिद्ध किया और अपनी स्पष्टवादिता तथा सादगी का चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा।

चौधरी जी आजीवन किसानों, देहातों के गरीबों एवं दलितों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे। उनका सदा यह लक्ष्य रहा कि देश की राजनीति और अर्थनीति को ग्रामोन्मुखी बनाया जाये। वह सच्चे अर्थों में किसानों के नेता व मसीहा थे। वह देश की एकता और अखंडता के लिए सदैव समर्पित रहे।"

—रविराय, सांसद एवं भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष

"चौधरी चरण सिंह जी कड़वी से कड़वी बात भी लोगों के मुंह पर कहने से हिचकते

नहीं थे। उनका सार्वजनिक जीवन बहुत स्वच्छ व उज्ज्वल था। उसमें छिपाने की बात न थी। उनकी सार्वजनिक जिंदगी व व्यक्तिगत जिंदगी में कोई फर्क नहीं था। इसीलिए उनके प्रतिद्वंद्वी भी उनकी तारीफ करते हैं। वे एक राजनीतिज्ञ के अलावा एक स्वच्छ व कुशल प्रशासक और एक अच्छे व कुशल संगठक भी थे। पक्के गांधीवादी व आर्यसमाजी होते हुए भी सभी धर्मों की इज्जत करते थे। अपने विचारों में दृढ़ होते हुए भी वे रूढ़िवादी नहीं थे।

उनकी ईमानदार छवि आज और भी बिल्लोरी पत्थर की तरह चमकती है। कोई बड़ा फैसला लेना होता, तो मीटिंग के अलावा अलग से भी लोगों की राय लेते थे, चाहे फैसला उनका अपना होता था, पर एक साधारण कार्यकर्ता से भी विचार-विमर्श करते थे।"

—श्रीमती चन्द्रावती, विधायिका एवं भूतपूर्व उप-राज्यपाल (पांडिचेरी)

"हमारा देश कृषि प्रधान देश है। असलियत में यहां छोटे किसानों की तादाद बहुत ज्यादा है। यदि इसे छोटे किसानों का देश कहा जाये तो गलत न होगा। चौधरी चरण सिंह छोटे किसानों की आवाज बनकर उभरे। उनके दिलो-दिमाग में हरवक्त किसान की बात छायी रहती थी। किसान का किस तरह भला होगा, उसे किस तरह ऊपर उठाया जाये, यह वह भली भांति जानते थे। वह कहते थे कि देश का भला तब ही हो सकता है, जब छोटे किसान समृद्ध होंगे और खेत मजदूर जो सदियों से हल जोत रहा है लेकिन वह उस जमीन का मालिक नहीं है, वह उस जमीन का मालिक बन जायेगा। सचाई यह है कि वह इन्हीं लोगों और गरीब व कमजोर तबकों के हकों-हितों, उनकी बहबूदी के लिए अपनी आखिरी सांस तक लड़ते रहे।

चौधरी चरण सिंह जिन्हें लोग आदर के साथ चौधरी साहब कहा करते थे, का देश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। मैं समझता हूं उनका नाम देश के इतिहास में अमर नहीं रहेगा, बल्कि उन्हें इतिहास पुरुष के रूप में याद किया जाता रहेगा। इसमें दो राय नहीं कि वह किसानों के मसीहा के रूप में जाने गए और आज उनकी खाली जगह की भरपाई मुश्किल ही नहीं, असंभव है।"

—सुरजीत सिंह बरनाला
भूतपूर्व मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री एवं राज्यपाल

चौधरी चरण सिंह द्वारा रचित कृतियां

एबोलिशन ऑफ जमींदारी (1947)
जमींदारी उन्मूलन (अनुदित)
हाउ टू एबोलिश जमींदारी : ह्विच एल्टरनेटिव
सिस्टम टू एडॉप्ट (1958)
एग्रेरियन रिवोल्यूशन इन यू. पी. (1958)
उत्तर-प्रदेश की भूमि व्यवस्था में क्रांति (1958)
हमारी गरीबी कैसे मिटे ? (1961)
इंडियाज पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशन (1964)
इण्डियाज इकोनॉमिक पॉलिसी : दि गांधियन ब्ल्यूप्रिंट (1978)
भारत की अर्थनीति : गांधीवादी रूपरेखा (अनुदित)
इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया : इटस कॉजेज एण्ड क्योर,
प्रथम संस्करण (1981), द्वितीय संस्करण (1984)
भारत की भयावह आर्थिक स्थिति : कारण एवं निदान (अनुदित)
भारत का आर्थिक पतन : कारण एवं समाधान (1984)
शिष्टाचार
प्रथम संस्करण (1984), द्वितीय संस्करण (1994)
राष्ट्र की दशा
प्रथम संस्करण (1985), द्वितीय संस्करण (1986)
आर्थिक विकास के सवाल और बौद्धिक दिवालियापन (1986)
लैण्ड रिफॉर्म्स इन यू. पी. एण्ड दि कुलक्स (1986)
उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार और कुलक वर्ग (अनुदित) 1994

किसान ट्रस्ट